# जोड़ी

वनफूल

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-६

बंगला उपन्यास 'द्वैरथ' का हिन्दी अनुवाद

© वनफूल



अनुवादिका
माया गुप्त

| | | |
|---|---|---|
| मूल्य | : | तीन रुपये |
| प्रथम संस्करण | : | अप्रैल, १९६० |
| प्रकाशक | : | राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली |
| मुद्रक | : | युगान्तर प्रेस, दिल्ली |

# भूमिका

आज के बंगला साहित्य के अग्रगण्य लेखकों में श्री बलाई चांद मुखोपाध्याय 'वनफूल' का नाम प्रमुख है। एक चिकित्सक के नाते उनको मानव-चरित्र के सबल तथा दुर्बल चारित्रिक और दैहिक गठन को समझने का पूरा मौका मिला है। प्रतिभाशाली साहित्यस्रष्टा होने के कारण वनफूल ने मानव-जीवन को खूब समझकर उसपर प्रकाश डालने में अप्रतिम सफलता प्राप्त की। यह कहा जा सकता है कि उनके साहित्यकार को प्रथम तथा प्रधान प्रेरणा स्वयं उनके भीतर के चिकित्सक से ही मिली। यह नहीं समझना चाहिए कि वे एक समाज-सुधारक मात्र हैं, बल्कि उन्होंने समाज के अनेक कमज़ोर अंगों पर अपने तीखे और गहरे व्यंग्य से चोट की है। बहुत कम कहकर बहुत कह देने की कला में वनफूल बेजोड़ हैं। उनकी रचनाएं व्यंग्य के अलावा गहरी अनुभूति, संवेदना तथा मधुर हास्य से ओत-प्रोत रहती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'जोड़ी' उनके लोकप्रिय उपन्यास 'द्वैरथ' का अनुवाद है। इसमें लेखक ने उच्च वर्ग के दो अद्भुत चरित्रों के कार्य-कलाप को बड़ी दक्षता के साथ उभारा है। इसमें देखने को मिलता है कि शत्रुता तथा मित्रता का मूलतत्व चाह ही है।

१६०, खैबर पास हास्टल
दिल्ली—८

—माया गुप्त

कचहरीघर के सामने विस्तृत मैदान।

आज वहां बड़ी भीड़ है। वसूली हो रही है। लोग ज़मींदार की कचहरी में मालगुज़ारी जमा करने आए हैं।

बुज़ुर्ग गुमाश्ता हरिहरदास बही खोलकर कचहरीघर के सामने बरामदे के एक कोने में बैठकर इस इलाके के धनी महाजन गोलोकचन्द्र साह के साथ धीरे-धीरे कुछ बातचीत कर रहे हैं।

सामने वाले नीम के पेड़ के नीचे बैठे कुछ असामी उत्तेजित होकर बातें कर रहे हैं। उनमें से एक जोशीला युवक कह रहा था—पूरी मालगुज़ारी देता हूं, इसमें डर किस बात का ? बड़े आए हैं....

बुज़ुर्ग बिशाई मण्डल उसे समझाने की कोशिश कर रहा था—गर्मी दिखाने पर ज़मींदार के यहां काम नहीं बन सकता। यहां तो दिमाग ठंडा रखकर बातचीत करने पर ही कुछ बने तो बने।

फिर भी युवक तेज़ पड़ रहा था, फलस्वरूप रौला बढ़ता ही गया।

थोड़ी दूर पर एक युवती को घेरकर कुछ और असामी खड़े-खड़े बतकही कर रहे थे। विषय गोपनीय था, यह उनके चेहरे से झलक रहा था।

पास ही चौपाल में कुछ लोग भोजन कर रहे थे। दही, चिउड़ा और गुड़ का भोग लग रहा था। कोई भी आए खाना खा सकता है।

मुंशी जी सतर्क होकर देखभाल कर रहे हैं।

चौपाल के दक्षिण में रमजान तहसीलदार कुछ असामियों के सामने

बन्तरानियां हांक रहे थे। उनके व्याख्यान का मूल तत्व यही था कि ज़मींदार साहब मेरी मुट्ठी में हैं; मेरे ही कहने पर उठते-बैठते हैं, यानी मुझे खुश रखने से तुम लोगों के पौ-बारह हैं। असामी मुंह बाए उनका भाषण सुन रहे थे।

मैदान में दो-एक बैलगाड़ियां भी इधर-उधर खड़ी थीं। गाड़ी के अन्दर से चिन्ता और उत्सुकता से भरे चेहरे झांक रहे थे।

एक जगह कतार बनाकर एक दूसरे से सटकर, नंगे बदन कुछ लोग बैठे थे। वे बहुत ही गरीब असामी थे। न तो उन्हें कोई तसल्ली देने वाला था और न उनका कोई पैरोकार ही था। इन्हीं लोगों की संख्या सबसे अधिक थी। वे आपस में ही बतकही कर रहे थे। चारों ओर से धीरे-धीरे बातचीत की गुनगुनाहट सुनाई पड़ रही थी।

अकस्मात् घोड़े की टाप सुनकर सब चौंक उठे। पलभर में एक ऊंचे और मज़बूत घोड़े पर सवार एक बलिष्ठ, हट्टा-कट्टा, लम्बा-चौड़ा आदमी वहां आ पहुंचा।

सब लोग एकदम से खड़े हो गए और ज़मीन छूकर सलामी दी। आगन्तुक ने गम्भीरता के साथ जरा-सा सिर झुकाकर सलामी ली और सईस के हाथ में लगाम और चाबुक थमाकर अन्दर चला गया।

ज़मींदार श्रीयुत उग्रमोहन सिंह के आगमन से सारे कचहरीघर पर दबदबा छा गया।

दीवान जी हड़बड़ाकर मालिक के पीछे-पीछे चल पड़े।

## २

ज़मींदार उग्रमोहन सिंह एक ऊंची गद्दी पर जमकर बैठे थे। राखाल बाबू यानी दीवान जी पास ही एक किनारे खड़े होकर मालिक को एक के बाद एक सुनाने योग्य सूचनाएं दे रहे थे। सिंह जी गौर से सुन रहे थे। शुरू से अन्त तक सारी बात सुनकर उन्होंने आदेश दिया—उसे बुलाओ।

वह जोशीले स्वभाव वाला युवक हाज़िर किया गया। उसे देखकर उग्रमोहन बाबू ने रुखाई के साथ पूछा—तेरे पास क्या जवाब है? बेवा पर कुदृष्टि क्यों डाली?

युवक हकलाते हुए कुछ कह गया।

उग्रमोहन गरज उठे—जूते से तेरी पीठ की खाल उधेड़ दूंगा। मोहब्बत खां!

आवाज़ पाते ही लम्बा-चौड़ा, गलमुच्छों वाला मोहब्बत खां खड़ा हो गया।

उग्रमोहन ने हुक्म दिया—साले को पचीस जूते लगाओ।

थर-थर कांपते हुए युवक को साथ लेकर मोहब्बत खां बाहर निकल गया।

फिर हुक्म हुआ—इसके बाप को बुलाओ।

वृद्ध बिशाई मण्डल ने सामने आकर सिर झुकाया।

—तुम महीने भर के भीतर ही हमारी ज़मींदारी से बाहर निकल जाओ। यहां तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं।

—हुज़र···

—मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। महीने भर के अन्दर अगर तुम यहां से दफा नहीं हुए तो तुम्हारा घर फूंक दिया जाएगा। चले जाओ!

बिशाई चला गया।

उग्रमोहन ने कहा—उस विधवा को बुलवाओ।

विधवा आई और उसके दूर के रिश्ते के एक चाचा भी आए। चाचा ने ज्योंही बोलना शुरू किया—दोहाई हुज़ूर की! आप हमारे··· त्योंही उग्रमोहन पांव पटककर कड़क उठे—चुप रहो! तुम्हें किसने बुलाया है? कोई है?

चाचा जी तेज़ी से बाहर की ओर चल पड़े।

उग्रमोहन ने विधवा से पूछा—गांव में इतनी लड़कियां हैं, लोग तुमपर ही क्यों कुदृष्टि डालते हैं? जवाब दो।

विधवा घूंघट को ज़रा और खींचकर सिर झुकाकर सिसकने लगी।

उग्रमोहन ने फिर पूछा—तुम विधवा हो, तुम्हारे सिर पर इतना बड़ा जूड़ा क्यों? दीवान जी!

—हुज़ूर!

—अभी नाई बुलाकर इसके बाल मुड़वा दीजिए और इसे समझा दीजिए, अगर फिर कोई इसपर नज़र डालेगा तो हम इसीको गांव से निकाल देंगे! इसके पीछे मैं सारी प्रजा को थोड़े ही निकालने लगा। जाओ!

—जो हुक्म!

विधवा को लेकर दीवान जी बाहर चले गए।

दीवान जी के लौटने पर उग्रमोहन ने प्रश्न किया—आज और कोई काम है?

—जी हां। गरीब संताल असामी आए हैं। उनका निवेदन है····

उग्रमोहन कठोर आवाज़ से बोल उठे—उनका निवेदन तुम्हारे मुंह

से नहीं सुनना चाहता। क्या बुढ़ापे में तुमने रिश्वत लेनी भी शुरू कर दी ? बुलाओ उन्हें !

नंगे बदन असामियों ने पहुंचकर सलामी दी और खड़े हो गए।

उन लोगों की अर्जी किसी तरह से शायद उग्रमोहन सिंह को मालूम हो चुकी थी। उन्हें देखकर बोल उठे—मालगुज़ारी नहीं लाए न ?

उन्होंने जवाब दिया कि अगहनी फसल अच्छी न होने की वजह से वे पूरी मालगुज़ारी नहीं ला सके। हुज़ूर की मेहरबानी हो जाए तो बैसाखी में बाकी लगान ज़रूर चुका देंगे।

—ठीक है, अगर तब भी नहीं दिया तो फिर सुनाई नहीं होगी।

सुनकर एक बूढ़े-से असामी ने कहा कि अगर वे लगान चुकता न करें तो हुज़ूर की ओर से सूद भी वसूल कर लिया जाए।

उग्रमोहन गरज उठे—सूद ? बैसाखी में अगर लगान अदा नहीं हुआ तो जूतों से बात की जाएगी। हमें सूद का हिसाब लगाने की फुरसत नहीं है।

असामियों का झुंड चला गया।

उग्रमोहन ने दीवान जी से पूछा—और कुछ ?

—हुज़ूर गोलोक साह को बुलाने का हुक्म हुआ था, वह आया है।

—बुलाओ।

गोलोक साह का नाम सुनते ही उग्रमोहन का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।

गोलोक साह आया। उसका इस इलाके में लेनदेन का कारबार है। लोग कहते हैं कि उसका नाम सबेरे-सबेरे ले ले तो दिनभर खाना नहीं मिलता। उसकी सूरत देखकर यह अन्दाज़ लगाना मुश्किल है कि वह जब चाहे घर से लाख रुपये निकाल सकता है। गोलोक साह के सिर के बाल खिचड़ी हैं, चेहरा गोल-मटोल। कमरे में आते ही गोलोक साह ने बड़ी हिनौती से ज़मीन पर सिर टेककर उग्रमोहन को प्रणाम किया। पर प्रणाम करके खड़ा भी न हो पाया था कि उग्रमोहन ने गोलोक साह

के गाल पर खींचकर एक तमाचा जड़ दिया। और बोले—बहुत पैसे वाले बन गए हो न?

गोलोक साह तमाचे का झटका सम्हालने के लिए गाल सहलाने लगा।

उग्रमोहन अंगुली उठाकर धमकी देते हुए बोले—आज दोबारा समझाए देता हूं, तुम्हें चन्द्रकान्त को कर्ज़ नहीं देना है। अगर दिया तो तुमपर मुसीबत आ जाएगी।

गोलोक साह की आंखें गीली हो गईं। बोला—हुजूर, चन्द्रकान्त बाबू तो आपके ही साले हैं। उनका हुक्म टालूं तो कैसे टालूं?

उग्रमोहन ने कहा—तुम हमारी ज़मींदारी में रहते हो। हमारे खिलाफ चलने वाले दूसरे ज़मींदार को कर्ज़ नहीं दे सकते। वह साला हो चाहे कोई भी हो। समझे? जाओ। अगर फिर सुना कि तुमने चन्द्र-कान्त को कर्ज़ दिया तो....

—अब कैसे दे सकता हूं सरकार?

—जाओ।

गोलोक साह चला गया।

उग्रमोहन ने दीवान जी से पूछा—चन्द्रकान्त के ऊपर वह फौजदारी मुकदमा दायर कर दिया?

—जी हां।

—किसके-किसके खिलाफ रपट लिखाई?

—चन्द्रकान्त बाबू, रामपिरीत और अहंकार पांडे।

—ठीक है। और कुछ?

—जी नहीं। गोपाल पास हो गया है, आपको प्रणाम करने आया है।

—बुलाओ।

राखाल बाबू के बड़े लड़के गोपाल ने आकर प्रणाम किया।

उग्रमोहन बाबू बोले—वाह, ठीक है। दीवान जी, गोपाल को हवेली की डाक्टरी पर बहाल कर दिया जाए।

गोपाल अभी-अभी डाक्टरी पास करके आया था।

काम-काज खतम करके ज़मींदार उग्रमोहन सिंह घोड़े पर सवार होकर कचहरी से चले गए। सब सशंक नेत्रों से दौड़ते घोड़े को देखते रहे।

प्रबल प्रतापशाली ज़मींदार श्रीयुत उग्रमोहन सिंह के अजेय प्रताप से शेर और बकरी एक घाट पर पानी नहीं पीते थे, इसका कारण यह था कि उनकी ज़मींदारी में बकरियां तो बहुत थीं, पर शेर एक भी नहीं था।

## ३

सन्ध्या उतर रही थी ।

पश्चिम के क्षितिज में बड़े समारोह के साथ सूर्यास्त हो रहा है । छोटे और बड़े, कजरारे और उजले, स्तर और स्तूप; हर तरह के बादलों पर अस्ताचलगामी सूर्य की आभा व्याप्त हो रही है । बादलों में से कोई भी अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा नहीं कर पा रहा है। डूबते हुए सूर्य के आलोक-समुद्र में मानो वे छोटे-छोटे द्वीप हैं । अलग-अलग ढंग से सभी इस विराट दृश्य को सार्थक कर रहे थे । अस्त होते हुए सूर्य के आलोक की छटा की विचित्र अभिव्यक्ति के समवेत संगीत से चराचर मुग्ध था । इस अंचल की लक्ष्मी नन्ही-सी नदी भी इस उत्सव में शामिल थी । उसके तरंग-सिहरित वक्ष पर भी शाश्वत स्वप्न का क्षणिक उत्सव थिरा रहा है । हर तरंग का वर्णविन्यास न्यारा ही है । वह मानो अपनी चंचल गति को क्षणभर के लिए रोककर अस्तगामी सूर्य को वर्ण-अभिनन्दन भेंट कर रही है ।

दिगन्त तक पसरा हुआ सरसों का खेत मानो एक दिगन्तव्यापी सुनहला सपना हो जो लाखों-करोड़ों फूलों में समाया हुआ था ।

घोड़े पर सवार उग्रमोहन इस दृश्य का आनन्द लेते हुए खेत के मेंड पर धीरे-धीरे चले जा रहे थे । एकाएक वह घोड़े से उतर पड़े और नदी के किनारे पहुचकर उन्होंने कपड़े उतार डाले । उनके गोरे-चिट्टे शरीर पर केवल शुभ्र जनेऊ शोभायमान रहा । उन्होंने क्षितिज में विलीन होते हुए सूर्य को प्रणाम किया । उस निर्जन प्रान्तर में उग्रमोहन ने गुरु गम्भीर

स्वर से सूर्यवन्दना की। उन्होंने हाथों से सूर्य को जल चढ़ाते हुए स्तुति की—

ॐ जवा कुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

उग्रमोहन का उद्धत शीश सूर्य के प्रणाम में झुक गया। सूर्यवन्दना समाप्त करके उग्रमोहन विमुग्ध, विस्मित नेत्रों से पच्छिम की दिशा में आकाश पर कुछ क्षण तक स्तब्ध होकर निहारते रहे।

सूर्यास्त हो गया।

जब उग्रमोहन घर पहुंचे तो अंधेरा गहरा पड़ चुका था। शिव मन्दिर में सन्ध्या की आरती के शंख और घंटे की आवाज़ अब तक सुनाई पड़ रही थी।

वह महल के अन्दर गए। शयनकक्ष में पहुंचकर उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी रानी वह्निकुमारी बंकिमचन्द्र की ग्रन्थावली पढ़ रही है।

उग्रमोहन ने मुस्कराकर पूछा—अब किससे प्रेम चल रहा है। जगतसिंह या गोविन्दलाल से?

वह्निकुमारी ने पुस्तक से आंख उठाए बिना ही जवाब दिया—गजपति विद्यादिग्गज से।

—वह कौन है?

—जगतसिंह को जानते हो और गजपति विद्यादिग्गज को नहीं जानते?

—कैसे जानूं? पढ़ा तो कभी नहीं, दोनों का नाम सुना ज़रूर था।

अब वह्निकुमारी ने पुस्तक की ओर से मुंह उठाकर विस्मित होने का बहाना करते हुए पूछा—तो इतने दिन तक क्या करते रहे? हमारे साथ शादी तो अब हुई है। बंकिम की रचनाएं भी नहीं पढ़ीं?

—तुम्हारे भाई साहब की तरह उपन्यास, कविता, गाने-बजाने को लेकर रहूं ऐसी दुर्बुद्धि मुझे कभी न हो। मेरी जवानी पहलवानों के

साथ और घोड़े की पीठ पर बीती है। उपन्यास हाथ में लेकर तकिये से टेक लगाकर नहीं। हां, तुम लोगों की बात और है।

वह्निकुमारी ने कोई जवाब नही दिया। वह उग्रमोहन की तरफ देखने लगी। उसकी बुद्धिदीप्त, बड़ी-बड़ी आंखें एक तीव्र व्यंग्य से चमक उठीं। उसके कानों में हीरे से जड़ा कर्णफूल भी जैसे हिल-हिलकर उग्रमोहन की इस मूर्खता पर मूक व्यंग्य कर रहा था। उग्रमोहन इस मूक और तीखे व्यंग्य से अभिभूत होकर कुछ अप्रासंगिक ढंग से ही बोल उठे—हूं, दो ही दिन में मालूम हो जाएगा, कौन ज़्यादा बुद्धिमान है, मैं या तुम्हारे भाई साहब।

कहकर उन्होंने साफा उतार दिया और दोनों बाहें फैलाकर अंगड़ाई ली, फिर दोनों हाथ कमर पर रखकर तनकर खड़े हो गए।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह्निकुमारी ने कहा—तुम भी तो कम बुद्धिमान नहीं हो। अगर न होते तो मेरे भाई साहब के दिए हुए वाणी नाम को बदलकर वह्नि कैसे बना देते।

—क्यों? यह नाम क्या तुम्हें पसन्द नहीं है?

वह्निकुमारी ने कुछ जवाब नहीं दिया, केवल हास्योज्ज्वल दृष्टि से पति के मुंह की ओर देखती हुई मूक हंसी से उग्रमोहन को चंचल करने लगी।

उग्रमोहन बोल उठे—तुम तो आग हो! वाणी नाम तुम्हें शोभा नहीं देता है। वह्निकुमारी ही तुम्हारा उचित नाम है, तुम्हें पसन्द नहीं आया? ताज्जुब की बात है!

वह पास ही एक सोफे पर बैठ गए। वह्निकुमारी एकटक इतनी देर तक पति का बलिष्ठ देह-सौष्ठव देख रही थी। पति के बैठते ही बिना किसी भूमिका के उनकी बगल में बैठकर उसने अपनी बाहें उनके गले में डाल दीं और कहा—बहस रहने दो, चलो छत पर चलें। कितनी मोहक चांदनी है!

उग्रमोहन ने पूछा—सच बोलो, तुम्हें कौन ज़्यादा अच्छा लगता

है ? मैं या तुम्हारे भाई साहब ? हममें से कौन बेहतर है, मैं या चन्द्रकान्त ?

वह्निकुमारी ने हंसकर जवाब दिया—शेर और मोर की क्या तुलना ? चलो छत पर चलें।

दोनों छत पर गए।

यानी इस उपमा से उग्रमोहन खुश हो गए।

वह घनी मूंछों को ऐंठते हुए बोल उठे—वाह, बड़ी मीठी शहनाई बज रही है, बहुत ही अच्छी पूर्वी की धुन है।

वह्निकुमारी की आंखें फिर मूक हास्य से प्रखर हो गईं।

उग्रमोहन पत्नी की आंखों के इस भाषामय विद्रूप को खूब समझते थे, इसीलिए उन्होंने प्रश्न किया—क्यों, यह पूर्वी नहीं है क्या ?

—नहीं, यमन-कल्याण है।

सुनकर उग्रमोहन मन ही मन सकपका गए। इस क्षेत्र में सचमुच ही वह्नि को अधिक ज्ञान है और उसके इस मानसिक उत्कर्ष के मूल में चन्द्रकान्त का प्रभाव स्पष्ट है, यह अनुभव करके उग्रमोहन मन ही मन क्षुब्ध हो गए।

थोड़ी देर दोनों ही चुप रहे।

चारों ओर चांदनी छिटक रही थी। दूर, नौबतखाने में शहनाई पर यमन कल्याण बज रहा था। चांदनी लहरा उठी थी।

अचानक वह्निकुमारी बोल उठी—ओहो, मैं ही गलती पर थी, यह तो पूर्वी ही है, यमनकल्याण नहीं।

उग्रमोहन ने कहा—अच्छा, यह बात है ?

इसी समय नीचे से हुम्-हुम् की आवाज़ सुनाई पड़ी।

उग्रमोहन उठ खड़े हुए। बोले—चन्द्रकान्त की पालकी आ गई। चलूं ज़रा शतरंज की बाजी जमे।

दोनों नीचे उतर गए।

नीचे बैठक में गलीचे पर बैठकर शतरंज की बाजी पर टकटकी बांधे

उग्रमोहन और चन्द्रकान्त खेल रहे थे। उस समय देखकर कौन कह सकता है कि उग्रमोहन ने दीवान जी को चन्द्रकान्त पर फौजदारी मुकदमा दायर करने का हुक्म अभी-अभी दिया था। साथ ही चन्द्रकान्त भी यहां आने के ठीक पहले उग्रमोहन के पोखरे का लगान लूट लेने का प्रबन्ध करके आए थे, यह भी उनका चेहरा देखकर कोई नहीं कह सकता।

बहुत दिनों से यही रफ्तार रही है। वे दोनों ज़मीन-जायदाद सम्बन्वी मामलों में एक दूसरे को पछाड़ने की दिन-रात कोशिश करते थे, पर रोज़ शाम को साले और बहनोई एक साथ जमकर शतरंज ज़रूर खेलते थे।

शाम को शतरंज लेकर बैठते थे तो लगता था कि दोनों में प्रगाढ़ मित्रता है। आज तक किसीने भी आमने-सामने ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी मामलों पर कभी आलोचना नहीं की यानी इसकी आलोचना कचहरी में ही होनी चाहिए बैठक में नहीं, जैसे कि शतरंज का प्रसंग बैठक में ही सोहता है कचहरी में नहीं। दोनों का यही सिद्धान्त था।

चन्द्रकान्त सांवले इकहरे बदन के थे। मुंह गोल था और नाक सुग्गे की टोंट जैसी झुकी हुई। दाढ़ी-मूंछ सफाचट। आंख और चेहरे पर बुद्धि की ज्योति जगमगाती रहती थी।

एक नौकर दो चांदी के गिलासों में भांग लेकर आया।

दोनों चुपचाप उसे पीकर फिर शतरंज पर जुट गए।

नौकर गिलास लेकर चुपचाप चला गया।

# ४

सुबह से ही वादल घिर आए थे। सूर्य का कहीं पता नहीं था। आसमान पर काली-काली घटा छाई थी। गीली हवा चल रही थी। रास्ते में एकाध राही ही दिखाई पड़ते थे। चन्द्रकांत राय अपने खास कमरे में बैठे हैं। शौकीन आदमी ठहरे, उनकी बैठक में अपनी रुचि की सजावट है। वहां कुर्सी, टेबुल नहीं है, सो कमरे की सारी फर्श दूब जैसे हरे मखमली गलीचे से ढका है। दूध जैसे उजले गिलाफ चढ़े हुए कुछ गाव-तकिये पड़े हैं। बीच में बड़ा-सा चांदी का परात रखा हुआ है। उसमें एक खूबसूरत नक्काशीदार फर्शी रखी है। कोने में महोगनी लकड़ी की तिपाई और उसपर सोने-चांदी का काम किया हुआ एक बड़ा-सा गुल-दान है, जिसमें केतकी के तीन-चार फूल सजे हुए हैं। कमरे की दीवारों पर सफेदी की हुई है, कहीं एक भी चित्र नहीं टंगा है। दूसरे कोने में सितार, इसराज आदि कुछ वाद्ययन्त्र रखे हुए हैं।

चन्द्रकांत तन्मय होकर गाना सुन रहे थे। उस्ताद मिसिर जी तान-पूरा लेकर मियां की मल्लार गा रहे थे।

**बूंदन भीजै मोरी सारी,**
**अब घर जाने दे बनवारी**
**एक घन गरजे दूजे पवन बहत**
**तिजे ननद मोहे देत गारी**

राधा की कृष्ण से यह विनती राग की गूंज में जैसे बिलख रही है। चन्द्रकांत राय मुग्ध होकर सुन रहे हैं। फर्शी की नली हाथ में धरी रह

गई थी। कश लेना भी भूल गए। इस घनघोर वर्षा की लगभग अंधेरी वेला में उनका सारा अन्तर जैसे गीत की तान पर बैठकर यमुना तट पर पहुंच गया था। वहां पर वे स्पष्ट देख रहे थे कि एक गोरी किशोरी एक सांवले किशोर के दोनों हाथ थामे विनती कर रही है—अजी, मुझे अब जाने दो। वर्षा में मेरी साड़ी भीग गई है। आकाश में बादल गरज रहे हैं, हवा के तेज़ झोंके आ रहे हैं, ननद मुझे गालियां देगी। अब मुझे जाने दो।

संगीत समाप्त हो गया। थोड़ी देर दोनों निर्वाक् रह गए। राग मानो अभी तक कमरे में गूंज रहा था। चन्द्रकांत राय ने ही पहले बात की। बोले—ख़ूब, वाह!

मिसिर जी दोनों हाथ जोड़कर बोले—हुज़ूर की नवाज़िश!

इसी समय दरवाज़े पर एक हट्टे-कट्टे जमादार ने आकर सलाम किया। चन्द्रकांत राय ने पूछा—क्या हाल है छोटनसिंह?

छोटनसिंह बोला कि हुज़ूर ने पोखरे का लगान लूटने का जो हुक्म दिया था, वह तामील हो गया है। लूट में कुल दो मन मछली मिली है। दीवान जी ने पूछा है कि अब उसे क्या किया जाए?

चन्द्रकांत राय ने हुक्म दिया कि सारी मछलियां उग्रमोहन बाबू को भेंट में भेज दी जाएं।

—कोई ख़ून-ख़च्चर भी हुआ?

—कोई ख़ास नहीं। रामअवतार सिपाही के सिर पर ज़रा-सी चोट आ गई है, पर कोई ख़तरनाक बात नहीं है।

—अच्छा। जाओ।

छोटनसिंह जाने के पहले सलाम करके कहता गया कि गोलोक साह कचहरीघर में बैठे हैं।

चन्द्रकांत ने कहा उसे यहीं भेज दो।

मिसिर जी बोले—हुज़ूर, इजाज़त चाहता हूं। अभी तक स्नान-ध्यान कुछ नहीं हो सका है।

—हां हां, ज़रूर।

मिसिर जी चले गए। गोलोक साह अन्दर आया और बड़ी हिनौती के साथ प्रणाम करके हाथ जोड़े खड़ा रहा।

—बैठो साह जी, क्या हालचाल है?

गोलोक साह संकोच के साथ बैठ गया और बोला—हाल अच्छा नहीं है सरकार।

—भजना, तम्बाकू दे जा।

भजना खानसामा आकर चिलम ताज़ी करने के लिए ले गया।

चन्द्रकांत गोलोक साह की तरफ देखते हुए बोले—क्या मतलब?

गोलोक साह ने दबी आवाज़ से कहा—उधर से बुलौआ आया था सरकार। उग्रमोहन बाबू ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं आपको उधार न दूं।

चन्द्रकांत की दोनों आंखें पल भर के लिए चमक उठीं और फिर सहज हो गईं। अब रुपये की ज़रूरत तो नहीं रह गई थी, फिर भी उन्होंने कहा—जब मांग चुका हूं तो रुपया देना ही पड़ेगा।

दरवाज़े के पास भजना खानसामा चिलम फूंकते हुए दिखाई पड़ा।

चन्द्रकांत बहुत धीरता के साथ बोले—अगले बुधवार को यानी परसों हमारा गुमाश्ता राधिकामोहन तुम्हारे यहां जाएगा।

भजना चिलम अच्छी तरह भरकर कमरे के अन्दर आया।

गोलोक साह ने आर्त स्वर में कहा—सरकार, मेरा भी ज़रा ख्याल कीजिए। मेरे लिए तो एक ओर कुआं है, एक ओर खाई, मैं किधर जाऊं।

—ठीक है, तुम हमारी जमींदारी में आ बसो। कोई तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकता। पीरपुर बाज़ार में हमारा एक खास मकान है, चाहो तो तुम कल से ही आकर वहां बस सकते हो।

भजना खानसामा ने चिलम को फर्शी पर रखकर नली मालिक के हाथ में थमा दी और पीछे खिसककर बाहर निकल गया।

फर्शी से एक हलका-सा कश खींचकर चन्द्रकांत ने कहा—अच्छा तो ठीक रहा, परसों राधिकामोहन तुम्हारे यहां जाएगा ।

गोलोक साह कुछ देर बैठा सिर खुजलाता रहा, शायद सोच रहा था कि पीरपुर के मकान में आएं या नहीं, पर जब उसने मुंह खोला तो पता लगा कि वह कुछ और ही सोच रहा था। हकलाते हुए बोला—तो सरकार लिखा-पढ़ी···

—राधिकामोहन को हमारी ओर से पावर आफ एटर्नी मिला हुआ है। फिक्र मत करो। रुपये तैयार रखना।—निर्विकार चित्त से चन्द्रकान्त कश खींचने लगे।

गोलोक साह अपनी खुरदरी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला—सरकार पीरपुर का मकान····

—हां कल ही आ सकते हो।

गोलोक साह विदा हो गया।

चन्द्रकान्त चुपचाप तम्बाकू पीने लगे। अम्बूरी तम्बाकू की खुशबू से कमरा महक उठा। थोड़ी देर बाद चन्द्रकान्त ने खिड़की से झांककर देखा कि कलकत्ता से आए हुए उनके मित्र शिकार खेलकर लौट आए हैं। हाथी को फाटक के अन्दर घुसता देखकर चन्द्रकान्त बालापोश ओढ़कर बरामदे में निकल आए और मुस्कराते हुए खड़े रहे।

हाथी से उतरने के पहले ही एक शिकारी चिल्लाकर बोल पड़ा—भारी गुडलक रहा। एक फ्लारिकन मिल गया।

हाथी बैठ गया। तीन सज्जन उतर पड़े। चन्द्रकान्त ने कहा—कई 'कायम' भी तो मिल गए हैं।

शिकारियों में से एक ने कहा—तीन चकवे भी मिल गए हैं।

खुशी के साथ बतकही करते हुए सब लोग अतिथि-निवास की ओर बढ़े। शिकारी बारिश में भीग गए थे। अब भी झिर-झिर वर्षा हो रही थी। उसकी परवाह न करके चन्द्रकान्त मित्रों के साथ बातें करते हुए चलने लगे। भजना खानसामा जल्दी से एक छतरी लेकर मालिक के

पास पहुंचा और उनके सिर के ऊपर खोलकर खड़ा हो गया। चन्द्रकान्त ने कहा—नहीं, रहने दे।

अतिथि-निवास में पहुंचते ही देखा गया कि अतिथियों के लिए गरम चाय तैयार है। साथ ही गरम-गरम फूली-फूली लूचियां और तली हुई मछलियां भी थीं।

जल्दी से कपड़े बदलकर लोग नाश्ते पर जुट गए। शिकार की कहानी खूब जम गई थी, तभी एक सिपाही ने आकर खबर दी—मैनेजर बाबू किसी खास काम से बाहर खड़े हैं।

बाहर आते ही मैनेजर बाबू ने कहा—रमेशबाबू करीब तीन बजे दिन को इन्क्वायरी के लिए आ जाएंगे।

—ठीक है—कहकर चन्द्रकान्त फिर से अन्दर चले गए।

रमेशबाबू डिप्टी मजिस्ट्रेट हैं। उग्रमोहन सिंह ने चन्द्रकान्त बाबू पर जो मुकदमा दायर किया है उसीके बारे में जांच करने आ रहे हैं। चन्द्रकान्त राय को यह खबर पहले ही लग गई थी, पर देखकर मजाल नहीं कि कोई समझ ले कि अपनी सफाई के लिए वह ज़रा भी कोशिश कर रहे हैं। इसपर भी उन्होंने कलकत्ता निमाई बाबू को तार भेजा था कि वह मित्र-बन्धुओं के साथ यहां पहुंच जाएं। यहां शिकार अच्छा मिलेगा। फलस्वरूप निमाई बाबू दो मित्रों के साथ कल ही आ गए थे। निमाई बाबू चन्द्रकान्त के सहपाठी थे। दोनों साथ-साथ कलकत्ते में एम० ए० में पढ़े थे।

—ठीक है—कहकर चन्द्रकान्त तो अन्दर चले गए, पर मालिक की इस उदासीनता का कोई मतलब न समझ पाकर मैनेजर कमलाक्ष बाबू चक्कर में पड़ गए। उनकी आंखों और चेहरे पर निराशा और विस्मय का भाव झलक आया। दोनों हथेलियां झटककर वह कुछ देर वहीं खड़े सोचते रहे, क्या करें, क्या न करें, फिर कचहरीघर में चले गए।

दिन के तीन बजे डिप्टी रमेशबाबू पधारे।

पहुंचते ही निमाई बाबू से उनकी मुलाकात हो गई। निमाई बाबू उनके बहनोई थे।

—ओ हो, निमाई ! तुम कहां से टपक पड़े ?

गप-शप खूब जमी। चाय खाने-पीने, गाने-बजाने आदि के साथ और भी मज़ेदार हो गई। चन्द्रकान्त बाबू हंस-हंसकर अतिथियों का आदर-सत्कार करने लगे।

कहना न होगा कि रमेशबाबू ने अपनी रिपोर्ट में चन्द्रकान्त राय को एकदम निर्दोष बताया। उग्रमोहन का मुकदमा खारिज हो गया।

## ५

ज़मींदार उग्रमोहन का बजरा वाहिनी नदी के घाट पर आ लगा। वाहिनी एक अप्रसिद्ध छोटी-सी नदी है। गंगा से मिली होने के कारण बरसात में वह गंगा के पानी से खूब भर जाती थी और उन्हीं दिनों वाहिनी जो जल-संचय कर लेती थी उसीसे साल भर उसका काम चलता था। इस नदी की विशेषता यह है कि यह जंगल के बीचोंबीच होकर बहती है। इस विस्तृत जंगल का नाम यम जंगल है। सचमुच जंगल में घुसते ही ऐसा लगता है कि यमपुरी कहीं पास ही होगी। दिन को भी प्रकाश का नाम नहीं। चारों ओर घोर अन्धकार, पर कहीं-कहीं खुली जगह भी है। ऐसी ही एक जगह नदी पर घाट बना हुआ है। बजरा घाट पर लगते ही चार बरकंदाज़ सलामी देकर खड़े हो गए। उग्रमोहन सिंह बजरे से उतरे। उनके साथ उनके मैनेजर अघोर बाबू और दो सुन्दरी बालिकाएं भी उतरीं। बालिकाओं में से एक आठ की और दूसरी नौ साल के लगभग थी, पर देखने में दोनों करीब-करीब एक जैसी लगती थीं। शक्ल-सूरत भी एक जैसी। नाम रुमनी और झुमनी। इनकी भी अपनी कहानी है। उग्रमोहन बाबू की स्वर्गीया बड़ी बहन की बेटी कमला का विवाह बहुत ही गरीब घराने में हुआ था। कमला उग्रमोहन बाबू को बहुत ही प्रिय थी। उसके विवाह के बाद उग्रमोहन ने प्रस्ताव भेजा कि गंगागोविन्द कमला को लेकर हमारे यहां बस जाएं। उनका उचित आदर-सम्मान होगा।

कमला के पति गंगागोविन्द मिश्र एक साधारण गरीब गृहस्थ थे,

फिर भी वह इस प्रस्ताव पर राज़ी नहीं हुए। उनमें प्रबल आत्मसम्मान था। उग्रमोहन सिंह भी प्रबल प्रकृति के मनुष्य थे, फलस्वरूप कुछ न कुछ चखचख चलती ही रहती थी। कमला के कारण उग्रमोहन गंगागोविन्द का कुछ बिगाड़ नहीं सके, पर ऐसे मौके पर एक घटना हो गई। झुमनी के जन्म के बाद ही कमला मर गई। उग्रमोहन भी वहां उपस्थित थे। मृत्यु के समय कमला बोली—मामा, अपनी बेटियों को तुम्हारे हाथों सौंपे जाती हूं।···

यह करीब नौ साल पहले की बात है। नौ साल से उग्रमोहन बाबू ने बार-बार गंगागोविन्द के यहां से रुमनी-झुमनी को अपने यहां लाने की कोशिश की, पर असफल रहे। गंगागोविन्द ने दूसरा ब्याह नहीं किया। दोनों बेटियों के साथ दुःख-सुख के दिन काट रहे थे। उग्रमोहन ने बार-बार उन्हें ले जाने की कोशिश की, पर गंगागोविन्द ने नहीं जाने दिया। वह हमेशा नम्रता के साथ उत्तर देते थे कि आपकी कृपा-दृष्टि ही हमारे लिए बहुत है। रुमनी-झुमनी को मैं नहीं दे सकूंगा।

कल उग्रमोहन के धैर्य का बांध टूट गया। इतने दिन तक वह गंगागोविन्द के साथ श्वसुर जैसा भद्रता का व्यवहार बरतते रहे, पर अब नहीं। कल उन्होंने रुमनी-झुमनी को लाने के लिए पालकी भेजवा दी। गंगागोविन्द की इतनी मजाल कि उन्होंने पालकी लौटा दी और नम्रता के साथ पत्र लिख दिया कि रुमनी-झुमनी को कल सवेरे भेज देंगे। रात को ठंड लग जाने के डर से उन्हें अभी नहीं भेजा। आशा है कि आप नाराज़ न होंगे।

उग्रमोहन आग-बबूला हो गए। सवेरे रुमनी-झुमनी के पहुंचते ही उन्हें बजरे में लेकर वे चल पड़े। साथ में मैनेजर बाबू को भी ले लिया। इसका कारण किसीको मालूम नहीं हुआ। आते समय बाज़ार से जितनी भी मिठाई मिल सकी सब खरीद लाए। घर में खबर भेजवा दी कि बगीचा देखने जा रहे हैं। यम जंगल में उग्रमोहन सिंह का एक बगीचा है। उनकी करीब पांच सौ भैंसें इस जंगल में रहती हैं।

बजरे से उतरते ही उग्रमोहन ने पूछा—पालकी तैयार है न ?

जवाब मिला—जी सरकार।

साथ ही तीन पालकियां हाज़िर की गईं। एक में उग्रमोहन, दूसरी में अघोर बाबू और तीसरी में रुमनी-झुमनी सवार हुईं। पालकियां चुपचाप पगडंडी पर बढ़ीं और जंगल में अदृश्य हो गईं।

उग्रमोहन सिंह चिकनी, काली भैंसों को मिठाई खिला रहे थे; सन्देश, रसगुल्ला, जलेबी, जो जितना खा सके। भैंसों के चिकने बदन पर सूरज की किरणें बिछल रही थीं।

अधमुंदी आंखों से देखती हुई वे मिठाई खा रही थीं। उग्रमोहन स्वयं खड़े होकर देख-भाल कर रहे थे। सहसा उन्होंने ग्वाले को बुलाकर पूछा—क्यों भैंसों की सींग पर आज घी मला गया था ?

—थोड़ी देर में मला जाएगा सरकार !

—क्यों ? सुबह मलने की बात है न ?

—बड़ी गौशाला से अभी तक घी नहीं आया।

उग्रमोहन सिंह ने आवाज़ दी—मनक्का पांडे !

मनक्का पांड़े सलामी देकर खड़ा हो गया।

—तुम फौरन बड़ी गौशाला में जाकर पता करो कि घी अभी तक क्यों नहीं पहुंचाया गया ?

मनक्का पांडे चला गया।

फिर उग्रमोहन ने पूछा—अभी यहां कितनी भैंसें हैं ?

—पचास। बाकी सब बड़ी गौशाला में हैं।

उग्रमोहन घूम-घूमकर भैंसें गिनने लगे। इस गौशाला में ऐसी भैंसें रखी जाती हैं, जिनको जल्दी ही बच्चा होने वाला है या जिनके पड़वे बड़े हो गए हैं और वे अब दूध नहीं देतीं।

उग्रमोहन ने पूछा—'दुश्मन' कहां है ?

—नदी में सरकार !

ग्वाले ने गले से अजीब-सी हुंकार लगाई। थोड़ी देर में धीमी आवाज़ करता, कीचड़ में लिपटा एक बड़ा-सा भैंसा झाड़ी-झुरमुटों के बीच में 'वांऽ ऽ ऽ वांऽ ऽ ऽ' आवाज़ करते हुए इसी ओर आने लगा।

दुश्मन एक विराटकाय भैंसा था। वह उग्रमोहन को बहुत प्रिय है। उग्रमोहन अपने हाथ से उसे मिठाई खिलाने लगे।

मिठाई खिला चुकने के बाद वह उसके गले में हाथ डालकर सहलाने लगे। दुश्मन ने हुमशकर अपना गला बढ़ा दिया।

थोड़ी देर में उग्रमोहन का सुसज्जित घोड़ा आ पहुंचा। उसपर सवार होकर वह और भी घने जंगल की संकरी पगडंडियों पर बढ़ने लगे।

उनके चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आई थीं। थोड़ी देर पहले इसी राह से मैनेजर बाबू रुमनी-झुमनी को लेकर आगे बढ़ गए थे।

जंगल के बीच से घोड़े पर सवार उग्रमोहन ने धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए रुमनी-झुमनी के बारे में जो कुछ करना था, वह निश्चय कर लिया। रुमनी-झुमनी फिर गंगागोविन्द के पास लौटकर नहीं जाएंगी।

उग्रमोहन का घोड़ा जंगल पार करके एक खुली-सी जगह में पहुंचा। तुरन्त ही एक सईस दौड़ आया। उग्रमोहन उतर पड़े। सईस के हाथ में लगाम और चाबुक थमाकर उन्होंने पूछा—मैनेजर बाबू आ गए?

सईस ने जवाब दिया—जी हुज़ूर।

—रुमनी-झुमनी?

—जी हुज़ूर।

—वे कहां हैं?

—कचहरी घर में सरकार!

थोड़ी ही दूर पर एक चौपाल थी, कच्ची, पर काफी बड़ी। चारों ओर बरामदे थे। यह जगह उग्रमोहन की जंगली कचहरी के नाम से प्रसिद्ध थी। उग्रमोहन उसी ओर बढ़ चले। पहुंचकर उन्होंने देखा,

रुमनी-झुमनी, मैनेजर बाबू और बूढ़ा जमादार, भीखन तिवारी, सब अभी-अभी पकड़े गए एक जंगली खरहे को लेकर व्यस्त हैं। रुमनी-झुमनी का कौतूहल सीमा लांघ चुका था। उग्रमोहन के पहुंचते ही वे जिद पकड़ गईं—नाना जी, हम खरहा पालेंगे।

उग्रमोहन ने कहा—अरे, तुमने तो शेर पाल रखा है। फिर खरहा लेकर क्या करोगी ? मेरी यह मूंछें पसंद नहीं आतीं ?—कहकर उन्होंने अपनी घनी मूंछें ऐंठीं।

मैनेजर बाबू और भीखन तिवारी मालिक को देखते ही अदब के साथ खड़े हो गए थे। उनको विनोद करते देखकर वह सामने से हट गए। इसीमें कल्याण था। क्योंकि उग्रमोहन के सामने हंस देना खतरे से खाली नहीं था। एक बार एक नायब को हंसने के कसूर पर उग्रमोहन ने उसका कान पकड़कर बाहर निकाल दिया था। उग्रमोहन में विनोद-प्रियता थी और वह अपनी नातिनों या मित्रों के बीच दिल खोलकर दिल्लगी भी करते हैं, पर नौकर-चाकर कोई हंस पड़े तो उसे सबक सिखा देते हैं।

रुमनी बोली—खरहे के कान बड़े सुन्दर हैं।

झुमनी बोली—आंखें भी।

उग्रमोहन पास ही एक मोढ़े पर बैठकर बोले—तुम्हारी पसन्द बहुत घटिया है, उसकी मूंछें कहां हैं ?

—हैं तो !

—हुंह, इसे मूंछ कहते हैं ? मेरी मूंछें देख !

रुमनी ने कहा—आपने इतनी चिड़ियां पाल रखी हैं, उनमें भी तो किसीके मूंछें नहीं हैं, फिर उन्हें क्यों पाल रखा है ?

—चिड़ियां कितना सुन्दर गाती हैं, कितना मीठा बोलती हैं, खरहा ऐसा कर सकेगा ?

रुमनी-झुमनी ने देखा, बहस में नाना जी को हराना उनके बस का नहीं है, तब वे नाना की गोद में बैठकर बोलीं—नहीं नाना जी, हम तो

ज़रूर पालेंगे।

उग्रमोहन ने कहा—अच्छा ठीक है, पर हमारी भी एक शर्त माननी पड़ेगी। हम यहां महीना भर रहेंगे, तुम्हें भी रहना पड़ेगा। रह सकोगी न हमारे पास ? पिता के पास तो नहीं जाना चाहोगी ?

—जो पिताजी नाराज़ हुए ?

—हमारे पास रहोगी तो क्यों नाराज़ होंगे ?

—आप यहां एक महीने रहेंगे, तो नानी किसके पास रहेंगी ?

—मैं बीच-बीच में जाकर उनको देख आया करूंगा।

—तब हम दोनों किसके पास रहेंगी ?

उग्रमोहन ने हंसकर जवाब दिया—क्यों, खरहे के पास। अघोर बाबू भी तो रहेंगे।

रुमनी-झुमनी जल्दी से बोल पड़ीं—अघोर बाबू बड़े अच्छे हैं। देखो, हमारी अंगुली पर कैसा मनुष्य बना दिया है !

उग्रमोहन ने देखा, सचमुच ही दोनों के अंगूठों पर दो चेहरे बने हुए थे। रुमनी-झुमनी ने फिर कहा—देखो, साड़ी से घूंघट डाल दो तो कैसी दुलहिन जैसी लगती है।

कहकर साड़ी के छोर से अंगूठे पर घूंघट डालकर दोनों बहुत खुश हो गईं। उग्रमोहन समझ गए कि बुद्धिमान मैनेजर ने बालिकाओं को वश में कर लिया है। इससे उन्हें खुशी ही हुई।

घंटे भर बाद उन्होंने मैनेजर को बुलाकर आदेश दिया—निमाई नगर के मृण्मय ठाकुर के पास तुरन्त एक पालकी और सिपाही रवाना करो। मैं उनसे अभी मिलना चाहता हूं।

शाम के थोड़ी देर पहले जंगली कचहरी के कोने वाले कमरे में हाथ में पंचांग लिए उग्रमोहन सिंह बैठे थे। उनके सामने दरी पर मृण्मय ठाकुर बैठे थे। दुबला-सा इकहरा चेहरा, उमर चालीस-बयालीस के करीब।

दाहिने गाल का कुछ अंश कभी जल गया था, सो मुंह का यह हिस्सा सिकुड़ गया था और दाहिनी आंख कुछ ज़्यादा बड़ी दिखाई पड़ती थी। अगर यह त्रुटि न होती तो मृण्मय ठाकुर को सुन्दर कहा जा सकता था। मृण्मय ठाकुर निमाई नगर के एक खाते-पीते मज़बूत असामी थे। उग्रमोहन सिंह ने एकाएक पालकी भेजकर क्यों बुलवा भेजा, यह मृण्मय ठाकुर की समझ में नहीं आया। इसलिए वह मन ही मन शंकित हो रहे थे। वह उग्रमोहन को खूब अच्छी तरह जानते थे। सहसा उग्रमोहन ने कहा—देखो मृण्मय, तुम्हें एक ज़रूरी काम के लिए बुलवाया है।

—आदेश सरकार !

—आगामी तेईस माघ को विवाह की एक अच्छी साइत है।—कहकर उन्होंने पंचांग खोलकर फिर एक बार देख लिया—हां तेईस माघ। मैंने अपनी दोनों नातिनों के साथ तुम्हारे दोनों लड़कों की शादी करना निश्चय किया है।

अकस्मात् वज्रपात होने से भी शायद मृण्मय ठाकुर को इतना अचम्भा न होता, पर उग्रमोहन की बात सुनकर वह एकदम अवाक् रह गए। कुछ सुझाई नहीं पड़ा। उनकी विस्फारित दाहिनी आंख कुछ और विस्फारित हो गई।

उग्रमोहन मृण्मय के इस भावपरिवर्तन की परवाह किए बिना बोलते रहे—कुल-शील में तुम गंगागोविन्द के समान हो, बल्कि तुम कुछ सवा ही हो, पर इससे कुछ बनता-विगड़ता नहीं, मैं अपनी नातिनों को काफी दहेज़ दूंगा। पर एक शर्त है, मैं जभी अपनी नातिनों और नतजमाइयों को देखना चाहूंगा तो तुम ना नहीं कर सकोगे। दूसरी बात यह है कि मैं गंगागोविन्द की राय लिए बिना यह शादी करूंगा। मैं खुद ही कन्यादान करूंगा। अगर इसपर कोई बखेड़ा खड़ा हो तो ज़िम्मेदारी मेरी, समझे ! चुप क्यों हो ?

मृण्मय ठाकुर ठीक-ठीक समझे या नहीं, यह तो वही जानें, पर

उन्होंने उत्तर दिया—जब हुजूर ने तय कर लिया तो मेरी ओर से क्या एतराज हो सकता है ? यह तो मेरा परम सौभाग्य है, घर में जरा पूछ न लूं ?

उग्रमोहन बोले—पूछने से क्या फायदा ? मान लो तुम्हारी घरवाली न माने, तब भी तुम यह शादी रोक नहीं सकते। अच्छा तो यही रहेगा कि तुम घर पहुंचकर खबर दो कि तुम्हारे लड़कों की शादी हम उग्रमोहन बाबू की नातिनों से तय कर आए। धान-दूब सब तैयार है, तुम हमारी नातिनों को आशीर्वाद की रस्म पूरी कर दो।

थोड़ी देर चुप रहकर फिर उग्रमोहन ने कहा—मैं भी आज ही तुम्हारे लड़कों को आशीर्वाद देकर तभी घर लौटूंगा।

निर्वाक् मृण्मय ठाकुर को दुबारा मुंह खोलने की हिम्मत नहीं हुई।

उसी दिन शाम को जब रुमनी-झुमनी सो गईं तो उग्रमोहन घोड़े पर निमाई नगर चले गए। वहां मृण्मय ठाकुर के लड़कों को आशीर्वाद की रस्म पूरी कर आए।

जब वह मन में पूरी तरह सन्तुष्ट होकर अपने गांव की ओर लौट रहे थे तो रात एक पहर जा चुकी थी। आकाश में तारों की दीवाली जगमगा रही थी और चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। उसी समय एकाएक पूर्व की ओर अंधेरे पाख का चांद निकल आया। उग्रमोहन ने देखा, चांद के पास ही स्वाती भी दमक रही थी। स्वाती, चन्द्रमा की प्रियतमा पत्नी। एकाएक उग्रमोहन ने घोड़े को चाबुक लगाया और घोड़ा सरपट दौड़ पड़ा। उग्रमोहन सोचते जा रहे थे—न जाने वह्नि इस समय क्या कर रही होगी।

घर पहुंचकर उन्होंने देखा, दीवान जी मुंह लटकाए बैठे हैं। मालिक को देखकर वह और भी सिकुड़ गए। उग्रमोहन ने पूछा—क्या बात है, अब तक घर नहीं गए ?

राखाल बाबू के मुंह से अस्फुट शब्द निकले—हुजूर...

उनके मुंह से बात नहीं निकल रही थी। चकित होकर उग्रमोहन ने पूछा—बात क्या है ?

हिम्मत बांधकर राखाल बाबू बोले—'बहार' नहीं मिल रही है हुजूर !

—क्या मतलब ? चन्दनदास कहां है ?

—वह भी नहीं मिल रहा है हुजूर !

उग्रमोहन थोड़ी देर जैसे कुछ सोचते रहे, फिर उन्होंने पूछा—चन्द्रकान्त आज शाम को आए थे ?

—आप लौटे कि नहीं, यह पता लेने के लिए एक सिपाही आया था।

उग्रमोहन ने तुरन्त कहा—पालकी तैयार कराओ, मैं अभी चन्द्रकांत के पास जाऊंगा।

राखाल बाबू पालकी तैयार करने का हुक्म देने के लिए बाहर निकल गए।

उग्रमोहन की पालकी चन्द्रकान्त की बैठक के सामने बरामदे के नीचे आ लगी। चन्द्रकान्त भीतर बैठे कुछ गुनगुना रहे थे। उग्रमोहन को देखते ही बोले—अरे भई, आ जाओ। एक बड़ी अच्छी धुन पकड़ में आ गई है। सुनोगे ? भजना ! तानपूरा तो ले आ !

उग्रमोहन की भौंहें तन गईं, पर वे कुछ बोले नहीं।

तानपूरा आने पर चन्द्रकान्त हंसकर बोले—लो सुनो ! राग बहार चौताल में है। सदारंग का गीत, चलो बिना संगत के ही सही—

सब बन में कैसे सोहे ऋतुराज दिन आयो····

गाना खत्म होने पर उग्रमोहन ने कहा—मेरी बहार भी आज चोरी हो गई। चन्दन भी लापता है।

चन्द्रकान्त कृत्रिम आश्चर्य दिखाते हुए बोले—अच्छा !

फिर हंसकर बोले—जाने दो, गाय खोने पर इतनी बेचैनी शोभा नहीं देती।

बहार नामक गाय को उग्रमोहन ने पांच सौ रुपये में खरीदा था। उसकी विशेषता यह थी कि उसका रंग बिल्कुल शेर की तरह था। उसकी सेवा के लिए उग्रमोहन ने अलग एक गोसार बनवाई थी। उसकी देखभाल के लिए अलग से एक नौकर चन्दन भी रखा गया था।

एकाएक बहार के रहस्यमय ढंग से गायब हो जाने पर उग्रमोहन मात खा गए थे, पर चन्द्रकान्त की बात सुनकर बोले—नहीं, बेचैनी की क्या बात है, तुम्हारी बहार सुनकर मुझे अपनी बहार याद आ गई। आओ शतरंज की एक बाज़ी हो जाए।

फिर दोनों शतरंज पर जुट गए। भजना खानसामा दो फर्शियों पर चिलम लगाकर रख गया और धीरे से दरवाजा भेड़कर चला गया।

## ६

जब गगागोविन्द मिश्र ने सुना कि उग्रमोहन सिंह रुमनी-झुमनी को लेकर यम जंगल की ओर रवाना हुए तव वे कुछ सोच में पड़ गए। परेशान होकर वे चन्द्रकान्त के पास पहुंचे। गंगागोविन्द और चन्द्रकांत दोनों एक दूसरे के गहरे मित्र थे। पाठशाला में साथ पढ़े थे। गरीबी की वजह से गंगागोविन्द ज्यादा नहीं पढ़ सके, पर वे मेवावी छात्र थे। उनकी प्रतिभा देखकर ही चन्द्रकान्त ने खुद अपनी ओर से उनसे परिचय बढ़ाया था। वही परिचय धीरे-धीरे मित्रता में परिणत हो गया और आज तक दोनों की मित्रता अटूट है।

गंगागोविन्द के चरित्र में एक विशेषता थी। अमीरों के सम्पर्क से वे भरसक वचने की कोशिश करते थे। अपनी चारित्रिक विशिष्टता के कारण ही वे कभी भी उग्रमोहन का अनुग्रह नहीं स्वीकार कर पाए थे और इसी विशेषता के कारण वे चन्द्रकान्त के पास भी मित्रता का दावा लेकर जव-तब पहुंचते नहीं रहते थे। अपनी मामूली-सी आमदनी पर ही वे गृहस्थी चलाते थे और मौका मिलने पर स्थानीय पुस्तकालय से किताबें लाकर मन-बहलाव करते थे।

इसलिए यद्यपि देवी सरस्वती ने उन्हें विद्यालय की पाठ्य-पुस्तकों के जरिए दर्शन देने की सुविधा नहीं दे पाई थी, पर ऐसे भक्त को अधिक दिन तक ठुकराती भी कैसे? वास्तविक शिक्षा के सच्चे प्रकाश में गंगागोविन्द को देवी सरस्वती का वरदान मिला। गांव भर को यह बात मालूम थी और सब उनकी विद्वत्ता का लोहा मानते थे। चन्द्रकान्त जैसे सुसंस्कृत

तथा रुचि-सम्पन्न ज़मींदार भी गंगागोविन्द की मित्रता को अपने लिए गौरव का कारण समझते थे। अफसोस यही था कि गंगागोविन्द उनके पास कम ही आते थे, पर इसी कारण उनके मन में गंगागोविन्द के प्रति और भी श्रद्धा थी। आज बहुत दिन बाद गंगागोविन्द को एकाएक आते देखकर वे पुलकित हो गए।

शुरू से आखिर तक सारी बातें सुनकर उन्होंने कहा—तुम वाणी के पास एक खबर पहुंचा सकते हो।

गंगागोविन्द ने उत्तर दिया—चन्द्रकान्त, तुम्हें तो सब कुछ मालूम है, फिर ऐसी बातें करते हो ?

चन्द्रकान्त कुछ मुस्कराकर चुप रहे। फिर थोड़ी देर बाद बोले—अच्छा रहने दो, आज के दिन देख लो, अगर आज खबर न मिली तो कल तक मिल ही जाएगी। उग्रमोहन तुम्हारी लड़कियों को इतना प्यार करते हैं कि उनका कोई अनिष्ट नहीं करेंगे, यह तो निश्चित है।

गंगागोविन्द ने कहा—वह तो ठीक है, पर मुझे कष्ट जो हो रहा है, भला यह कैसा अत्याचार है ?

चन्द्रकान्त ने हंसकर उत्तर दिया—उग्रमोहन में अभी तक बचपना है। तुम्हें याद होगा, स्कूल में ज़रा-ज़रा-सी बात पर कितनी आपाधापी मचाता था।

चन्द्रकान्त, गंगागोविन्द और उग्रमोहन सहपाठी थे। उग्रमोहन दूसरे स्कूल में पढ़ते थे और जब-तब उनमें और चन्द्रकान्त में होड़ लग जाती थी। सरस्वती-पूजा, होली, दुर्गा-पूजा, स्कूल के खेल-कूद में, सभी जगह दोनों एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी थे। किसकी मूर्ति अच्छी बनी है, होली में कौन किसे नये ढंग से रंग डालकर चौंका दे सकता है ? खेल में किसका दल विजयी होगा, इन सब छोटी-छोटी बातों को लेकर दोनों की तना-तनी बनी ही रहती थी।

यद्यपि गंगागोविन्द की चन्द्रकान्त से गहरी दोस्ती थी और बचपन में उनके यहां खूब आना-जाना भी था, फिर भी वे दोनों ज़मींदार

घरानों के इन लड़कों के झगड़े-बखेड़े में कभी नहीं पड़े। वे बराबर संकोचपूर्वक इनसे बचकर रहते थे। उनके इस नम्र स्वभाव के कारण ही उग्रमोहन के पिता वीरमोहन बाबू गंगागोविन्द से बहुत स्नेह करते थे। और अन्त तक उनका स्नेह इतना गहरा हो गया कि आगे चलकर उन्होंने गंगागोविन्द को नतजमाई ही बना लिया। उग्रमोहन ने यह कभी सोचा भी नहीं था कि चन्द्रकान्त के मित्र गंगागोविन्द ही एक दिन मेरी भांजी के पति बनेंगे। पर दुनिया में अप्रत्याशित घटनाएं होती ही रहती हैं, यह बात उन्हें दूसरी बार तब महसूस हुई जब चन्द्रकान्त की बहन वाणी से उनका विवाह हुआ। चन्द्रकान्त के पिता सूर्यकान्त राय वीरमोहन बाबू के परम मित्र थे, और जिस दिन वाणी का जन्म हुआ था, उसी दिन उग्रमोहन से उसका विवाह पक्का हो गया था। शायद चन्द्रकान्त का विवाह भी उग्रमोहन की भांजी कमला से होता, पर जन्म-कुण्डली पर विचार करने से देखा गया कि चन्द्रकान्त की जन्म-कुण्डली में ऐसे कई ग्रह पत्नी स्थान पर विराजमान हैं कि कोई भी हिन्दू उनके प्रताप और प्रभाव की अवज्ञा नहीं कर सकता था। तब कमला की शादी चन्द्रकान्त के मित्र गंगागोविन्द के साथ हुई। वीरमोहन को आदमियों की परख थी। उनको इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं था कि इस विनयी, प्रियदर्शन, प्रतिभाशाली युवक से शादी होने पर कमला सुखी होगी। उनका विचार कितना सही था, यह उग्रमोहन की समझ में भले ही न आए, पर कमला यह बात समझ गई थी।

वीरमोहन और सूर्यकांत पुराने ज़माने के आदमी थे पर उनका मन आधुनिक था। उसका प्रमाण यही है कि सूर्यकांत ने अपनी लड़की वाणी को सुशिक्षित करने के लिए कलकत्ता से शिक्षिका बुलाकर अपने यहां नियुक्त की थी। वीरमोहन सिंह, सूर्यकांत और उस शिक्षिका को लपेट-कर स्थानीय बड़े-बूढ़े जो आलोचनाएं करते हैं, वह केवल आंशिक रूप से सच भले ही हों, फिर भी आश्चर्यजनक ज़रूर थीं।

गंगागोविन्द थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोले—फिर क्या किया जाए ?

चन्द्रकांत ने कहा—अभी कुछ मत करो। मुझे उम्मीद है कि कल तक कुछ खबर मिल ही जाएगी। परेशानी किस बात की है, रुमनी-झुमनी अपने नाना के ही यहां तो हैं। यह क्यों भूले जाते हो ? नाना भी कोई ऐसे-वैसे नहीं, स्वयं उग्रमोहन सिंह।

गंगागोविन्द भौंहें तानकर चुप रह गए।

उनके चले जाने के बाद चन्द्रकान्त थोड़ी देर आंखें मूंदे दाहिने हाथ पर गाल रखकर अधलेटे पड़े रहे। थोड़ी ही देर में उनके चेहरे पर मुस्कराहट दिखाई पड़ी, वे उठ बैठे और आवाज़ लगाई—भजना !

भजना के आते ही उन्होंने हुक्म दिया—जमादार सीताराम पांडे को तुरन्त बुला लाओ।

सीताराम पांडे बुजुर्ग जमादार है। चन्द्रकान्त को गोद में खिला चुका था। चन्द्रकान्त के स्वभाव को वह खूब गहराई तक जानता था। चन्द्रकान्त ने जब सीताराम से पूछा कि उग्रमोहन की दुलारी गाय 'बहार' कहां है, किसके जिम्मे है, कैसे है, तो सीताराम ने सारी बात समझ ली, पर वह कुछ बोला नहीं। चन्द्रकान्त जो कुछ जानना चाहते थे, उसका ठीक-ठीक जवाब देकर बूढ़ा जमादार सीताराम मिचमिचाई आंखों की मुस्कराती दृष्टि से चन्द्रकान्त को देखने लगा, मानो कह रहा था, तुम्हारे मन में फिर कोई शरारत है, मैं समझ गया।

चन्द्रकान्त ज़्यादा बातचीत न करके उठ खड़े हुए और अलमारी से दो सौ रुपये के नोट निकालकर सीताराम के हाथ में देते हुए धीरे से संक्षिप्त रूप से बोले—जो लगे खर्च करो, पर आज शाम के पहले 'बहार' को यहां से बिल्कुल गायब कर देना, यह मालूम न हो कि इसमें मेरा कोई हाथ है।

चन्द्रकान्त हमेशा इस प्रकार के छोटे-मोटे कामों में सीताराम की सहायता लेते हैं। मैनेजर, नायब, गुमारता, इन सबकी दृष्टि में चन्द्रकांत

राय एक गम्भीर प्रकृति के बुद्धिमान ज़मींदार थे, पर सीताराम की दृष्टि में वे अब भी एक बालक मात्र थे। केवल यही नहीं, इस सांवले तीक्ष्ण-बुद्धि युवक में ही जैसे सीताराम अपने आराध्य देवता नवदूर्वादल श्याम राय जी का साक्षात्कार करता था। इसीलिए स्नेह, भक्ति, भय मिश्रित आग्रह के साथ वह मालिक के काम में जुटकर अपने को कृतार्थ मानता था।

धन के लोभ से पंगु गिरिलंघन कर सकता है या नहीं, पता नहीं, पर लूला चन्दन ग्वाला केवल सौ रुपये के लालच से छपरा ज़िले में भाग जाने के लिए राज़ी हो गया और ट्रेन पकड़ने के लिए दस कोस दूर के रेलवे स्टेशन की ओर सिर पर पैर रखकर भाग चला। रक्षकहीन बहार सीताराम के द्वारा नियुक्त संताल मज़दूरों के द्वारा विताड़ित होकर उग्रमोहन की ज़मींदारी छोड़कर चली गई।

थोड़ी देर बाद सीताराम ने आकर मालिक को ९० रुपये लौटा दिये और बोला—चन्दनदास छपरा चला गया। सौ रुपये लेकर वहां अपनी खेती-बारी देखेगा। गाय बहार को टाल जंगल में छोड़ आने के लिए दो संताल मजदूरों को दस रुपये में नियुक्त किया गया।

टाल जंगल चन्द्रकान्त राय की ज़मींदारी में है। यम जंगल की तरह यह भी घना और दुर्गम जंगल है।

सीताराम चला गया तो गुमाश्ता राधिकामोहन ने आकर प्रणाम किया। मालिक का हुकुम पाकर राधिकामोहन गोलोक साह से रुपया लेने गया था।

चन्द्रकान्त ने पूछा—रुपया मिला?

—जी हां।

—खज़ाने में जमा कर दो।

—हुज़ूर, गोलोक पीरपुर वाले मकान के बारे में कह रहा था....

—हां, उसे वह घर दे दो। वह हमसे हुक्म ले गया है। घर की

चाभी उसे दे दो।

राधिकामोहन के चले जाने पर प्रसन्न चन्द्रकान्त ने आवाज़ लगाई—भजना, तम्बाकू दे और मिसिर जी को बुला।

मिसिर जी आए तो चन्द्रकान्त ने कहा—उस्ताद, एक बहार सुनाइए।

—बहार या वसन्त बहार ?

—नहीं, शुद्ध बहार।

उस्ताद जी बहार अलापने लगे। आलाप के पहले उन्होंने चन्द्रकान्त से कहा—बहार राग सम्पूर्ण जाति का है, बस नी कोमल लगता है और यही उसके ठाठ की विशेषता है। विवादी कुछ नहीं है; यानी मध्यम सम्वादी।

चन्द्रकान्त खूब मन लगाकर बहार राग अपनाने लगे।

**सब वन में कैसे सोहे ऋतुराज दिन आयो**
**मन्द मन्द पवन बहत बहुवर्ण हुए सुमन**
**कोयल पपीहा वन में धरत नेक नेक तान**
**भ्रमर सब गुंजरत कह न जात यह लगन**

गीत के स्वर में वसंत का वर्णन मूर्तिमान् हो उठा।

उसी राग के अनुशीलन में चन्द्रकान्त का दिन बीत गया।

शाम को उग्रमोहन के आते ही उन्हें सुना दिया और इशारे से यह भी समझा दिया कि भले ही बहार नाम की गाय हाथ से बाहर हो जाए, पर बहार राग एक बार आ जाने पर फिर नहीं जाने की।

उग्रमोहन इतना समझे कि नहीं, यह कहना मुश्किल है, पर घर लौटकर उन्होंने जो कुछ किया उसे देखकर रानी वह्निदेवी आश्चर्य-चकित रह गईं।

७

जब उग्रमोहन चन्द्रकान्त के पास से लौटे तो आधी रात बीत चुकी थी। चन्द्रकान्त से बहार का आलाप सुनकर उनके सारे बदन से जैसे आग निकल रही थी। शतरंज में वे जीत गए थे, पर इससे क्या? उनका क्रोध ज़रा भी कम नहीं हुआ था। उनकी प्रिय गाय को चन्द्रकान्त ने ही षड्यन्त्र करके हटा दिया, इसमें उनको तनिक भी संदेह नहीं था। बहार को चुराकर बहार राग का आलाप सुनाने में जो व्यंग्य छिपा हुआ था, उसे बर्दाश्त करना उग्रमोहन के लिए बहुत ही कठिन हो गया। दिन भर थके-मांदे होने के कारण जब वे बैठक में पहुंचे तो उनका मन कड़वा हो चुका था।

मृण्मय ठाकुर के घर से लौटते समय आकाश में चन्द्रमा के पास स्वाती नक्षत्र देखकर उनके मन में जिस कोमलता का संचार हुआ था, उसीके कारण आवेश में आकर उन्होंने चाबुक लगाकर घोड़े को तेज़ किया था। अब चन्द्रकान्त के सम्पर्क में आकर वह सारी कोमलता जाती रही थी। भयंकर क्रोध के कारण उनका हृदय भभक रहा था। चन्द्रकान्त को और उनके सम्पर्क वालों को चोट पहुंचाने में ही उनके मन को शान्ति मिलती, उनके हृदय की हालत ऐसी ही हो रही थी। घर लौटते ही उनके खास खानसामा ब्रज ने आकर बताया कि भीतर से रानी मां कई बार आपके बारे में पूछवा चुकी हैं।

उग्रमोहन बिना उत्तर दिए सीधे भीतर पहुंचे। उन्होंने देखा, रानी वह्निकुमारी उनकी प्रतीक्षा में बैठी इसराज बजा रही है। सामने आग

जल रही थी। इसराज देखकर उग्रमोहन के सारे शरीर में जैसे आग लग गई, पर वे कुछ बोले नहीं, उनकी भौंहें चढ़ गईं।

वह्निकुमारी ने इसराज हटा दिया और मुस्कराकर बोलीं—आज ऋतुसंहार याद आ रहा था—प्रियजन रहितानां चित्तसन्तापहेतुः—कहां थे इतनी देर?

उग्रमोहन ने कोई उत्तर नहीं दिया। साफा उतारकर रख दिया और वह्निकुमारी के सामने बैठ गए। इसराज की तरफ बार-बार उनकी दृष्टि जाते देखकर वह्निकुमारी ने कहा—बहुत दिनों बाद आज मैं देश बजा रही थी, सुनोगे? बोल है :

**बैरन कोयलिया कुहुक घरी-घरी कुहुक।**

यह कहकर वह बाजे को लेकर बजाने को हुई कि उग्रमोहन ने कहा—ज़रा देखूं तुम्हारा साज!

वह्निकुमारी ने इसराज उग्रमोहन के हाथ में दिया ही था कि उन्होंने बिना कुछ बोले उठकर उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया। फिर संक्षेप में बोले—मैं आज नीचे के कमरे में सोऊंगा!

वह्निकुमारी कुछ नहीं बोली, केवल देखती ही रह गई। वही अपलक भाषामयी चितवन।

उग्रमोहन फिर से बोले—गाना तो चिड़ियां गाती हैं, मनुष्य नहीं!

वह्निकुमारी ने इसका कोई ज़वाब नहीं दिया, पर बोलीं—तुम्हारे गाने में बड़ा ज़ोर है!

उसकी आंखों में व्यंग्यभरी बिजली कौंध गई।

उग्रमोहन नीचे चले गए।

वह्निकुमारी ने मुस्कराकर दरवाज़ा बन्द कर लिया।

उग्रमोहन नीचे उतरकर अपने शयनकक्ष में पहुंचे, पर सो नहीं सके। भीतर से दरवाज़ा लगाकर वे चहलकदमी करने लगे। उनके मन में एक ही चिन्ता थी। चन्द्रकान्त को कैसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाए?

सुनसान अंधेरी रात में अपने एकान्त शयनकक्ष में उग्रमोहन चहल-

कदमी करने लगे, करते ही रहे। कितने ही विचार आए, गए। चन्द्रकान्त को सबक देना क्या इतना मुश्किल है? उस दिन चन्द्रकान्त ने पोखरे का लगान लुटवा लिया। चन्द्रकान्त क्या समझते हैं कि उग्रमोहन वैसा नहीं कर सकते? फिर लूटी हुई मछलियां भेजवा दीं। उसी दिन उग्रमोहन का मन हुआ था कि वे चन्द्रकान्त के सारे तालाबों का नाश कर दें पर जाने क्यों यह प्रवृत्ति देर तक नहीं रही। शायद इसलिए कि रात को छिपकर लूट मचाने को वे चोरी मानते थे। उग्रमोहन सिंह और जो भी हों, पर तस्कर कदापि नहीं हैं। अगर किसीका कुछ छीनना ही हो तो अंधेरे में घात लगाकर लूट लेने में पौरुष नहीं है। अगर लेना ही है तो दिन-दहाड़े छीनने में कुछ वीरता तो है। यही बात वे चन्द्रकान्त को समझाना चाहते थे, पर रुमनी-झुमनी के मामले में उन्हें इतना व्यस्त रहना पड़ा कि इधर ध्यान देने का अवसर ही नहीं मिला था। पर आज बहार को चुराना और ऊपर से बहार राग के आलाप ने उनके शरीर में आग लगा दी थी। इसका तुर्की-बतुर्की जवाब न दिया जा सका तो उग्रमोहन शायद पागल हो जाएंगे।

क्या किया जाए? उग्रमोहन गहरी चिन्ता में पड़ गए। चंचल होकर ज़ोर-ज़ोर से चहलकदमी करने लगे। क्या करें, कुछ समझ नहीं पा रहे थे। घुड़साल से चन्द्रकान्त के घोड़े गायब करवा दें, यह इच्छा मन में आते ही उग्रमोहन का हृदय ठिठक गया। छिः घोड़े की चोरी! चन्द्रकान्त गाय की चोरी कर सकते हैं, पर उग्रमोहन सिंह और ही धातु के बने हुए हैं।

वह चहलकदमी करते हुए एकाएक रुक गए। जैसे बिजली का झटका लगा हो।

अरे, यह बात अब तक याद ही नहीं आई थी। उन्होंने जल्दी से सामने की मेज़ की दराज़ खोली और चाभियों का एक गुच्छा निकाल लिया। रोशनी के पास जाकर गुच्छे से जंग लगी हुई एक चाभी निकाल-कर बाहर निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर ही एक लम्बे-तड़ंगे लट्ठधारी

व्यक्ति ने आकर ज़मीन छूकर उग्रमोहन को प्रणाम किया। यह हवेली का पहरेदार था। उग्रमोहन उसपर बिना निगाह डाले ही सीधे अन्दर महल की ड्योढ़ी पार करके खज़ाने की ओर बढ़ गए। वहां भी दरवाज़े पर एक वर्दीधारी पहरेदार था। असमय में मालिक को देखकर वह प्रणाम करके अलग हटकर खड़ा हो गया। खज़ाने का दरवाज़ा खोलकर उग्रमोहन भीतर चले गए। अन्दर घोर अन्धकार था। उन्होंने फिर से बाहर निकलकर पहरेदार को एक बत्ती लाने का हुक्म दिया। बत्ती आ जाने पर उन्होंने भीतर से दरवाज़ा लगा लिया। पहरेदार ताज्जुब से मालिक के इस काम को आंख फाड़कर देखता रहा। टन् से एक का घंटा बजा।

उग्रमोहन ने अन्दर जाकर लोहे की तिजोरी खाली। उसमें से एक बड़ा-सा कैशबक्स निकालकर पास ही तख्त पर रखा। फिर उसे खोल-कर भीतर से एक छोटी-सी चांदी की सन्दूकची निकाली। उसमें से एक कागज़ निकालकर उग्रमोहन सिंह उत्सुकता के साथ उसे पढ़ने लगे। कागज़ गुलाबी रंग का था। पढ़ते समय उनका मन पलभर में दस साल पार करके अतीत में पहुंच गया। वे दिन थे जब चन्द्रकान्त और उग्रमोहन ने जवानी की चौखट पर पैर रखे ही थे। चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते उग्रमोहन ने जैसे रेशम को अपने सामने पाया। आज उग्रमोहन सिंह रेशम को ज़रूर भूल गए हैं, पर किसी दिन उनका सारा अस्तित्व इस रेशमा के सपनों में डूबा हुआ था।

चिट्ठी को शुरू से आखीर तक पढ़कर उग्रमोहन का सारा मुखमण्डल खिल उठा। बड़ी सावधानी से पत्र को मिर्जई की जेब में रखकर उन्होंने चांदी की सन्दूकची फिर कैशबक्स में रखी और कैशबक्स को तिजोरी में रखकर उसे बन्द कर दिया, फिर खज़ाने के दरवाज़े में ताला लगा दिया, और अपने शयनकक्ष में लौट आए। किसी अज्ञात फूल की सुगन्ध लेकर जाड़े की तीखी बयार तब अंधेरे में कृष्णचूड़ा की शाखा-प्रशाखा को छू-कर व्याकुल हो उठी।

उग्रमोहन अपने कमरे में लौटे, पर अब वे दूसरे उग्रमोहन थे। उनके यौवन के प्रारम्भिक दिनों की प्रिया रेशम भी जैसे उनके साथ-साथ लौट आई है। उस दिन के सारे स्वप्न भी जैसे लौट आए हों। प्रथम यौवन के वासंती कुंज में कोयल कुहुक उठी।

रात्रि की उस गहराई में उग्रमोहन के मानस-पटल पर छायाचित्रों की भांति एक के बाद एक कितने ही चित्र उभरते गए। कौन कहता है कि अतीत मर जाता है? अतीत तो चिरजीवी है। अतीत के प्राण रस की अमृतधारा पीकर नित्य परिवर्तनशील क्षणभंगुर वर्तमान जी रहा है। परिवर्तन की मांग मिटाने में ही वर्तमान मरणासन्न है। स्मृति की सुधा पीकर अतीत अमर हो गया, फिर उसकी मृत्यु कहां है?

उग्रमोहन बैठकर सोचने लगे, क्या रेशम आज भी जीवित है? वर्तमान में रेशम नाम से शायद कोई जीवित नहीं हो, पर अतीत की रेशम अवश्य जीवित है। हंसते वक्त उसके गाल में जो गड्ढे पड़ जाते थे, वे भी तो अभी तक जीवित हैं। विदाई के दिन रेशम रो पड़ी थी, उसके आंसू अब भी गीले हैं। उसकी लीलामयी नृत्य-मुद्रा का नूपुर-गुंजन आज भी उग्रमोहन के अन्तर्लोक में पेंग ले रहा है। उग्रमोहन ने विस्मित होकर देखा, विभिन्न वेश-भूषा में, विभिन्न रूपों में, भिन्न-भिन्न मुद्राओं में रेशम बाई उनके हृदय के अनजान गोशे में छिपी हुई थी। मानो एकाएक जादू के बल से वर्तमान की यवनिका हट गई हो और रेशम बाई सामने आ खड़ी हुई हो। चेहरे पर मृदु मुस्कान सारे बदन पर लहराता हुआ दुपट्टा, बड़ी-बड़ी सुर्मई आंखों में उसी रहस्य का आभास, अंग-अंग में नृत्यचंचलता से भरपूर लीलामयता! मुग्ध होकर उग्रमोहन देखते ही रह गए। याद आया, गहरी रात में घोड़े पर सवार होकर व्यग्र अभिसार करना, फिर सूर्योदय के पहले छिपकर लौट आना।

पर रेशम नहीं रही। उग्रमोहन की सारी कल्पनाओं और सपनों को व्यर्थ करके रेशम चली गई थी, इसीलिए चली गई थी कि उसने प्यार किया था। युगों की बात आज फिर लौटी है। उग्रमोहन निष्पलक

दृष्टि से गुलाबी कागज़ की ओर देखते ही रह गए। एक मृदु मुस्कान उनके होंठों पर खेल गई। सच्चरित्र चन्द्रकांत के चरित्र-सौरभ से आज भी लोग पुलकित हैं।

विदाई के दिन रेशम यह पत्र उग्रमोहन को दे गई थी। उसके हाथों का स्पर्श मानो आज भी इसमें ताज़ा हो। रेशम की विनती से भरी आंखें याद आईं—इस विषय को लेकर तुम दोनों लड़ाई मत करना, यह मेरा अनुरोध है।—कहकर उसने यह पत्र उग्रमोहन के हाथों में थमा दिया था। चन्द्रकांत का पत्र उर्दू में लिखा हुआ था—प्रेमपत्र था। खुशबूदार गुलाबी कागज़ पर शायराना ढंग और कवित्वपूर्ण भाषा में चन्द्रकांत ने उच्छ्वसित हृदय से रेशम को अपना प्रेम-निवेदन किया था। पत्र में एक फारसी शेर भी उद्धृत किया गया था।

चन्द्रकांत ने लिखा था :

हे सुन्दरी, चमन में जो गुलाब खिलता है, क्या वह एक ही भौंरे के लिए होता ? क्या ईश्वर पूनो की अनोखी चांदनी का सृजन एक ही चकोर के लिए करता है ? अगर ऐसा ही होता तो विरही भौरों की गरम आहों से गुलाब मुरझा जाता। चंद्रमा हताश चकोरों के विरह के काले बादलों की ओट में खो जाता। जो भी अनोखी और असाधारण वस्तु होती है, वह सबके लिए होती है, किसी एक के लिए नहीं। मेरे दिल का प्याला लबरेज़ है, उसे ज्यों का त्यों तुम्हारे चरणों में उड़ेले बिना मुझे चैन नहीं। तुम आ जाओ। तुम्हारे लिए उन्मुख आग्रह से बैठा हूं। सम्राट् शाहजहां का कहा हुआ एक शेर याद आ रहा है :

**अगर बे-खबर-मौ-ज़ूद दरे आये चे शोएयाद ?**
**मानन्द-ए-नसीमए सहर आये चे शोएयाद ?**
**हरचन्द कि बू-ए-गुल ज़ेगुल आएद पेश,**
**जारे-गुल तू ज़े-बू पेशतर आये चे शोएयाद ?**

तुम सुबह की बयार जैसी बिना संदेश भेजे ही आ जाओ। फूल की

खुशबू फूल से पहले ही पहुंचती है, अगर फूल ही पहले पहुंच जाए तो हर्ज़ क्या है ?

विदाई के क्षणों में रेशम की आंखों में जो आंसू झलमला रहे थे आज भी उसे उग्रमोहन स्पष्ट देख रहे थे। चन्द्रकांत का पत्र पाते ही रेशम चली गई थी और फिर नहीं लौटी। रेशम के विरह से उग्रमोहन के लिए दसों दिशाओं में अंधेरा छा गया था। उस दिन यह चिट्ठी लेकर चंद्रकांत से विवाद करने की प्रवृत्ति नहीं हुई थी, फिर दस साल में काल का प्रवाह चलता रहा। कितनी ही भवरें पड़ीं और कितनी चीजें खो गईं, उग्रमोहन रेशम को भूल गए।

चंद्रकांत का यह पत्र इतने दिन से उग्रमोहन के पास ही सावधानी से रखा हुआ था। आज एकाएक उग्रमोहन को इसकी याद आई। अब उन्होंने उससे काम निकालने का निश्चय कर लिया। पत्र को प्रकट करने से चन्द्रकांत के सम्मान को काफी ठेस पहुंच सकती थी, पर उग्रमोहन सिंह सिंह है, स्यार नहीं ! वह तुरन्त चिट्ठी लिखने बैठ गए। उन्होंने लिखा :

भाई चन्द्रकांत,

तुमने किसी दिन रेशम को जो प्रेम-पत्र लिखा था, वह इतने दिनों से मेरे पास ही पड़ा था। पुराना बक्स खोलकर आज उसे निकाला। दस साल पहले इसे लेकर मैंने और रेशम ने कितना हंसी-मज़ाक किया था ! अब इसमें हंसने को कुछ भी नहीं रह गया है, इसके अलावा तुम्हारे उच्छ्वासों का उचित स्थान तुम्हारा ही बक्स हो सकता है।

उग्रमोहन

उन्होंने चिट्ठी पर सील-मोहर करके पहरेदार को थमाकर हुक्म दिया—सुबह होते ही पत्र चन्द्रकांत बाबू को मिल जाना चाहिए।

इसके बाद उग्रमोहन थोड़ी देर अनमने होकर सामने के बगीचे में टहलते रहे। उन्हें रेशम की बातें, रेशम का चेहरा, रेशम की मुद्राएं बार-बार याद पड़ने लगीं। कितनी ही बातें याद आईं। फिर रेशम का पता नहीं लगा।

कलकत्ते में एक माह प्रवास की बात याद करके उग्रमोहन का सारा बदन घृणा से सिहर उठा। वे अड़बंगे ढंग से कितनी ही बातें सोचने लगे।

बहुत देर तक अकेले टहलने के बाद जब वे सोने के लिए जा रहे थे, तब उन्होंने आश्चर्यचकित होकर देखा कि उनके सारे हृदय पर अधिकार करके जो बैठी है, वह रेशम नहीं थी, वह थी रानी वह्निकुमारी। उनकी दोनों उज्ज्वल आंखों में हास्यमिश्रित कौतुक की दीप्ति थी।

आसमान की तरफ देखा तो चांद डूबने को था, स्वाती पास ही मौजूद थी।

दूसरे दिन भोर में जब वृद्ध ब्रजलाल मालिक को जगाने आया तो देखा कि उग्रमोहन गहरी नींद में सो रहे हैं और उनके बिस्तर के पास एक टूटा हुआ इसराज रखा है।

उसने मालिक को जगाने का साहस नहीं किया।

# ८

दिन के दस बजे उग्रमोहन आकर कचहरी में बैठे। वे प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे। दो असामियों का लगान माफ कर चुके थे। तीसरा अपनी दर्दभरी कहानी सुना रहा था। मालिक भी सहानुभूति के साथ सुन रहे थे। वह बोल रहा था, जल्दी ही मेरी बेटी की शादी है, हाथ में पैसे नहीं हैं, फसल भी अच्छी नहीं है, इसके अलावा बाजार ऐसा मन्दा है कि सोलहो आना फसल होने पर भी किसी तरह पेट भरता है। इस हालत में हुजूर की मेहरबानी न हुई तो मैं मर जाऊंगा।

उग्रमोहन नली से एक छोटा-सा कश खींचकर बोले—तेरी बेटी की शादी किस दिन है ?

—अब दिन कहां हैं हुजूर ?

—मुझे न्योता नहीं देगा ?

गरीब असामी कुछ सिटपिटा गया। न कहने का भी साहस नहीं हुआ पर उग्रमोहन सिंह को न्योता देकर खाने को क्या देगा, कहां बैठाएगा, यह तो वह सोच ही नहीं पाया। फिर भी हिम्मत बांधकर बोला—गरीब की झोंपड़ी में मालिक के पैरों की धूल पड़े तो मेरी चौदह पीढ़ियां तर जाएं। न्योता ज़रूर दूंगा सरकार और दूंगा क्या अभी दे रहा हूं। गरीब पर कृपा करके पधारिएगा।

—किस तारीख को शादी है ?

—२३ माघ को हुजूर।

तारीख सुनते ही उन्हें रुमनी-झुमनी की याद आ गई। दीवान जी

को बुलाकर उग्रमोहन बोले—दीवान जी, गंगागोविन्द घर पर हैं या नहीं ? ज़रा पता लगाइए ।

फिर असामी की तरफ घूमकर बोले—अच्छा, तेरा लगान माफ़ हो गया। बकिया भी देना नहीं पड़ेगा। हाल का जो बाकी है, वह जमा कर दोगे तो फारिक हो जाओगे ।

फिर उन्होंने पुकारा—अक्षय !

गुमाश्ता अक्षय आकर खड़ा हो गया। उग्रमोहन बोले—इसकी बेटी के व्याह के दिन आधा मन दही और आधा मन मछली इसके घर भिजवा देना। साथ ही एक जोड़ी शंख की अच्छी चूड़ियां, चांदी का सिंदूरदान, एक अच्छी-सी साड़ी और धान, दूब भी भेज देना। पहले से बताए दे रहा हूं। हो सकता है कि मैं काम-काज में बाद को भूल जाऊं।

इसी समय चन्द्रकान्त का एक सिपाही आया। उसने सलाम करके एक पत्र निकालकर उग्रमोहन के हाथ में दिया। पत्र खोलकर उन्होंने पढ़ा, लिखा था :

मित्र !

तुम्हारा पत्र पाकर बड़ी खुशी हुई। तुममें इतना सूक्ष्म रसबोध अब भी है, इससे सचमुच ही मैं पुलकित हो गया हूं। थोड़े ही दिनों में सितारी मीर साहब आने वाले हैं। सोच रहा हूं, लखनऊ से एक अच्छी बाई जी भी बुलवाऊंगा। पुराने प्रसंग को फिर उठाने का इरादा है क्या ? हां, उस बार कलकत्ता जाकर तुमने शायद कुछ रक्तदोष का इलाज करवाया था ? आश्चर्य की बात है कि तुम्हारे वे नुस्खे न जाने कैसे हमारे बक्से में रह गए थे। उनका तुम्हारे पास ही रहना ठीक है, यह सोचकर इन्हें भेज रहा हूं।

चन्द्रकान्त

पत्र पढ़ते ही उग्रमोहन का चेहरा पीला पड़ गया। पर उन्होंने अपने को सम्हाल लिया और मुस्कराकर सिपाही से बोले—ठीक है, जा सकते हो। बाबू जी से मेरा सलाम कह देना।

सम्हलकर बोले तो, पर वे उठ खड़े हुए। आत्मसंयम करके वहां अधिक देर तक बैठे रहना असम्भव हो गया। वे उठकर खास कमरे में चले आए।

क्रोध और क्षोभ से उनका हृदय उबलने लगा।

उन्हें कलकत्ता-यात्रा की बात याद आई। यौवन के उन्माद, रेशम के विरह, शायद और···ना, इतने अर्से के बाद कार्य-कारण की परंपरा को ठीक से बैठाने के लायक मानसिक अवस्था नहीं रह गई थी। उनके मन में कलकत्ता की वीभत्स स्मृति संड़ाध भरे कीचड़ की तरह बुज-बुजाने लगी। केवल कीचड़ ही था, कमल कहीं नहीं। असह्य और ग्लानिजनक गंदगी। उन्मत्त आवेग से उग्रमोहन ने एक दिन उसी गंदगी में डुबकी लगाई थी और उसका फल भी उन्हें चखना पड़ा था। दक्षिणा में काफी मोटी रकम देकर प्रायश्चित्त भी करना पड़ा था। उसके लिए आज तक उनके मन में कोई क्षोभ नहीं था। दुर्दान्त यौवन की भूख मिटाने के लिए उन्होंने जो काम किया था, उसमें न तो अपुरुषोचित कुछ था न कापुरुषोचित कुछ। जब पहले पहल घुड़सवारी सीख रहे थे तब भी तो कई बार गिरे और चोट खाई थी। जंगली सुअर का शिकार करने जाकर एक बार भ्रमवश उन्होंने एक आदमी को ही गोली मार दी थी। कलकत्ता-प्रवास का दुष्कर्म भी इन्हीं जैसी घटना थी।

पर आज एकाएक वे नुस्खे चन्द्रकान्त से पाकर उनके बदन में आग-सी लग गई। ये चन्द्रकान्त को कैसे मिल गए? निष्फल क्रोध के कारण उत्तेजित उग्रमोहन हांफने लगे। ऐन मौके पर धीमी आवाज़ के साथ कोई दरवाज़े पर खड़ा हो गया। उग्रमोहन नें पूछा :

—कौन ?

—मैं हूं सरकार !—एक ठिगना-सा आदमी दरवाज़े पर दिखाई पड़ा। उसने बड़े आदर के साथ उग्रमोहन को प्रणाम किया।

—ओह ! मानिक मंडल ? क्या हाल है ? आओ, आओ अन्दर आ जाओ।

मानिक मंडल पर उग्रमोहन ज़रा कृपादृष्टि रखते थे। उसका कुछ कारण भी था। मानिक मंडल उनका गुप्तचर था, जिसे अंग्रेज़ी में स्पाई कहते हैं। पर यह खबर और किसीको मालूम नहीं थी।

उग्रमोहन ने पूछा—कोई नई खबर है क्या ?

मानिक मंडल की तुलना अगर किसी जानवर से की जाए तो यह एक चूहे के साथ की जा सकती है। छोटा-सा नुकीला मुंह, बहुत छोटी नाक, पर तीखी; आंखें भी बहुत छोटी, पर बहुत ही चंचल। उग्रमोहन की बात सुनकर वह ऊपर के पीले दांत दिखाते हुए बोला—क्या नई खबर हुज़ूर के कान तक अभी नहीं पहुंची ? मैं इन दिनों कुछ बीमार था शायद इसलिए....

अधीर होकर उग्रमोहन ने कहा--भूमिका न बांधो। सीधे-सीधे बताओ, खबर क्या है ?

—गोलोक साह चन्द्रकान्त बाबू की ज़मींदारी में जा बसा।

—अच्छा ? चन्द्रकान्त को रुपये कर्ज़ दिया है ? कुछ मालूम है ?

—जी हां, जानता हूं। राधिकामोहन आकर रुपये ले गया, यह खबर भी मुझे मिली है।

—गोलोक साह इस समय कहां रहता है ?

—पीरपुर। चन्द्रकान्त बाबू का ही एक मकान है।

—राखाल बाबू !—उग्रमोहन गरज उठे।

स्थिति देखकर मानिक मंडल बात पूरी किए बिना ही जल्दी से खिसक गया। राखाल बाबू के आने पर उग्रमोहन ने पूछा—यम जंगल में अभी कितने सिपाही मौजूद हैं ?

—पचास।

—यहां कितने हैं ?

—पचासेक ही होंगे हुज़ूर।

—दूधनाथ पांडे को बुला दीजिए।

राखाल बाबू चले गए। उग्रमोहन आंखें मूंदकर कुछ सोचते रहे।

दूधनाथ पाडे आकर सलाम करके खड़ा हो गया। उग्रमोहन ने हुक्म दिया—कल सवेरे बीस या पचीस सिपाही लेकर चन्द्रकान्त बाबू के बाघाड़ तालाब का लगान लूटना पड़ेगा। खून-खच्चर की परवाह मत करो। ज़रूरत पड़े तो झगड़ा मोल लो और फौजदारी करो। मुद्दा यह है कि कल बाघाड़ तालाब में खून की लहरें उठें।

—जो हुक्म।—कहकर दूधनाथ पांडे चल पड़ा। उसका एक हाथ गायब था। ज़मींदारी के झगड़े में थोड़े ही दिन पहले चन्द्रकान्त के साथ उग्रमोहन का एक भारी दंगा हो गया था। उसी दंगे में दूधनाथ पांडे का दाहिना हाथ कट गया था और उसी दंगे में स्वयं उग्रमोहन एक विराट हाथी को दोनों दांतों के साथ दो लम्बे बांस बांधकर अंकुश से मार-मारकर चन्द्रकान्त के दल की ओर दौड़ाकर लड़ाई में जीत गए थे।

दूधनाथ पांडे के चले जाने पर उग्रमोहन ने अपना घोड़ा तैयार करने का हुक्म दिया और अन्दर महल में चले गए।

# ९

अदरक के व्यापारी को जहाज़ की खबर रखना जितनी हास्यकर है, जहाज़ के व्यापारियों के लिए अदरक की खबर रखना उतनी हास्यकर नहीं। पर किसी-किसीको शायद इसीपर ताज्जुब होता है। बड़े-बड़े जहाज़ लेकर कारबार करने वाले को अदरक जैसी छोटी चीज़ में जानकारी देखकर हम स्वाभाविक रूप से उसकी प्रतिभा का सर्वतोमुखी प्रसार देखकर मुग्ध और विस्मित होते हैं।

भुने चावल खाने में कोई विशेषता नहीं है, पर अगर हम सुनें कि फलाना महाराजाधिराज भुने चावल बड़े चाव से खाते हैं या अमेरिका के फलाने करोड़पति पालिश करके जूते चमका सकते हैं, तो हम मुग्ध हो जाते हैं।

ज़मींदार उग्रमोहन सिंह की विस्तृत ज़मीदारी के चतुर मैनेजर अघोर बाबू को रुमनी-झुमनी के साथ बच्चों जैसी आंख-मिचौनी खेलते देखकर लोग विस्मित हो सकते हैं।

शायद अघोर बाबू स्वयं भी नहीं जानते थे कि शिशु के मनोविश्लेषण में उनकी इतनी जानकारी थी, पर क्षेत्रे कर्म विधीयते नीति को मानकर बालिकाओं के मनोरंजन में पूरी तरह जुट गए। और उन्होंने यह आविष्कार किया कि पेचीदे मुकदमे को जीतने के लिए जिस प्रकार का बुद्धि-कौशल चाहिए, शिशु-हृदय को जीतने के लिए उस प्रकार के कौशल की ज़रूरत भले ही न हो फिर भी इसमें कुछ कौशल की ज़रूरत है। हां, वह कौशल कुछ और ढंग का होगा। फलस्वरूप आंखमिचौनी, लुका-

छिपी आदि खेलों का सहारा लेना पड़ा और इसमें उन्हें सफलता भी मिली। रुमनी-झुमनी अघोर बाबू को लेकर सारे दिन खेल में मशगूल रहतीं।

अघोर बाबू के आयोजनों में कोई कमी नहीं थी। सामने के बड़े-बड़े तीन पेड़ों पर तीन झूले डाले गए हैं। रुमनी-झुमनी और अघोर बाबू होड़ लगाकर खूब झूलते हैं। कहीं से एक बन्दर का बच्चा भी ढूंढ़ लाया है, उसे नीम के पेड़ की जड़ में जंजीर से बांध रखा गया है। इस जीव का तरह-तरह से मुंह बनाना-बिचकाना रुमनी-झुमनी के लिए बड़े कौतुक की वस्तु है। खरहा तो पहले से ही था। उसके लिए एक नया पिंजड़ा भी तैयार हो गया है। दो जोड़ी कबूतर भी हैं। उनकी गुटुर-गूं से कचहरी का आंगन गूंजता रहता है।

अघोर बाबू को देखने से कभी यह पता नहीं चला था कि उनके मन में भी इतनी कोमल वृत्तियां छिपी थीं। रंग काला भुजंग है, मुंह लम्बा-सा, एकाएक देखने से मालूम होता है कि जैसे पत्थर के बनाए हुए हों, चेहरा एकदम अभिव्यक्तिहीन, इसपर मन की कोई छाप नहीं है। उसपर तांबे के रंग की लटकती हुई मूछों से उनका चेहरा आपात दृष्टि से और भी भयानक और अरसिक लगता है। अघोर बाबू तांत्रिक हैं और काली की साधना करते हैं। अब भी कभी-कभी जाकर वह चामा प्रान्तर के महाकाली के मन्दिर में अमावस्या के दिन पूजा करते हैं। यह सब तो हुआ, पर वे इतनी अच्छी तरह मुर्गे की बोली की नकल उतार सकते हैं, यह आज तक किसीको भी मालूम नहीं था। केवल यही नहीं, चादर ओढ़कर कुत्ता-बिल्ली की लड़ाई भी वे बहुत अच्छी तरह दिखा सकते हैं। उसे देखकर रुमनी और झुमनी के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

पर इतना होने पर भी रुमनी-झुमनी बीच-बीच में अघोर बाबू से पूछती हैं—हम पिता जी के पास कब जाएंगी।

झूठी तसल्ली देने में भी अघोर बाबू एक ही हैं। इसीलिए बुरे नहीं

बीत रहे थे। इस प्रकार अजस्र आमोद-प्रमोद रुमनी-झुमनी के जीवन में पहली बार ही मिला था।

उस दिन सवेरे मगरमच्छ का खेल हो रहा था। अघोर बाबू आंगन के बीचोंबीच घुटनों के बल मगर बनकर बैठे थे। आंख अधमुंदी थी। रुमनी-झुमनी आंगन में ही एक ऊंचे चबूतरे को नदी का किनारा मानकर उसपर खड़ी थीं और मौका पाते ही मगर रूपधारी अघोर बाबू को खोंचकर भाग जाती थीं। अघोर बाबू भी उन्हें न पकड़ पाने का ढोंग रचकर बनावटी गुस्से से हों-हों करके गरजते थे। उन्हें देखकर रुमनी-झुमनी हंसी से लोट-पोट हुई जाती थीं। खेल खूब जम गया था। ऐसे ही समय में भीखन तिवारी ने आकर खबर दी—पिंजड़ा खुला था, खरहा निकल भागा।

एकाएक ऐसे विषाद का समाचार सुनकर तीनों स्तब्ध रह गए। अघोर बाबू ने ऐसा मुंह बनाया मानो ज़मींदारी का एक मौजा ही बेदखल हो गया हो। तीनों जल्दी-जल्दी पिंजड़े के पास पहुंचे और आसपास ढूंढ़ने लगे।

सहसा रुमनी बोल उठी—यह बक्से के पीछे तो छिपा है, हाय, फिर भाग गया।

खरहा घर छोड़कर आंगन में उतर आया और सीधे दौड़ पड़ा। अघोर बाबू, भीखन तिवारी और रुमनी-झुमनी खरहा के पीछे दौड़ते हुए झाड़ी में घुस गए। थोड़ी देर ढूंढ़ने के बाद भीखन तिवारी ने अपनी राय दी कि उस खरहे को खोज निकालना आदमी के वश का नहीं, इसलिए कोशिश बेकार है। इससे बेहतर तो यह होगा कि मंगलू मांझी को खबर देकर मालकिनों के लिए दूसरा खरहा मंगवा लिया जाए। इस जंगल में खरहों की कमी नहीं है।

उसने अघोर बाबू से हुक्म मांगा कि उसे रसोई में जाना चाहिए क्योंकि भात का अदहन चढ़ाकर आया है। अघोर बाबू राज़ी हो गए। भीखन तिवारी के चले जाने के बाद रुमनी बोली—जाने दो उसे, चलो

हम लोग फिर से ढूंढ़े ।

झुमनी ने तुरन्त उसका समर्थन किया और कहा—वह जरूर इधर ही कहीं है । इतना छोटा-सा खरहे का बच्चा कहां तक भाग सकता है ? जरूर थककर कहीं झाड़-झंखाड़ में छिपा हुआ है ।

अघोर बाबू ने इसका प्रतिवाद नहीं किया । उन्होंने कहा—ठीक कहती हो रानी बेटी और ज़रा ढूंढ़ लिया जाए ।—उन्हें शायद मगरमच्छ बनकर घुटनों के बल बैठे रहने से यह काम कुछ आसान मालूम हुआ । वह इधर-उधर घूमते-घामते जंगल के घने हिस्से में भी आ पहुंचे । घना जगल निर्जन था, पर कुछ आवाज़ें इधर-उधर से सुनाई दे रही थीं । जंगल की अपनी एक खास आवाज़ होती है । इसके अलावा बहुत किस्म की चिड़ियों की बोली भी है । घुग घुग घुग··· किसी अज्ञात नाम पक्षी की आवाज़ निरन्तर गूंज रही थी और उसीकी ताल पर और कोई अज्ञात पक्षी दूसरे स्वर में क्रकट्-क्रकट् की आवाज़ कर रहा था । जंगल से कुछ खुली जगह पर आते ही उन्होंने देखा कि जल्दी से पंछियों का एक जोड़ा पास की ही एक झाड़ी में अदृश्य हो गया ।

अघोर बाबू ने कहा—तीतर की जोड़ी है ।

एकाएक झुमनी बोल उठी—देखो कैसा सुन्दर फूल है ।

रुमनी भी मुग्ध स्वर से बोली—सचमुच, यह कौन-सा फूल है !

अघोर बाबू ने कहा—कोई जंगली फूल है ।

एक बड़े-से बूढ़े-से पेड़ पर साहसिक परोपजीवी बेल चढ़ी थी और वह सुन्दर फूल के गुच्छे खिलाकर हंस रही थी । लगता था मानो बूढ़े बाबा के कन्धे पर चढ़कर एक अलंकृता नातिन खुशी से इतरा रही हो ।

—वहां पर वह सफेद-सी क्या चीज़ है ?

असल में सफेदी किए हुए किसी घर की दीवार का एक हिस्सा दिखाई पड़ रहा था । रुमनी ने पूछा—वह क्या है दादा ?

—यम घर है—कहकर अघोर बाबू फिर बोले—ऐसे ही एक मामूली-सा कमरा है । जंगल में बना है, कोई ऐसी बात नहीं । चलो,

अब लौट चलें।

रुमनी बोली—चलो न, उसे ज़रा देख लें।

झुमनी बोली—हां, चला जाए।

अघोर बाबू ने मन में सोचा कि अब गए। पर मुंह से बोले—चलो, पर उसमें देखने को धरा क्या है। उससे अच्छा तो यही है कि हम लोग लौटकर फिर से मगर-मगर खेल खेलें।

पर रुमनी-झुमनी छोड़ने वाली नहीं थीं। यह कमरा उन्हें दिखाना ही पड़ा।

सचमुच ही उसमें देखने लायक कुछ भी नहीं था। विशेषता बस यही थी कि चारों ओर दीवार घिरी थी। दीवार काफी ऊंची थी और एक ही लोहे का दरवाज़ा था। उसमें ताला बन्द था। खिड़की एक भी नहीं थी।

रुमनी ने पूछा—यहां क्या होता है?

—कुछ नहीं, तुम्हारे नानाजी का शौक था।

इस घने जंगल के इस कमरे का इतिहास अघोर बाबू ने गुप्त रखा। स्वयं उग्रमोहन सिंह, अघोर बाबू और भीखन तिवारी के अलावा यम-घर का असली परिचय किसीको मालूम नहीं था। ज़मींदारी के दूसरे कर्मचारी यह समझते थे कि उसमें मालिक का शिकार खेलने का सामान रहता होगा।

जब तीनों लौट रहे थे तो भीखन तिवारी ने आकर बताया कि मृण्मय ठाकुर आए हैं और अघोर बाबू से मिलना चाहते हैं।

## १०

अघोर बाबू ने आकर मृण्मय ठाकुर को बहुत अदब से सलाम किया। इतने दिन तक मृण्मय ठाकुर ही अघोर बाबू से सलाम करते थे। कारण यह था कि अघोर बाबू ज़मींदार के महामान्य मैनेजर थे और मृण्मय ठाकुर एक सामान्य असामी मात्र। पर अब पहिया घूम गया था। उग्रमोहन बाबू की नातिनों के साथ मृण्मय ठाकुर के लड़के का विवाह होगा, फिर मृण्मय ठाकुर को एक मामूली असामी नहीं समझा जा सकता था। अघोर बाबू यह समझते थे और यह समझकर ही उन्होंने बड़े अदब के साथ सलाम किया था। पर इसके उत्तर में मृण्मय ठाकुर ने जो किया, वह इतना अप्रत्याशित था कि रुमनी-झुमनी भी मुस्करा उठीं। मृण्मय ठाकुर फौरन दौड़कर अघोर बाबू के चरणों पर गिर पड़े। और 'हाऊं-हाऊं' करके रोने लगे।

अघोर बाबू ने रुमनी-झुमनी को अन्दर भेजकर अस्त-व्यस्त होकर मृण्मय ठाकुर को दोनों हाथ पकड़कर उठाया और कहा—छिः छिः, यह आपने क्या किया?

—मुझे बचाइए मैनेजर बाबू, अब दिन कहां बाकी रहे, और कोई उपाय नहीं सूझ पड़ता।

—किस चीज़ का उपाय?

—इस व्याह से बचने का। मैं यह व्याह बिलकुल नहीं चाहता हूं अघोर बाबू! आप ही कोई तरकीब निकालकर मेरी रक्षा कीजिए।

अघोर बाबू के पत्थर जैसे निर्विकार चेहरे पर मृण्मय ठाकुर को

आशा या निराशा, किसीका भी आभास नहीं मिला।

अघोर बाबू ने बस इतना ही कहा—मालिक की जब ऐसी ही इच्छा है तो मैं क्या कर सकता हूं ? अगर जमींदारी की कोई बात होती तो शायद कुछ कर भी सकता। पर इस ब्याह-शादी में मेरी एक नहीं चलने की। आपको एतराज किस बात से है ?

मृण्मय ठाकुर सिर खुजलाने लगे। उनकी विस्फारित और अविस्फारित दोनों आंखों में आशंका की छाया देखकर अघोर बाबू ने फिर से कहा—मुझे बताने में कोई बाधा हो तो मैं सुनना नहीं चाहता, पर उग्रमोहन बाबू के साथ नाता जोड़ना किसी दृष्टि से भी अवांछनीय भी तो नहीं है।

मृण्मय ठाकुर बोले—गंगागोविन्द की वंशावली के विषय में आप जानते है ? वह स्वयं तो बहुत अच्छे आदमी हैं, पण्डित हैं, सज्जन हैं, पर कहते हैं उनके बाबा समाज में पतित हो गए थे। क्योंकि अपनी एक चरित्रहीन विधवा बेटी को उन्होंने घर में आश्रय दिया था।

अघोर बाबू का पत्थर जैसा चेहरा और भी कठिन हो गया। उन्होंने कहा—असली बात क्या है, वह बताइए, आपने यह सारी अफवाह कहां सुनी ? जानते नहीं हैं कि गंगागोविन्द उग्रमोहन बाबू के दामाद हैं ?

मृण्मय ठाकुर की विस्फारित आंखों की असहाय दृष्टि अघोर बाबू के मुंह पर जमी रही।

अघोर बाबू ने फिर पूछा—ये सब झूठी बातें आपने कहां सुनीं ?

थूक निगलकर मृण्मय ठाकुर ने कहा—उग्रमोहन बाबू को मत बताइएगा। पृथ्वीशपुर के कालीपद पुरोहित ने मुझे बताया है। वे इधर के बुजुर्गों में हैं। उनकी बात पर अविश्वास कैसे करें ?

मृण्मय ठाकुर की बात खतम नहीं हो पाई थी कि अघोर बाबू ने कहा—आप बैठिए—फिर हांक लगाई—भीखन तिवारी !

भीखन तिवारी आ गया। अघोर बाबू ने हुक्म दिया कि अभी चार सिपाही पृथ्वीशपुर भेजकर कालीपद पुरोहित को यहां बुलवाने का

इन्तज़ाम कर दो।

मृण्मय ठाकुर यह सोच भी नहीं सके थे कि बात इतनी बढ़ जाएगी। उन्होंने जल्दी से अघोर बाबू का हाथ पकड़ लिया और बोले—असमय में पुरोहित जी को क्यों कष्ट देंगे। पूरी बात तो सुन लीजिए।

पलकहीन आंखों से मृण्मय को देखते हुए धीर स्वर में अघोर बाबू ने कहा—आप जहरीले नाग के साथ खेल रहे हैं, ज़रा समझ-बूझकर चलिएगा।

इस बार मृण्मय ठाकुर ने अपनी आखिरी चाल मारी यानी जेब से १०० रुपये का एक नोट निकालकर अघोर बाबू की ओर बढ़ा दिया।

चकित होकर अघोर बाबू ने पूछा—इसका मतलब ?

मृण्मय ठाकुर विनती के साथ बोले—मैं बहुत ही गरीब हूं। इससे अधिक देने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। कृपा करके इस शादी से छुटकारा दिलवाइए। आप चाहें तो सब कर सकते हैं। उग्रमोहन बाबू आपकी सलाह कभी नहीं टालते।

बात ठीक थी, पर यह भी ठीक था कि अघोर चक्रवर्ती उग्रमोहन सिंह के सुयोग्य मैनेजर थे। उग्रमोहन के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने वाली कोई भी सलाह उन्होंने आज तक नहीं दी है। मृण्मय ठाकुर को घूरते हुए उन्होंने कहा—आपने आज मेरा जो अपमान किया, उसका बदला आपको सारे शरीर से चुकाना पड़ता, पर आप रुमनी-झुमनी के श्वसुर बनेंगे। शारीरिक रूप से आपका अपमान मैं नहीं करना चाहता। शान्त होकर मुझे सच बात बताइए कि आपको क्या एतराज़ है। क्या आपने सचमुच गंगागोविन्द के विषय में यह बात सुनी थी ?

मृण्मय ठाकुर ने कहा—सुनी तो है, कालीपद पुरोहित से ही मैंने सुनी है, पर सच तो यह है कि उसपर मुझे एतराज नहीं है। असली बात तो यह है कि मैंने अपने लड़के का विवाह-सम्बन्ध और कहीं किया है। वह पांच हज़ार रुपये देंगे, ज़ेवर देंगे, और इसके अलावा दो सौ बीघा ज़मीन लिख देंगे।

सुनकर अघोर बाबू चुप रहे। उनका पत्थर जैसा चेहरा पत्थर-सा ही रहा। उसपर कोई परिवर्तन नहीं हुआ, केवल अपनी दाहिनी हथेली से अपनी तांबे रंग की मूंछों को बिना किसी कारण ही संवारने लगे। उन्हें इस प्रकार चुप देखकर मृण्मय ठाकुर ने सोचा, शायद अघोर बाबू उनकी मुक्ति का महत्व समझ गए हैं। अपनी विस्फारित आंखों में ज़रा और भी विनती के भाव झलकाकर वे बोले—आप बुद्धिमान व्यक्ति हैं। हम गरीबों का दुःख-सुख आप समझते हैं। सीधे उग्रमोहन बाबू से मैं कुछ भी नहीं मांग सकता। यह तो आप जानते ही हैं। वे जो भी देंगे, मुझे सिर झुकाकर स्वीकार करना पड़ेगा। पर कमलाक्ष बाबू···

—कमलाक्ष ? कौन कमलाक्ष ? चन्द्रकान्त बाबू के मैनेजर ?

अघोर बाबू के मुंह से तीन गोलियों की तरह यह प्रश्न निकल पड़े। अनमना होने के कारण असावधानी से मृण्मय ठाकुर के मुंह से कमलाक्ष बाबू का नाम निकल पड़ा तो वह बहुत ही झेंप गए और सम्हालने के लिए बोले—नहीं-नहीं, यह दूसरा कमलाक्ष !····

अघोर बाबू सारी बात एकदम समझ गए पर ऊपर से बोले—ओह ! —और फिर हंसते हुए उनकी तरफ देखकर बोले—आपकी बात वाजिब है। मालिक से भेंट होने पर मैं इस विषय में कहूंगा। जहां तक मैं जानता हूं, रुपये के लिए कुछ नहीं रुकेगा। क्यों आपने उग्रमोहन बाबू को रुपये के लिए कभी पीछे हटते देखा है ?

मृण्मय ठाकुर डरकर बोले—नहीं-नहीं, ऐसा मत कीजिए। जान भी चली जाए तो भी मैं उनके सामने दहेज की बात आपको नहीं कहने दूंगा। उग्रमोहन बाबू ज़मींदार हैं। मित्रतुल्य हैं। उनके सामने दहेज की बात लेकर वैर-भाव करना मुझे शोभा नहीं देता। बेहतर तो यह होगा कि आप उन्हें समझा-बुझाकर उनकी राय बदल दें। अमीरों का ख्याल ही तो है, पुआल की आग की तरह जल उठता है और तुरन्त ही बुझ भी जाता है। समझे न ? माने···आ···आपका हुकुम हो तो····मैं आज

ही शाम को जाकर उन दोनों लड़कियों को आशीर्वाद की रस्म पूरी कर आऊं। यही तय है…न ‥

अघोर बाबू ने कहा—हमारे साथ आइए।

दोनों उठ गए। कचहरी के पीछे जाकर अघोर बाबू एक कमरे का ताला खोलने लगे।

मृण्मय ठाकुर ने पूछा—यहां क्या काम है ?

अघोर बाबू ने कुछ हंसकर जवाब दिया—सलाह-मशविरा वैसी खुली जगह पर ठीक नहीं होता। आइए अन्दर चलें।

मृण्मय ठाकुर अन्दर गए। कमरे के भीतर सीलन की गंध आ रही थी। बहुत दिनों से जिस कच्चे घर में कोई न रहता हो, उसमें ऐसी ही गन्ध होती है। अघोर बाबू ने कहा—आप थोड़ी देर बैठिए, मैं अभी आता हूं।

कहकर वे बाहर आए और चट से सांकल लगाकर ताला लगाते हुए बोले—चुपचाप बैठे रहिए। चिल्लाइएगा मत। मालिक के आने तक आपको थोड़ा कष्ट करना पड़ेगा।

रुमनी-झुमनी के भावी श्वसुर की विस्फारित आंख अंधेरे में और भी विस्फारित हो गई।

## ११

अघोर बाबू के लौटते ही रुमनी-झुमनी ने आकर उन्हें पकड़ लिया और पूछा—वह कौन आया था? उस दिन यही न हमें आशीर्वाद दे के गया था? वह कौन है दादा?

अघोर बाबू ने संक्षेप में जवाब दिया—वह श्वसुर है।

खरहा, कबूतर आदि की तरह ससुर भी वैसा ही कोई पालतू जीव होगा, शायद वे यही सोच रही थीं। इसी समय जंगल में घोड़े की टापों की आवाज़ गूंज उठी और पसीने में तर, मुंह से फेन उगलते हुए घोड़े पर सवार उग्रमोहन सिंह कचहरी के आंगन में आ पहुंचे। रुमनी-झुमनी खुशी से खिलखिला उठीं। अघोर बाबू ने उन्हें प्रणाम किया और अदब के साथ खड़े रहे।

साथ में जो सईस आया था, उग्रमोहन ने उससे कहा—खिलौने, बांसुरी वगैरह कहां हैं, निकाल दो।

फिर रुमनी-झुमनी को घूरकर बोले—क्यों, तुम्हारी आंखें सूजी क्यों नहीं हैं?

वे हंसकर बोल उठीं—भला झूठ-मूठ में आंखें क्यों सूजतीं?

उग्रमोहन बाबू निराशा दिखाते हुए बोले—मैंने तो सोचा था कि जाकर देखूंगा कि मेरे विरह में रोते-रोते तुम दोनों की आंखें सूज आई होंगी। लम्बी आहे भरती होंगी!

—रोए मेरी बला। आप तो उस रात को हमें सुलाकर चुपचाप भाग गए थे न?

सईस कुछ खूबसूरत गुड़िया और दो बांसुरी निकाल लाया। उन्हें पाते ही रुमनी-झुमनी उसे लेकर मग्न हो गईं। अवसर पाकर अघोर बाबू ने उग्रमोहन के कान में बताया—कुछ गुप्त बातें बतानी हैं हुजूर !

—क्या हो गया ?—कहकर उग्रमोहन बाबू और अघोर बाबू दोनों पीछे के बरामदे की ओर बढ़ने लगे।

शुरू से आखिर तक सारी कहानी सुनकर उग्रमोहन स्तम्भित होकर खड़े रह गए। गुस्से से उनका चेहरा तमतमा उठा। उन्होंने कठोर, गम्भीर आवाज़ से पूछा—तुमने किसके हुक्म से रुमनी-झुमनी के भावी श्वसुर का इतना भारी अपमान करने का साहस किया ?

स्वर्गीया कमला के समधी की ऐसी दुर्दशा से उनके अपने आत्म-सम्मान पर भी ठेस पहुंची। अघोर बाबू भी जैसे इस तरह के किसी प्रश्न के लिए तैयार थे। वे उग्रमोहन को अच्छी तरह से पहचानते थे। इसीलिए उन्होंने धीरे से उत्तर दिया—मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूं। पर हुज़ूर, मैंने उनका कोई अपमान नहीं किया। मैं उन्हें कैद करने के लिए बाध्य था, नहीं तो वह आज ही शाम को कमलाक्ष के द्वारा चुनी हुई उन दोनों लड़कियों को जाकर आशीर्वाद कर आते। हुजूर आपने ही मुझे हुक्म दिया था कि अगर मृण्मय ठाकुर आ जाएं तो उनके व्यवहार के अनुसार उनके साथ बर्ताव किया जाए। आपने मुझपर पूरी जिम्मेदारी छोड़ दी, इसलिए मैं····

इसपर उग्रमोहन को कुछ भी कहने के लिए नहीं था। फिर भी उन्होंने कड़वी आवाज़ में कहा—हां, बहुत योग्य व्यवहार किया है तुमने !

कह तो दिया पर मृण्मय ठाकुर की धृष्टता की बात सुनकर और उसमें चन्द्रकान्त का कुछ हाथ है, यह बात मालूम हो जाने पर उग्रमोहन कुछ बौरा-से गए। विस्फारित आंख वाले उस ब्राह्मण को पटककर मार डालने पर ही उन्हें कुछ शान्ति मिल सकती थी।

उन्होंने अघोर बाबू से कहा—खैर जब इतना ही किया है तो जो बाकी है, उसे भी कर डालो। सामने शाल के पेड़ में बांधकर उसे सिर

से पैर तक अच्छी तरह कोड़े लगवाओ, फिर गला पकड़कर निकाल दो। ऐसे कमीने के लड़कों के साथ मैं कभी रुमनी-झुमनी का ब्याह नहीं कर सकता।

अघोर बाबू अपलक दृष्टि से मालिक की ओर देखते रहे, फिर मृदु स्वर से बोले—पर सरकार, आपने उनके दोनों लड़कों को आशीर्वाद भी दे दिया है और बात भी पक्की हो चुकी है।

उसी समय रुमनी-झुमनी कलरव करती हुई आकर बोली—दादा जी, देखो, देखो, कौन आया है ?

उग्रमोहन बाबू ने जाकर देखा कि मुस्कराते हुए गंगागोविन्द खड़े हैं।

गंगागोविन्द का आना आकस्मिक था, पर फिर भी एकदम अप्रत्याशित नहीं था। उसका कारण यह था कि स्वयं उग्रमोहन ने गंगागोविन्द को खबर भेज दी थी कि रुमनी-झुमनी के लिए ज़रा भी चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। वे यम जंगल में अघोर बाबू के साथ खूब खुश हैं। हां, विवाह की बात उन्होंने पूरी तरह गुप्त रखी थी। उन्होंने मन में यही तय कर लिया था कि शुभ कार्य सम्पन्न होने के बाद ही गंगागोविन्द को खबर देंगे। गंगागोविन्द ने उग्रमोहन का पैर छूकर हंसते हुए कहा—देख रहा हूं कि ये तो यहां बहुत खुश हैं, पर मुझे अब अकेले अच्छा नहीं लगता। सोच रहा हूं, इन्हें आज ले जाऊं।

रुमनी-झुमनी आंगन में कबूतरों को चारा देने के लिए एक ओर भाग गईं। उनके चले जाने पर उग्रमोहन ने कहा—ज़रूर, ले तो जाओगे ही, पर आज नहीं एकदम माघ के २४ तारीख को ही ले जाना।

गंगागोविन्द हंसकर चुप हो रहे।

थोड़ी देर तक कोई कुछ नहीं बोला, फिर गंगागोविन्द बोले—एक बात सुनने में आई। शायद यों ही अफवाह है, पर जब सुनने में आया है तो आपसे कह देना ही ठीक होगा।

उग्रमोहन ने पूछा—क्या सुना ?

कुछ हिचकिचाकर गंगागोविन्द अन्त में बोले—सुना है कि आपने निमाई नगर के मृण्मय ठाकुर के लड़कों से रुमनी-झुमनी का व्याह तय कर लिया ? यह इतनी असम्भव-सी बात है कि····

उनकी बात काटते हुए उग्रमोहन ने कहा—क्यों, इसमें असम्भव की क्या बात है ? तुमने ठीक ही सुना है। आगामी तेईस माघ को शादी होगी। तय हो गई है। आशीर्वाद की रस्म भी पूरी हो चुकी है।

गंगागोविन्द यह सुनकर अवाक् रह गए। क्या कहें, क्या न कहें। कुछ समझ नहीं पाए। हकलाते हुए बोले—मैं तो कुछ···यानी इसका मतलब···

उग्रमोहन ने इतना ही कहा—मैंने जो उचित समझा किया, अब तुम जैसा समझो, कर सकते हो।

गंगागोविन्द थोड़ी देर निर्वाक् रहे, फिर बोले—इस विवाह में मेरी राय नहीं है।

—ठीक है, तुम्हारी राय के बिना ही यह विवाह होगा। क्योंकि हमारी राय है। मृण्मय ठाकुर की स्थिति अच्छी है, उनके दोनों लड़के भी अच्छे हैं। हमारे विचार से इस विवाह में मंगल ही होगा।

गंगागोविन्द फिर भी चुप रह गए, यह देखकर उग्रमोहन फिर बोले—मंगल हो या न हो, मैंने बात दे दी है, तो विवाह होकर ही रहेगा।

इस बार गंगागोविन्द ने जवाब दिया—आप बलवान् हैं, मैं निर्बल हूं। अतः जब तक मैं शक्तिशाली न हो जाऊं, आपके साथ बहस करना व्यर्थ है। क्योंकि आपकी एकमात्र युक्ति है, जिसकी लाठी, उसकी भैंस। तो अब मैं चला। हो सकेगा तो मैं किसी और दिन इसका जवाब दूंगा।

उग्रमोहन ने कहा—अगर तुम्हें जाने न दिया जाए तो ?

गंगागोविन्द के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई। उन्होंने धीरे से कहा—मैं भी आपसे कुछ ऐसी ही उम्मीद करता था। आप मुझे

जबरदस्ती यहां रोकने की कोशिश कर सकते हैं, पर मैं भी जब तक ज़िन्दा रहूंगा, यहां से चले जाने की कोशिश करूंगा। मैं निर्बल हूं, शायद मेरी जान भी चली जाए, फिर भी मैं कोशिश नहीं छोड़ूंगा।

कहकर गंगागोविन्द उठ खड़े हुए। उग्रमोहन ने अघोर बाबू से कहा—मेरा हुक्म है, इन्हें किसी भी हालत में यहां से न जाने दिया जाए।

वज्राहत की तरह गंगागोविन्द खड़े रह गए। उनके होंठों पर की हंसी विलीन हो गई और वह निचले होंठों को दांत से दबाकर खड़े रह गए।

ठीक उसी समय रुमनी-झुमनी दौड़कर कमरे में आ पहुंचीं और बोलीं—दादा जी, पिता जी, देखो, देखो, दोनों कबूतर कैसा लड़ रहे हैं? काला कबूतर बहुत ही गुसैल है।

—ऐसी बात?—कहकर उग्रमोहन नातिनों के साथ बाहर चले गए। बाहर जाकर उन्होंने कहा—अघोर, सुनो।

अघोर बाबू भी बाहर चले गए।

कुछ हिचकिचाकर अघोर बाबू धीमी आवाज़ से बोले—हुज़ूर, अगर वे ज़बरदस्ती चले जाना चाहें तो?

उग्रमोहन ने जवाब दिया—तो तुम उन्हें ज़बरदस्ती कैद करना। यहां तो पचास सिपाही हैं?

अघोर बाबू चुप रह गए।

उग्रमोहन फिर से बोले—मैं उन्हींसे कन्यादान कराऊंगा।

रुमनी आकर बोली—दादाजी, जानते हैं, मेरा खरहा भाग गया।

उग्रमोहन ने हंसकर कहा—जान बची।

झुमनी ने कहा—मंगलू से कहकर एक और मंगा दो।

उग्रमोहन ने पूछा—मंगलू कौन है?

अघोर बाबू ने जवाब दिया—मंगलू एक संताल माझी है। खैर अब उसकी ज़रूरत नहीं है। सईस से कह देता हूं, वही ला देगा। पचना!·· ओ पचना!

पचना सईस ने आकर अदब से सलाम किया ही था कि अघोर बाबू ने कहा—एक खरहा का बच्चा चाहिए। घोड़े को दाना-पानी दिया ?

पचना अदब से बोला—घोड़ा लेकर जमाई बाबू अभी-अभी हवा खाने गए हैं।

गंगागोविन्द बड़े बुद्धिमान आदमी हैं और वे चन्द्रकान्त के मित्र भी हैं। उग्रमोहन का घोड़ा लेकर ही वह जंगल छोड़ गए और यह प्रमाणित कर गए कि बुद्धिर्यस्य बलं तस्य। अघोर बाबू और उग्रमोहन एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। उग्रमोहन ने अघोर बाबू से कहा—अब तुम्हारा पेन्शन लेना ही ठीक रहेगा। तुम्हारी बुद्धि अब सठिया गई है।

अघोर बाबू ने कुछ नहीं कहा। उनका पत्थर-सा चेहरा पत्थर जैसा ही बना रहा। पर गंगागोविन्द के इस तरह भाग निकलने पर वे मन ही मन कुछ खुश हुए। वह गंगागोविन्द पर आन्तरिक श्रद्धा रखते थे।

पिताजी के एकाएक अन्तर्धान हो जाने पर रुमनी-झुमनी ताज्जुब में पड़ गईं। अघोर बाबू ने उन्हें समझाया कि किसी जरूरी काम से वे गए हैं, शायद कल आ जाएं।

धीरे-धीरे शाम हो गई। रुमनी-झुमनी सो गईं।

तब उग्रमोहन ने कहा—मृण्मय को बुलाओ। चलो उत्तर की ओर वाले कमरे में चलें।

मृण्मय ठाकुर जब आए तो थर-थर कांप रहे थे। दोनों आंखों से झर-झर आंसू बरस रहा था। उग्रमोहन ने उन्हें देखकर कहा—तुमने जो किया, उसके लिए तो तुम्हें काटकर गड़वा देना चाहिए था, पर मैं ऐसा नहीं करूंगा। अब जो कहा जा रहा है वही करो।—कहकर उन्होंने अघोर बाबू को दवात, कलम और कागज़ लाने का हुक्म दिया। यह सब आ जाने पर वे बोले—रोने-धोने का ढोंग छोड़कर मैं जो कह रहा हूं, वह करो। लिख, दगाबाज़, बदमाश कहीं का, कलम पकड़, लिख !

मृण्मय ठाकुर ने कलम लिया और उग्रमोहन के आदेशानुसार लिखा :

प्रिय पुत्र अजय और विजय,

आशीर्वाद ।

यम जंगल की कचहरी में आकर मैं बहुत ही अस्वस्थ हो गया हूं, इसलिए घर नहीं लौट पाया । अभी तक चलने-फिरने की शक्ति नहीं है । पत्र पाते ही तुम इस आदमी के साथ यहां चले आओ । तुम्हारी माता जी को आने की कोई ज़रूरत नहीं है । तुम दोनों के आने पर मैं तुम्हारे साथ चला चलूंगा । आने में बिल्कुल देर मत करना । पुनः आशीर्वाद ।

तुम्हारा पिता
मृण्मय ठाकुर

पत्र लेकर आठ सिपाही निमाई नगर की ओर चल पड़े ।

# १२

सन्ध्या का अंधेरा गहरा पड़ गया। सारे जंगल में झिंगुर का झंकार ध्वनित हो रहा है। दो-एक रात्रिचर पक्षियों की तीखी और तेज़ आवाज़ अंधेरे को चीरकर सुनाई पड़ जाती है। ब्रह्महृदय नक्षत्र शिरीष के पेड़ के ऊपर जगमगा रहा है। आंगन के बीचोंबीच एक अग्निकुण्ड है। उसके चारों ओर कुछ सिपाही बैठकर आग ताप रहे हैं। अघोर बाबू अपने कमरे में बैठकर सन्ध्या-पूजा कर रहे हैं। मुन्नी-झुन्नी सोई हैं। मृण्मय ठाकुर की दुर्दशा दूर करके उग्रमोहन सिंह ने उत्तर की ओर के कमरे में उनके सोने का बन्दोबस्त कर दिया है। बिस्तर भले आदमियों की तरह है, पर दरवाज़े पर सशस्त्र पहरेदार नियुक्त हैं। मृण्मय ठाकुर सोए हैं कि नहीं, यह तो भगवान को ही मालूम होगा, पर उनकी दोनों आंखें मुंदी हुई हैं।

उग्रमोहन सिंह बीच वाले कमरे में हैं। नंगे बदन पर एक कौपीन मात्र पहने हुए हैं। वे भीखन तिवारी ले साथ कुश्ती लड़ रहे हैं। सर्दी की इस शाम को भी उनका शरीर पसीने से तर है। कुश्ती उग्रमोहन सिंह की एक विलासिता है। उनके सिपाहियों में कम से कम पचीस-तीस पहलवान हैं और वे मालिक के साथ कुश्ती लड़ने का अवसर मिलने पर कृतार्थ हो जाते हैं। आज शाम को उन्होंने भीखन तिवारी से कुश्ती मांगी है। दोनों ही वीर-विक्रम-से कुश्ती में मस्त हो गए हैं। बाहर पेड़ों के ऊपर शुक्ला चतुर्थी के चांद की अन्तिम किरणें हिल रही हैं। लम्बी पकड़ के बाद उग्रमोहन ने भीखन तिवारी को चित्त कर दिया।

भीखन तिवारी ने खड़े होकर मालिक का पैर छू लिया। उग्रमोहन सिंह ने पीठ थपथपाकर शाबासी दी।

बाहर से किसीकी धीमी आवाज़ सुनाई पड़ी—हुजूर !...

उग्रमोहन ने एक कम्बल लपेटकर भीखन तिवारी को दरवाज़ा खोलने की आज्ञा दी। दरवाज़ा खुलने पर उन्होंने देखा कि जो आठ सिपाही निमाई नगर भेजे गए थे, वे लौट आए हैं। उनका कहना था कि आज सुबह से ही मृण्मय ठाकुर के दोनों लड़के गायब हैं।

सितार के तार कसते हुए चन्द्रकान्त ने मुस्कराते हुए पूछा—तब ? दोनों लड़के पालकी में बैठ गए ?

कमलाक्ष बाबू ने जवाब दिया—जी हां।

जोड़ी पर धीरे-से मिजराब चलाते हुए चन्द्रकान्त ने फिर से कहा—हमारे विश्वास महाशय का लड़का काफी उस्ताद हो गया है। है न ?

कमलाक्ष बाबू ने कोई जवाब नहीं दिया। उनका नाम कमलाक्ष सार्थक ही है क्योंकि उनकी दोनों आंखों में लाल डोरे पड़े हैं और ये सरल और उभरी-सी हैं। कसी हुई औसत कद-काठी के आदमी हैं। बोलते बहुत कम हैं। मामले-मुकदमे की ओर ज़रा ज़्यादा झुकाव है। तू डाल-डाल, मैं पात-पात, यही भावना उनके चेहरे और अंग-अंग से टपकती रहती है। पर कमलाक्ष बाबू चन्द्रकान्त की बुद्धिमानी से बहुत डरते थे और इसीलिए वे चन्द्रकान्त को अपार श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। बिना किसी कुण्ठा के वे मालिक के सभी आदेशों का अक्षरशः पालन करते थे। उनके दिल में सदा ही यह डर बना रहता था कि चन्द्रकान्त जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को शायद उनका कोई भी काम पसन्द नहीं आता होगा। चन्द्रकान्त ने ऐसी बात कभी उनसे नहीं कही है, पर कमलाक्ष बाबू में यह धारणा जड़ जमाकर बैठी थी। फलस्वरूप जब भी किसी काम के लिए वे चन्द्रकान्त के सामने आते थे तभी उनके व्यवहार

और बातचीत में भीगी बिल्ली की रंगत आ जाती थी।

मैनेजर को चुप देखकर चन्द्रकान्त ने आंख उठाकर उनकी ओर देखा और कहा—यानी संक्षेप में बात यह रही कि हमारे गुमाश्ता विश्वास महाशय का लड़का रुमनी-झुमनी को दिखा देने के बहाने उन दोनों लड़कों को गंगागोविन्द के घर में लाया और वहां पर तुमने उन लोगों को यह कह दिया कि रुमनी-झुमनी यहां नहीं हैं, यम जंगल में हैं। फिर तुमने पालकी के बन्दोबस्त का प्रस्ताव रखा और वे राज़ी हो गए और तुमने उन्हें पालकी पर चढ़ाकर सीधे टाल जंगल की कचहरी में रवाना कर दिया। है न यह बात ?

कमलाक्ष ने चुपचाप सिर हिला दिया। सितार के घाटों पर एक बार अंगुली चलाने के बाद चन्द्रकान्त को लगा कि उदारा का निषाद पर्दा कुछ बेसुरा है। वे घाट को थोड़ा खिसकाते हुए बोले—अच्छा, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि हमारे गुमाश्ता विश्वास के लड़के के साथ अजय-विजय का परिचय है ?

—वे श्यामगंज के स्कूल में एक साथ पढ़ते हैं न !

—ओ !

चन्द्रकान्त काफी की एक गत धीरे-धीरे बजाने लगे, पर उनका चेहरा देखकर यह मालूम हो रहा था कि वह कुछ और ही सोच रहे हैं। एकाएक उन्होंने आदेश दिया—विश्वास को बुलाओ।

राधामाधव विश्वास जमींदारी के पुराने कर्मचारी हैं। कैन्वस के मैले जूते बाहर उतारकर अन्दर आकर उन्होंने भक्ति के साथ सलाम दिया और खड़े हो गए। चन्द्रकान्त बोले—देखिए आपका लड़का क्या कर बैठा। मृण्मय ठाकुर के दोनों लड़के अजय-विजय के साथ हमारी रुमनी-झुमनी के ब्याह की शायद कुछ बातचीत चल रही थी। छिपाकर रुमनी-झुमनी को दिखाने के लिए आपका लड़का आज उन दोनों को गंगागोविन्द के घर में लाया था। देखिए तो भला उसका बचपना, उसपर कमलाक्ष भी एक काम कर बैठा, रुमनी-झुमनी उग्रमोहन की जंगल

वाली कचहरी में हैं, यह बात कमलाक्ष नहीं जानते थे और उन्होंने पालकी पर बैठाकर उन्हें हमारी टाल की कचहरी में भेज दिया। देखिए तो भला!

कमलाक्ष और विश्वास दोनों ही ताज्जुब में पड़ गए।

चन्द्रकान्त फिर से काफी की गत में मग्न हो गए। थोड़ी देर बजाने के बाद उन्होंने कहा—एक काम कीजिए विश्वास महाशय, आप तुरन्त कुछ नाश्ते वगैरह लेकर अपने लड़के के साथ टाल की ओर रवाना हो जाएं, नहीं तो उन बेचारों को बहुत तकलीफ रहेगी। इधर कमलाक्ष भी उनके घर पर खबर भेज देगा। गंगागोविन्द भी तो घर पर नहीं हैं।

विश्वास महाशय मन ही मन अपने लड़के को कोसते हुए मालिक का हुक्म तामील करने के लिए चले गए। इस समय टाल में जाना कोई आसान बात है क्या?

विश्वास के जाने पर कमलाक्ष की भीगी बिल्ली की-सी रंगत फिर स्पष्ट हो गई। मालिक की कार्रवाई उनकी समझ में नहीं आ रही थी। काफी की गत धीरे-धीरे बजाते हुए चन्द्रकान्त बोलने लगे—विश्वास के लड़के को भी टाल में भेजना जरूरी है, नहीं तो सारी बात खुल जाएगी न? अब समझे? तुम एक काम करो, मोहनिया घाट तो टाल के रास्ते में ही है न? विश्वास घाट पार करें तभी तुम किसी बहाने से घाट के माझी-मल्लाहों को सदर में तलब कर लो। यानी आज रात को और कोई न तो मोहनिया घाट के इस पार से उस पार जा सके और न इधर से उधर आ सके। समझे?

अब कमलाक्ष समझे। मालिक और मालिक की चतुरता, दोनों के सामने बड़ी श्रद्धा से सिर झुकाकर वे बाहर चले गए।

जैसे कुछ भी नहीं हुआ। चन्द्रकान्त आंख मूंदकर काफी की गत बजाने लगे। तन्मय होकर बजा रहे हैं। बाह्य ज्ञान लुप्तप्राय हो गया है। थोड़ी देर बाद धीमी आहट सुनकर चन्द्रकान्त ने आंखें खोलकर पूछा—कौन है?

भजन खानसामा आगे बढ़कर बोला—मैनेजर बाबू बाहर खड़े हैं।

एक मिनट के लिए आना चाहते हैं।

कमलाक्ष के आने पर चन्द्रकान्त ने पूछा—फिर क्या बात हो गई ?

—मोहनिया घाट में आदमी भेज दिया। मैं एक बात सोच रहा हूं हुजूर। अगर हम रुमनी-झुमनी का अपहरण करने के लिए नालिश करके गंगागोविन्द को फरियादी खड़ा कर दें, तो कैसा रहे हुजूर ?

चन्द्रकांत मुस्कराए, बोले—हां, तो तुम्हें एक बात बताना भूल गया था। मेरे नाम पर खर्च लिखकर तुम खज़ाने से सौ रुपये ले लो। तुम्हारी बख्शीश है। तुम्हारे आज के काम से मैं बहुत खुश हूं। अपहरण का मुकदमा अभी छोड़ो, बाद में इसपर गौर करेंगे।

कमलाक्ष बाबू भीगी बिल्ली की तरह देखते हुए बोले—फिर बख्शीश किसलिए हुजूर, आपका ही तो खाते-पीते हैं और फिर खज़ाने में अभी नकद रकम ज़्यादा मौजूद नहीं है। कल सरस्वती पूजा भी तो है।

उनकी बात पर बिल्कुल ध्यान न देकर चन्द्रकांत फिर से सितार में मग्न हो गए। कमलाक्ष बाबू प्रणाम करके बाहर चले गए तो चन्द्रकांत सितार रखकर कुछ मुस्करा पड़े और अंगड़ाई लेकर आवाज़ दी—भजना, तम्बाकू दे जा और ज़रा मिसिर जी को बुला दे।

काफी रागिनी की गत और गीत विस्तार से गाकर जब मिसिर जी विदा हुए तो संध्या आसन्न थी। राधाकिशन जी के मन्दिर में आरती का घंटा बजना शुरू हो गया। नौबतखाने में बांसुरी पर पूरबी बजने लगी। चन्द्रकांत का सारा अन्तर एकाएक विषाद में डूब गया। फर्शी की नली मुंह में लगाकर बिल्कुल असहाय की तरह तकिए से टिके वे अकेले बैठे रहे। अकारण ही उन्हें ऐसा लगा कि दुनिया में सब कुछ निरर्थक है।

एकाएक बाहर मादल की आवाज़ सुनकर उनके हृदय का बोझ उतर-सा गया। उन्होंने खिड़की से झांककर देखा, बंजारों का एक झुंड आकर कचहरी में नाच-गान में जुट गया। एक अल्हड़ युवती अधमैले लाल रंग का लहंगा और नीली चोली पहनकर अनेक मुद्राओं से नाच-नाचकर

उसमें कृतकार्य भी हुए थे । रेशम बाई को दो दिनों के अन्दर ही देश छोड़कर भाग जाना पड़ा ।

चन्द्रकांत के होंठों पर हंसी खिल उठी । इसके बाद जब वे कलकत्ते में थे, तब उन्होंने हृदय ढालकर सचमुच प्यार किया था । वह एक मित्र की बहन थी, नाम था सुजाता । सुजाता के पीछे उन्होंने बड़ा पैसा खर्च किया, पर विलायती जहाज़ ने ज्यों ही एक बैरिस्टर लाकर भारत का धरती पर उतार दिया, त्यों ही सुजाता का सारा प्रेम काफ़ूर हो गया । कहां एक देहाती ज़मींदार का लड़का और कहां विलायती फैशन में चुस्त, झलमलाता हुआ बैरिस्टर । दोनों में ज़मींन आसमान का फर्क था । सुजाता के चुनाव को दोष नहीं दिया जा सकता । कुल मिलाकर उन्होंने निश्चय कर लिया कि किसी स्त्री से उनकी नहीं बनने की ।

नारी जाति के प्रति चन्द्रकांत आकर्षित न होते हों, ऐसी बात नहीं पर वितृष्णा भी प्रबल है । इतनी तुच्छ, पैसे से बिक जाती हैं । सचमुच ये पैसे से खरीदी जाती हैं । आज तक उन्हें एक भी नारी ऐसी नहीं दिखाई पड़ी जो ऐश्वर्य की चकाचौंध में मुग्ध न हो । गरीब पति की सती स्त्री भी दूसरे का ऐश्वर्य ललचाई आंखों से देखती है ? और अपने पति को कोंचती है। सचमुच स्त्री जाति बड़ी ही नीच है। हाय भगवान् ! प्रेमास्पदा मानसी को इतना हीन और तुच्छ क्यों बनाया ! नहीं, सितार के साथ ही प्रेम ठीक रहेगा ।

क्या वे बंजारिन छोकरियां भी इतनी ही नीच हैं? नौकर बत्ती लेकर कमरे में आया तो चन्द्रकांत जैसे जग गए उन्होंने कहा—जूता और छड़ी ले आ, मैं ज़रा घूमने जाऊंगा ।

नदी किनारे-किनारे चन्द्रकांत टहलने लगे। एकाएक उन्होंने देखा कि बंजारों का झुंड नाव से नदी पार कर रहा है । उस पार उनका तम्बू भी दिखाई पड़ रहा था । चन्द्रकांत जब टहलकर लौटे तो नौबतखाने में शहनाई पर यमन राग बज रहा था ।

## १३

मृण्मय ठाकुर के दोनों लड़कों के एकाएक गायब हो जाने की खबर सुनकर उग्रमोहन सहसा किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। दिल में चाहे जितना गुस्सा हो, पर सिपाहियों के सामने उसे प्रकट करने में संकोच लगा। हारकर गुस्सा दिखाना आत्मसम्मान के विरुद्ध है। उग्रमोहन भीतर ही भीतर सुलगने लगे। उनके नथुनों को, फड़कते नथुनों को देखकर अघोर बाबू यह बात अच्छी तरह समझ रहे थे, पर अघोर बाबू के पत्थर जैसे चेहरे की एक भी पेशी नहीं हिली। वे धीरे से उग्रमोहन से बोले—मृण्मय को बुलाकर एक बार पूछ लिया जाए कि उसे कुछ मालूम है या नहीं।

उग्रमोहन ने कहा—मैं चला जाऊं तब तुम मृण्मय को बुलाकर पूछताछ करना और यह भी कह देना कि अगर किसी वजह से उसके लड़कों के साथ रुमनी-झुमनी का विवाह न हुआ तो उसे हम कुत्ते की मौत मारेंगे।

ये बातें एक कमरे में धीरे-धीरे हो रही थीं। बाहर से धीरे से खखारकर पचना सईस ने बुलाया—हुजूर।

—कौन है ?—अघोर बाबू ने दरवाज़ा खोलते हुए पूछा—क्या चाहिए ?

पचना ने उत्तर दिया—हुजूर, घोड़ा लौट आया है। जमाई बाबू नहीं आए। कहीं गिर तो नहीं गए ? हुक्म हो तो उनका पता लगाया जाए।

असल बात यह है कि उग्रमोहन के घोड़े पर सवार होकर गंगा-गोविन्द अधिक दूर नहीं गए थे। घोड़े को छोड़कर वे पैदल ही चले गए। घोड़ा लौट आया, यह सुनकर उग्रमोहन प्रसन्न हुए। वे तुरन्त घर लौटना चाहते थे। इतना लम्बा रास्ता घोड़े से जाने पर अवश्य ही रात हो जाएगी। जो भी हो, घर पहुंचना बहुत जरूरी था। इसराज फेंक देने के बाद से वह्निकुमारी के साथ उनकी अच्छी तरह से बातचीत भी नहीं हो पाई थी। वे बाहर ही बाहर घूम रहे थे। वह्नि के साथ सन्धि की कामना से उनका सारा हृदय व्याकुल हो उठा था। इसके अलावा मानिक मंडल से दोनों लड़कों की खोज भी करानी है। विवाह के दिन ही कितने रह गए हैं। तीसरे, शायद गंगागोविन्द पुलिस में इत्तिला कर दें, उसका भी कुछ इन्तज़ाम करना ही होगा। उन्हें घर लौटना ही है। पुलिस की बात मन में आते ही वे अघोर बाबू से बोले—मैं अब घर जा रहा हूं। अगर आज रात में ही पुलिस पहुंच जाए तो उसे मार-पीटकर भगा देना। तुम्हारे पास पचास सिपाही तो हैं ही। अगर रात को कोई हल्ला न हुआ तो सवेरा होते ही रुमनी-झुमनी और मृण्मय ठाकुर को गोशाला में हटा देना। उन्हें पहुंचाकर तुम यहां चले आना। कल तुम्हारा यहां मौजूद रहना ज़रूरी है। सिपाहियों को भी गोशाला भेज देना। भीखन तिवारी के अलावा और किसीको यहां रहने की जरूरत नहीं है।

अंधेरे में जंगल की पगडंडी सावधानी से पारकर जब उग्रमोहन मैदान में पहुंचे तो उन्होंने घोड़े की चाल तेज़ कर दी। उग्रमोहन का घोड़ा अन्धकार को चीरता हुआ दौड़ चला।

जाड़े के मेघहीन आकाश में असंख्य नक्षत्र जगमगा रहे थे। तीखी, काटती हुई तेज हवा चल रही थी। उग्रमोहन कसकर लगाम पकड़े हुए घोड़े पर बैठे थे।

उनके मन में दो चेहरे उभर रहे थे। वह्नि और चन्द्रकान्त। बहन और भाई।

जब घोड़ा उग्रमोहन के गांव में पहुंचा तो गांव सोता पड़ चुका था। केवल कुछ कुत्ते बिना कारण भूंक रहे थे। सियारों का एक झुंड चिल्लाते-चिल्लाते एक साथ चुप हो गया। नक्षत्रों की रोशनी ने गांव के किनारे के ताड़ के पेड़ों को रहस्यमय बना दिया है। कर्कश आवाज़ में चीखकर एक उल्लू उड़ गया। रात का अंधेरा गहरा हो रहा था। घोड़े पर जाते-जाते उग्रमोहन ने देखा कि चन्द्रकान्त के खास कमरे में अभी तक बत्ती जल रही है। चन्द्रकान्त क्या अभी तक जाग रहा है? शतरंज की एक बाज़ी कैसी रहेगी? उग्रमोहन ने घोड़े को मोड़ दिया। चन्द्रकान्त के घर के पास आकर देखा ड्योढ़ी अभी तक बन्द नहीं हुई है। उग्रमोहन के घोड़े के फाटक के भीतर पहुंचते ही गोरखा पहरेदार ने सलामी दी। उग्रमोहन ने पूछा—चन्द्रकान्त कहां हैं?

—बाबू साहब अभी-अभी बाहर गए हैं।

—सवारी पर?

—जी नहीं, पैदल।

—आने पर कह देना कि मैं आया था।

—जी हुज़ूर।—गोरखा सलाम करके परे हट गया।

उग्रमोहन का घोड़ा जब चन्द्रकान्त के घर की चौहद्दी पार कर रहा था तो चन्द्रकान्त अपने बगीचे के आर्किड हाउस में छिपकर छद्मवेश उतार रहे थे। छद्मवेश धारण करने में चन्द्रकान्त बहुत कुशल थे। संगीत विद्या की तरह इस विद्या को भी उन्होंने बड़े कौशल और खर्च से सीखा है। जब भी किसीको जनाए बिना कोई काम करना होता है तो वे छद्मवेश धारण करते हैं। आर्किड हाउस से वे बड़े सहज भाव से बाहर निकले। फाटक में प्रवेश करते ही गोरखे ने आकर सलाम किया और बताया कि उग्रमोहन बाबू आए थे।

—अच्छा।—कहकर चन्द्रकान्त भीतर चले गए। अब भी उनकी कनपटी की रगें क्रोध के मारे तमतमा रही थीं। वे नदी के उस पार गए हुए थे।

उस बंजारी का नाम फुलकि था। फुलकि[1] थी भी चिनगारी जैसी। वहां पर भी वह बहुत-से लोगों के सामने नाच रही थी। ऐसे नाच रही थी मानो कोई नागिन फन खोलकर आवेग से कांप रही हो। उसकी खिलखिलाहट जैसे अब भी चन्द्रकान्त के कानों में गूंज रही थी।

टेबुल पर नीले रंग के पर्दे वाली एक खूबसूरत-सी बत्ती से हल्की रोशनी निकल रही है। धूपदान में अभी तक धूप जलकर खतम नहीं हुई है। क्षीण धूम-रेखा से अगरु की सुगन्ध अब भी जल-जलकर अपने को न्योछावर कर रही है।

चन्द्रकान्त इसराज उठाकर कान्हड़ा राग में गाने लगे—आनन्दन आनन्द भयो...

उग्रमोहन जब घर पहुंचे तो उनके खास नौकर ब्रज के अलावा और कोई जग नहीं रहा था। घोड़े पर से उतरते ही आकर ब्रज ने लगाम पकड़ ली। वे सीधे महल की ओर बढ़ गए। पहरेदार ने उन्हें सलाम किया.पर वे देख नहीं पाए।

अन्दर पहुंचकर देखा वह्नि के कमरे में अभी तक बत्ती जल रही है। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है। केवल दालान की बड़ी घड़ी से टक्-टक् की आवाज़ सुनाई पड़ रही है।

उग्रमोहन बिना आहट किए वह्निदेवी के कमरे के दरवाज़े पर कुछ देर कान लगाकर खडे रहे। दरवाज़ा भिड़ा हुआ था। अन्दर से कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ी। धीरे-से दरवाज़े पर दस्तक देकर वे दरवाज़ा खोलकर अन्दर गए, देखा वह्निदेवी कारपेट पर कुछ कढाई कर रही है।

उग्रमोहन ने कहा—अच्छा, अभी तक जाग रही हो? क्या बुन रही हो?

—जूता।

—पढ़ाई-लिखाई, संगीत सब छोड़कर एकाएक यह क्या?

---

१. बंगला में फूलकि का अर्थ चिनगारी होता है।

वह्निदेवी की आंखों में पलभर के लिए एक चमक आकर फिर से बिला गई। उन्होंने उत्तर में कहा—यस्मिन् देशे यदाचारः।

उग्रमोहन साफा उतारकर रखते हुए कुछ मुस्कराकर बोले—एक गाना सुनने को दिल कर रहा है।

वह्निकुमारी के गम्भीर चेहरे पर मुस्कराहट की एक आभा झांकने लगी। पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। एकाग्र होकर कढ़ाई करती रही।

फिर से उग्रमोहन ने कहा—कब तक बुनाई चलेगी?

वह्निकुमारी मुस्कराकर कुछ कहने ही जा रही थी कि नीचे से पालकी की हुमक सुनाई पड़ी—हुम्-हुम्!

—अरे चन्द्रकान्त आ गया क्या?

उग्रमोहन नीचे उतर गए।

चन्द्रकान्त हंसकर बोले—सुना कि तुम जाकर लौट आए हो? चलो एक बाज़ी जम जाए।

दोनों शतरंज पर जम गए।

वह्निदेवी अन्दर महल में अकेली कढ़ाई करती रही। उनके चेहरे पर की उदीयमान हंसी बुझ गई।

## १४

पौ फटते ही उग्रमोहन घोड़े पर सवार होकर चले गए। कहां गए, किसीको पता नहीं। रानी बल्लिकुमारी सवेरे उठकर स्नान करके पट्टवस्त्र पहनकर दो डलिया भर कमल के फूल लेकर पालकी से चन्द्रकान्त के घर की ओर रवाना हो गई। करीब सालभर बाद वह अपने मायके जा रही है। उसकी पालकी पर लाल मखमल का पर्दा था। उसकी सुनहरी झालर प्रभात के सुनहरे प्रकाश में झलमलाने लगी। पीछे एक मामूली पालकी पर दो दासियां भी कुछ ज़रूरी चीज़ें लेकर चल रही थीं।

चन्द्रकान्त के घर में सरस्वती पूजा कुछ विशेष रूप से होती थी। चन्द्रकान्त राय के अन्दर महल में एक बड़ी-सी फुलवारी थी। किस्म-किस्म के फूल खिलते थे। यहां चमेली, जुही, अड़हुल, टगर से लेकर गुलाब, रजनीगन्धा, गुलदावरी यहां तक कि पिटूनिया, डालिया, वायलेट, स्वीट-पी आदि विलायती मौसमी फूलों की भी भरमार है। इस विस्तृत उद्यान के बीचोंबीच एक बड़ा-सा तालाब भी है। उसका गहरा काला पानी कमलों से भरा है। उसी तालाब में संगमरमर का एक बड़ा-सा मंच है और मंच की छाजन की जगह संगमरमर का एक विशाल कमल बना हुआ है। संगमरमर का बना हुआ सुन्दर मृणाल पानी से निकलकर बल खाता हुआ ऊपर चढ़ा है।

चन्द्रकान्त की सरस्वती-प्रतिमा तालाब के बीचोंबीच इसी मंच पर स्थापित की जाती है। कृष्णनगर की बनी हुई अनुपम प्रतिमा है। पूजा

के दिन मंच पर केवल प्रतिमा ही नहीं, दुनिया भर के ज्ञानी, गुणी विद्वानों की बड़ी-छोटी मूर्तियां रखी जाती हैं। इसके अलावा श्री पंचमी के दिन सवेरे से मंच के चारों ओर प्रसिद्ध सितारी, वीणा-वादकों, इसराज-वादकों के राग-रागिनियों के आलाप से वातावरण गूंज उठता है। सरस्वती के पुजारी चन्द्रकान्त स्वयं पुरोहित बनते हैं। चन्द्रकान्त का हुक्म है कि उस दिन किसी सांसारिक मामले में उन्हें न घसीटा जाए। और भी एक विशेषता है। वाणी की इस अर्चना में वे ऐरों-गैरों को नहीं बुलाते। इस उपलक्ष्य में केवल सरस्वती के एकनिष्ठ साधकों को ही हर साल निमन्त्रित करते हैं। रिश्तेदारों में से केवल गंगागोविन्द और रानी वह्निकुमारी को ही बुलाया जाता है, पर उग्रमोहन सिंह को नहीं। जिन लोगों को वाणी की साधना में सच्ची निष्ठा न हो ऐसे लोगों को चन्द्रकान्त की वाणीपूजा में नैवेद्य सजाने का बुलावा नहीं दिया जाता।

बताशपुर गांव के गरीब सारंगी-वादक को चन्द्रकान्त बड़े आदर से निमन्त्रित करते हैं, पर हाईस्कूल के हेडमास्टर को नहीं बुलाया जाता। इसपर बहुत शिकवा-शिकायत हो चुकी है, पर चन्द्रकान्त की राय नहीं बदली।

आज सवेरे से तीन-चार छोटी-छोटी हल्की नावें तालाब पर तैर रही हैं। अतिथि उन्हींके द्वारा पूजा-मंच पर पहुंचाए जाते हैं। उनमें से कुछ अंजलि चढ़ाकर लौट जाते हैं, कुछ नाव पर चढ़कर तालाब में घूमते हैं। रानी वह्निकुमारी किनारे पर खड़ी हो गई। गंगागोविन्द नाव लेकर हंसते हुए उनके पास आ गए। रानी वह्निकुमारी भी हंसते हुए गंगागोविन्द की ओर देखने लगी। आज आकाश की हवा में श्री पंचमी की श्री झलक रही थी। अगरु, धूप और फूलों की सुगन्ध से हवा बोझिल हो गई। गंगागोविन्द ने नाव लेकर पास आते ही देखा कि वाणी महिमामयी मूर्ति में खड़ी है। पट्टवस्त्र की लाल सुर्ख किनारी, मांग में लाल सिंदूर, हाथ में कमल की कली। वह्निकुमारी सोच रही

थीं, हाय, गंगागोविन्द कितने दुबले हो गए। नाव किनारे पर लगते ही गंगागोविन्द ने कहा—वाणी आओ।

वह्निकुमारी हंसकर बोली—वाणी तो मर गई। मैं अब वह्नि हूं।

—तुम्हारा नया नाम मुझे याद ही नहीं रहता।

—परस्त्री का नाम याद न रहना ही अच्छा है।

वह्निकुमारी नाव में आ बैठी। नाव मंच की ओर बढ़ने लगी। थोड़ी देर दोनों चुपचाप रहे। फिर गंगागोविन्द ने धीरे से कहा—मुझे अभी तक क्षमा नहीं कर सकी वाणी ?

वह्निकुमारी के चेहरे पर मुस्कराहट नाच गई। हंसकर उसने जवाब दिया—अभी तक वह बात भूल नहीं सके ? तुम्हारी स्मरण-शक्ति पर आश्चर्य होता है।

—नहीं, कहां भूल सका ?—कहकर गंगागोविन्द थोड़ी देर चुप रहे, फिर मुस्कराकर बोले—तुम लोगों में किसीको भूल ही नहीं पा रहा हूं। तुम लोग मुझे भूलने दे कहां रहे हो ?

वह्निकुमारी की भौंहें सिकुड़ गईं। उसके कानों की हीरे की वालियां सूर्यकिरण से जगमगा उठीं। गर्दन मोड़कर उसने कहा—यानी ?

—क्यों, तुम्हें मालूम नहीं है ?

—क्या मालूम नहीं है ?

बिना कुछ बोले ही गंगागोविन्द नाव खेने लगे। फिर वह्नि को देखते हुए बोले—यह बात तो तुम्हारे न जानने की नहीं है कि तुम्हारे पति मेरी दोनों बेटियों को ज़बरदस्ती ले जाकर मेरी इच्छा के विरुद्ध मृण्मय ठाकुर के लड़कों के साथ उनका विवाह करना चाहते हैं।

सचमुच यह बात वह्निकुमारी को नहीं मालूम थी। पति का यह कार्य उसको बहुत ही नीचतापूर्ण मालूम हुआ। उसके आत्मसम्मान को ठेस लगी। गंगागोविन्द के सामने वह अपने को बहुत ही हीन महसूस करने लगी। पर ऊपर से बोली—बलवान की युक्ति बल ही है और दुर्बल की युक्ति रोना है।

गंगागोविन्द ने कहा—मैं निर्बल नहीं हूं और रो भी नहीं रहा हूं। तुम्हें तो सिर्फ किस्सा सुना दिया है।

वह्निकुमारी एकाएक बोल उठी— इसे किस्सा सुनाना कहते हो ? पीठ पीछे पति की शिकायत करके पत्नी के सामने बहादुरी जताने का लोभ ! बेटियों की शादी तो करनी ही है। मेरे पति अच्छे लड़के ढूंढ़कर विवाह कर रहे हैं, पर तुम इतने घमंडी हो कि इसपर कृतज्ञ होने की बजाय नाराज़ हो रहे हो। अहंकार की भी एक सीमा होनी चाहिए।

गंगागोविन्द इस तेजस्विनी को खूब पहचानते थे। वाणी और वह बचपन में साथ-साथ खेले हैं। गंगागोविन्द ने कहा—नाराज़ न होना वाणी, ज़रा हमारी बात भी सोचो।

वह्निकुमारी ने कहा—तुम भी तो सोचो, वे मेरे पति हैं।

नाव आकर मंच से भिड़ गई।

वाणी और गंगागोविन्द उतरकर अंजलि चढ़ाने में लग गए।

अंजलिदान खतम हो गया। चन्द्रकान्त विमुग्ध होकर सारंगी का आलाप सुन रहे थे। वह्निकुमारी पूजा समाप्त करके घर लौट गई। गंगागोविन्द अकेले बैठकर सोच रहे हैं, कितने अर्से बाद वाणी से भेंट हुई। वही वाणी जो एक दिन उनके गले में ज़बरदस्ती फूलों की माला डालकर बोली थी—तुम मेरे दूल्हा हो !—वही वाणी आज प्रबल पराक्रमी उग्रमोहन की पत्नी रानी वह्निकुमारी है। वाणी गंगागोविन्द के जीवन का पहला प्यार थी ; निष्कलंक, शुभ्र। आज इतने दिन बाद उससे भेंट हुई तो वे झगड़ बैठे। छि: छि:, अच्छा नहीं हुआ। जीवन में शायद फिर भेंट ही न हो। गंगागोविन्द वाणी को प्यार करते थे, यह बात क्या कभी वाणी जान पाई ? कभी भी तो उन्होंने उससे कहा नहीं। वाणी ने उनसे विवाह करना चाहा था, पर वह अमीर की बेटी है, इसीलिए गंगागोविन्द ने उससे विवाह नहीं किया। अमीर की बेटी होना क्या कोई अपराध है ? एकाएक गंगागोविन्द के चिन्ता-प्रवाह में बाधा पड़ गई। भजना खानसामा किनारे से उन्हें बुला रहा था। क्यों, क्या हो गया ?

नाव लेकर किनारे पहुंचे तो उन्होंने सुना कि बाहर कमलाक्ष बाबू बहुत ही परेशान हैं। बावाड़ तालाब का लगान उग्रमोहन के सिपाही बुरी तरह लूट रहे हैं। दस आदमी काफी घायल हो चुके हैं। गंगागोविन्द ने आकर चन्द्रकान्त को खबर दी। सुनते ही चन्द्रकान्त बोले—उफ, आज के दिन भी उग्रमोहन मुझे तंग कर रहा है। थाने में खबर देने को कह दो, मैं क्या करूंगा ?

कमलाक्ष बाबू भी तो यही चाहते थे।

आठ आदमी गोलोक साह को सुअर की तरह लटका कर ले गए।

वृन्दावन मोदक थर-थर कांपने लगा था। थाना पुलिस बाघाड़ तालाब के जंगल में जमा थी। इनको रोकने वाला कोई भी न था।

सभी बातों का कुछ अन्त तो होता ही है। थोड़ी देर थरथराने के बाद वृन्दावन मोदक भी आपे में आया और अपने बारे में सोचने लगा कि क्या किया जाए। आसपास के और भी दो-चार लोगों ने यह घटना देखी थी। वे भी आ जुटे और अपनी बुद्धि के अनुसार इसका कारण सोचने लगे। कोई उत्तेजित हो गया, किसीने धीरज से काम लिया, किसी-किसीने हमदर्दी से भी समझने की कोशिश की। इसमें उग्रमोहन सिंह का भी कोई हाथ है, यह किसीकी समझ में नहीं आया। एक मरियल-से युवक ने वृन्दावन मोदक को ही कसूरवार ठहराया। उसकी दलील यह थी कि वृन्दावन मोदक चिल्लाया क्यों नहीं? युवक उत्तेजित स्वर में कहने लगा—तुम्हारे चिल्लाने पर हम सब दौड़ पड़ते, फिर क्या वे साहु जी को ऐसे टांगकर ले जा सकते थे? दिन-दहाड़े एक जीते-जगाते आदमी को बांधकर उठा ले गए और तुम्हारे मुंह से बोल भी नहीं निकला?

एक ने वृन्दावन मोदक से कहा—जरा उनका हुलिया तो बताओ, कैसे थे?

—सबका चेहरा एक जैसा था, नकाब पड़ी थी, हाथों में नंगी तलवार लिए थे।

उस मरियल नौजवान ने हंसकर कहा—हूं, तलवार-वलवार देखकर ही आपका होश उड़ गया? एक बार भी आवाज़ लगा देते तो···

वृन्दावन मोदक को भी अब तैश आ गया—अरे चुप भी रहो, अभी-अभी तो बुखार ने पिंड छोड़ा है, तिल्ली बुरी तरह बढ़ी हुई है, इतनी लम्बी-चौड़ी क्यों हांकते हो?

युवक ने उत्तर देने के लिए मुंह खोला ही था कि एकाएक उसकी आवाज़ रुंध गई। हठात् एक आदमी घोड़े पर सवार होकर चिल्लाता

हुआ कह गया—खबरदार, डाकू आकर चारों ओर लूट-पाट मचा रहे हैं। उग्रमोहन सिंह की रतनपुर कचहरी लुट गई। होशियार!

इस आकस्मिक खबर से सब निर्वाक् रह गए। वृन्दावन मोदक ने ही पहले पहल बात की। उसने उस मरियल छोकरे से कहा—क्यों पट्ठे, अब तुम्हें क्या हो गया? बोलती बन्द हो गई? जाकर डाकुओं को रोको न?

युवक के चेहरे पर ऐसा भाव दिखाई पड़ा जैसे वह अभी रतनपुर के लिए रवाना ही हो जाएगा, पर पास ही उसके मामा रामकान्त मौजूद थे, इस कारण ऐसा नहीं हो सका। रामकान्त ने भांजे को बुलाकर कहा—बेकार की बकवास को छोड़कर जल्दी भीतर जा, अपनी मामी से कह दे कि सब जेवर वगैरह उतारकर सन्दूक में बन्द कर दे। और एक बात सुन—कहकर युवक को थोड़ी दूर ले जाकर उसके कान में कुछ फुसफुसाया।

वृन्दावन ने देखा कि रामकान्त अपना घर सम्हालने की तरकीब कर रहा है, उसे भी यही करना चाहिए। उसने अपनी कमर से चाभी निकाल-कर अपनी दूकान का रास्ता लिया।

दूसरों ने भी समझ लिया कि अब अपनी जान बचाने की कोशिश करना ही ठीक रहेगा और सभी अपने-अपने घर भागे।

किसी भी क्षण कोई अनहोनी हो सकती है, इसी डर से जैसे चारों ओर तनाव छा गया।

दोनों पक्षों ने जाकर थाने में इजहार दिया। दो पक्ष यानी दो पक्षों के सिपाही।

दूधनाथ पांडे अर्थात् उग्रमोहन के पक्ष ने जाकर कहा कि वह मालिक के हुक्म से रतनपुर कचहरी जा रहा था। रास्ते में बाघाड़ तालाब पड़ता था। वह भले मानस की तरह उसमें स्नान आदि करने के लिए तालाब में उतरा था। पर चन्द्रकान्त बाबू का एक सिपाही रामवृक्ष सिंह उन्हें देखकर बिला वजह गाली-गलौज करने लगा और ढेले भी चलाए। यह एकदम

अकारण नहीं था क्योंकि रामवृक्ष सिंह कुछ दिन पहले उग्रमोहन सिंह के पास नौकरी की फरियाद लेकर गया था, पर दूधनाथ पांडे की वजह से उसका मतलब पूरा नहीं हो पाया, इसीलिए दूधनाथ पांड़े से ही उसकी खार थी। रामवृक्ष ने ढेला चलाकर एक सिपाही को चोट पहुंचा दी, इसी-से दंगे की शुरुआत हुई।

रामवृक्ष सिंह ने प्रतिवाद किया और कहा कि बात कुछ और ही है। पोखरे में मछली मारी जा रही थी। दूधनाथ पांडे के हुक्म से कुछ सिपाहियों ने जाकर मछुओं का जाल तोड़ दिया। रामवृक्ष सिंह के मना करने पर खुद दूधनाथ पांडे ने उसे साला कहकर ज़ोर से गाल पर तमाचा मारा, दंगे की शुरुआत यह है।

दरोगा जी ने दोनों का बयान लिख लिया और दोनों पक्ष के गिरफ्तार दंगाइयों का चालान कर दिया।

गोलोक साह का हरण कुछ बहुत ही भयानक डाकुओं की करतूत मानी गई। उग्रमोहन की रतनपुर कचहरी में भी ऐसी ही एक घटना हो गई। इसलिए इस बारे में दरोगा जी को कोई सन्देह नहीं रहा कि यह डाकुओं का ही काम है। उन्होंने चौकीदार, जमादार और सिपाहियों, सभी को होशियार करके इस मामले की रिपोर्ट सदर भेज दी। बंजारों और बंजारिनों का गिरोह गिरफ्तार कर लिया गया।

फुलकि जाकर हवालात में हाज़िर हो गई।

## १६

उग्रमोहन सिंह वाहिनी नदी में बजरे की छत पर बैठकर पश्चिम दिशा की ओर एकाग्र दृष्टि से देख रहे थे। सूर्य अस्त हो रहा था। अस्तगामी सूर्य की किरण से जंगली नदी वाहिनी अपूर्व सुन्दर दिखाई पड़ रही थी। पानी पर चकवों का एक झुंड तैर रहा था। उनके नारंगी रंग के बदन पर, वाहिनी के किनारे जाड़े के कारण सूनी विरल पत्तों पर अस्तगामी सूर्य की अरुण छटा स्वप्नलोक की सृष्टि कर रही थी। उग्रमोहन चित्रवत् बैठकर यह दृश्य देख रहे थे। दूर आसमान में उजले बगुलों की एक पांत उड़ रही थी, जैसे सन्ध्या की केशराशि पर श्वेत पुष्पों की माला हो।

आहट सुनकर उग्रमोहन ने पीछे मुड़कर देखा, अघोर बाबू आए हैं। पूछा—कहो।

—मानिक मंडल आया है।

—यहीं बुलाओ।

मानिक मंडल चूहे की तरह आकर सलाम करके खड़ा हो गया।

उग्रमोहन ने पूछा—कोई खबर लगी ?

—जी, ठीक-ठीक खबर तो अभी नहीं मिली, पर अन्दाज़ यह है कि दोनों लड़के टाल जंगल में हैं।

—कैसे समझे ?

मानिक मंडल अपनी चंचल आंखों में कुछ बुद्धि की ज्योति झलका-कर बोला—एकाएक उन लोगों ने मोहनिया घाट को बन्द कर दिया।

मांझी-मल्लाह वहां एक भी नहीं है ।

—तो घाट बन्द है ?

—जी हुजूर ।

उग्रमोहन की भौंहें चढ़ गईं । फिर से पूछा—तो लोग पगली नदी कैसे पार कर रहे हैं ? कैसे जा रहे हैं ?

अघोर बाबू ने कहा—मोहनिया घाट से टाल के अलावा और कहीं नहीं जाया जाता । वह तो उस तरफ का खास घाट है, सरकारी घाट नहीं । टाल जंगल को तो चन्द्रकांत बाबू ने बंदोबस्त में नहीं दिया है । वह उनका खास जंगल है । इसीलिए मोहनिया घाट बंद करने से आम लोगों को कोई दिक्कत नहीं होती । लोग पगली नदी छर्रामारी घाट से होकर पार करते हैं । वह यहां से करीब आठ कोस पर है ।

उग्रमोहन सिंह की भौंहें तनी ही रह गईं ।

फिर एकाएक उन्होंने कहा—मानिक मण्डल, तुम आज यहीं पर रहो, मैं सिपाही भेजकर खबर करता हूं और सिपाही से अपने घर भी खबर भेजवा दो कि तुम आज घर नहीं लौट पाओगे । अब तुम जाकर नीचे ठहरो ।

मानिक मंडल इस हुक्म का मतलब नहीं समझ पाया । उसने हकलाते हुए कहा—हुजूर, मेरे दूसरे लड़के को बुखार चढ़ा था, नहीं तो···

उग्रमोहन ने कहा—तुमने जो खबर दी, जब तक यह पता न चल जाए कि खबर एकदम ठीक है, तब तक तुम्हें नहीं छोड़ा जाएगा । जब सिपाही आकर तुम्हारी बात को ठीक बताएं, यानी, मोहनिया घाट बन्द है, यह मालूम हो तभी तुम छोड़े जाओगे, पहले नहीं । जाओ, फिजूल की बातें मत करो !

मानिक मंडल डरकर नीचे चला गया ।

उग्रमोहन अघोर बाबू से बोले—तुम अभी बीस सिपाही भेज दो । पहले वे मोहनियां घाट जाएं । अगर घाट बन्द हो तो एक आदमी लौटकर हमें खबर देगा । अगर बन्द न हो तो भी खबर दे । घाट बन्द रहने

पर छर्रामारी घाट होकर पगली पार करके आज रात में ही वे चंद्रकांत की टाल कचहरी पहुंचें। मृण्मय के लड़के वहां हों तो उन्हें जबरदस्ती छीन लाएं। अगर ला सके तो हरएक को अच्छी-खासी बख्शीश मिलेगी, समझे ?

—जी हां।

अघोर बाबू नीचे चले गए।

उग्रमोहन फिर से पश्चिम दिशा की ओर देखने लगे, देखते रहे। शाम का अंधेरा बढ़ता जा रहा है फिर भी अस्तगामी सूर्य की किरण जैसे बुझकर भी नहीं बुझ रही है।

## १७

मिसिर जी मल्हार, गा रहे हैं :

**बादर झुमि-झुमि आए।**

तबल्ची संगत कर रहा था। चन्द्रकांत तकिए में टिक कर सुन रहे थे। उनकी आंखें मुदी हुई थीं। बदन पर एक मुलायम बालापोश और हाथ में फर्शी की नली थी। चारों ओर अम्बूरी तम्बाकू की खुशबू गमक रही थी। चन्द्रकांत बीच-बीच में कश ले रहे थे। गाना खूब जम गया है।

ऐसे समय में रस भंग करना ठीक नहीं होगा। यह सोचकर कमलाक्ष बाबू बाहर ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। गाना जितना ही जम रहा है, कमलाक्ष बाबू का अधैर्य उतना ही बढ़ रहा है। मालिक के साथ भेंट करना बहुत ज़रूरी है। बाघाड़ तालाब के मामले में उग्रमोहन बाबू को भी लपेटना ठीक रहेगा या नहीं, यह एक बार चन्द्रकांत से पूछ लेना ज़रूरी है। गाना खतम होते ही वह चट् से अपना काम कर लेंगे, पर मिसिर जी का गाना रुकने में ही नहीं आता था। मिसिर जी उच्छ्वास के साथ गाते जा रहे थे :

**बादर झुमि-झुमि आए**<br>
**बरन-बरन बरसन प्राण प्यारे**

चन्द्रकांत आंख मूंदकर गाना भी सुन रहे हैं और कुछ सोच भी रहे हैं। थानेदार भले ही न समझ पाया हो, पर चन्द्रकांत अच्छी तरह समझ रहे थे कि उग्रमोहन ने ही गोलोक साह को गायब कर लिया और पुलिस को गलतफहमी में डालने के लिए अपने आप रतनपुर की कचहरी लुटवा

ली है। एक साधारण आदमी होते तो चन्द्रकांत सारी अन्दरूनी बातों पर नमक-मिर्च लगाकर पुलिस को इत्तला कर देते, पर उनका रास्ता ही न्यारा है। वे शतरंज के नामी खिलाड़ी हैं। सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे, नीति के अनुसार इस समस्या को सुलझाया जा सकता है या नहीं, वे यही सोच रहे थे। टाल जंगल में मृण्मय ठाकुर के दोनों लड़कों को रोक रखा है, उसका भी जल्दी ही कुछ बन्दोबस्त होना चाहिए। दोनों ही समस्याएं बड़ी जटिल हैं। इसलिए यद्यपि मिसिर जी बड़ी तन्मयता से गा रहे थे और तबल्ची बिल्कुल सही तौर पर झपताल का ठेका दे रहा था, फिर भी चन्द्रकांत संगीत में पूरी तरह विभोर नहीं हो पाए। यानी वे संगीत की आड़ में इन विषयों पर शुरू से आखिर तक सोच लेने की कोशिश कर रहे थे। गाना खतम हो गया। चन्द्रकांत ने कहा—बहुत अच्छा!

कमलाक्ष बाबू घात लगाए बैठे थे। मौका पाते ही गला बढ़ाकर झांकने लगे। उन्हें देखते ही चन्द्रकांत ने कहा—तुम खा-पीकर यहां आ जाना, तुम्हें बाहर जाना है। विरंची को कह दो हौदा कसकर हाथी तैयार कर दे। और हां, ज़रा राधिकामोहन को भी बुलवा लो।

क्या से क्या हो गया, सोचकर कमलाक्ष बाबू चुप रह गए।

उनके चले जाने पर चन्द्रकांत ने मिसिर जी से कहा—एक और भी हो जाए मिसिर जी।

मिसिर जी हंसकर बोले—जी हुज़ूर।

कुछ देर सोचकर मिसिर जी ने कहा—तो सूरदासी मल्हार सुनिए। गांधार वर्जित सोरठ।

फिर तबल्ची से बोले—बजाओ चौताल।

सूरदासी मल्हार में मिसिर जी ने छेड़ा :

**आधोमुख नीलाम्बर सों ढांकी**
**बिथुरी अलक कैसी है**
**एक दिशा मानों मकर चांदनी**

एक दिशा घन बिजुरी
ऐसे हरि मन मो हैं।

संगीत समाप्त करके मिसिर जी चले गए, पर चन्द्रकांत उसी तरह बैठे रहे। राधिकामोहन ने आकर देखा कि चन्द्रकांत आंख मूँदे तम्बाकू पी रहे हैं। उनकी आहट मिलने पर भी उन्होंने आंख नहीं खोली तो राधिकामोहन ने कहा—हुजूर ने मुझे याद किया है...

आंख खोलकर चन्द्रकांत ने कहा—हां, बैठो।

राधिकामोहन बैठ गया तो वे बोले—देखो, उस दिन जब तुम गोलोक साह के पास रुपये लेने गए थे, तब वहां कोई और था क्या ?

—कहां पर ?

—गोलोक साह के घर पर।

—जी नहीं।

चन्द्रकांत कुछ सोचकर बोले—तो फिर यह बात ज़ाहिर कैसे हुई ? गोलोक साह तो किसीको बताने वाला आदमी नहीं है।

तब राधिकामोहन ने कुछ सोचकर कहा—क्यों ? बात खुल गई क्या ? मैं जब रुपया जमाकर रहा था तो माधव गुमाश्ता ने मुझसे पूछा था कि ये रुपये कहां से आए ? मैंने उसे बता दिया था। हुजूर ने बताने की मनाही तो नहीं की थी।

चन्द्रकांत ने कहा—तुम उस गुमाश्ता को भेजकर जाओ।

थोड़ी देर बाद माधव घोषाल गुमाश्ता आ गया। पूछ-ताछ करने पर चन्द्रकांत को मालूम हो गया कि उसने मानिक मंडल से यह बात बताई थी। उसे विदा करके चन्द्रकांत मन ही मन हंसे। यानी अब असली बात खुल गई।

थोड़ी देर बाद कमलाक्ष बाबू आ पहुंचे। चन्द्रकांत ने कहा—देखो, तुम अभी सीधे टाल जंगल जाकर दोनों लड़कों को आज रात में ही नबी-पुर कचहरी में पहुंचा दो। मोहनिया घाट क्या अभी तक बन्द है ?

—जी हां।

—अच्छी बात है, तुम हाथी से ही नदी पार कर जाओ, समझे! वहां जाकर दोनों लड़कों से कहना कि गलती से टाप जंगल भेजने के कारण मैं बहुत शर्मिन्दा हूं। मांझी बीमार होने की वजह से घाट दो दिन से बन्द था। इसीलिए तुम लोगों को वापस लाने का इन्तज़ाम नहीं हो सका। अब तुम लोगों को घर पहुंचाने के लिए ही हाथी ले आया हूं। वे हाथी पर सवार हो जाएं तो कुछ दूर जाकर कहना कि बड़ा मुश्किल हो गया, हाथी ने नवीपुर कचहरी का रास्ता पकड़ लिया। निमाई नगर की ओर जाएगा ही नहीं। यह बात बिरंची से कहलाना। उसे पहले से सिखा-पढ़ा लेना। विश्वास और उसके लड़कों को भी साथ ले लेना, समझे?

—जी हां!

—ठीक-ठीक कर लोगे न?

—जी हां।—कहकर कमलाक्ष भीगी बिल्ली की तरह मालिक की ओर देखने लगे।

चन्द्रकान्त ने कहा—देख लो हाथी तैयार है या नहीं। हां, एक काम और है, जाते समय थाना होकर जाना। दरोगा जी से जान-पहचान है न?

—जी हां।

—अच्छा तो सुनो—कहकर चन्द्रकान्त उनके कानों में कुछ कहकर बोले—ज्यादा नहीं, ज़रा वे मानिक मंडल को धमका दें।

—जी हुज़ूर!—कहकर कमलाक्ष विदा हुए।

थोड़ी देर में घन-घन घंटे की आवाज़ करता हुआ चन्द्रकान्त राय का हाथी मोहनिया घाट की ओर रवाना हो गया।

मैनेजर के चले जाने पर चन्द्रकान्त सितार लेकर विहाग का आलाप करने लगे। थोड़ी देर आलाप करने के बाद उन्होंने रुककर हांक लगाई—ओ भजना, भजना!—उसके आने पर उन्होंने कहा—कागज, कलम और दवात तो ले आ।—भजना कागज़-कलम और दवात की

खोज में चला गया। चन्द्रकान्त फिर से विहाग में जुट गए। भजना ने लौटकर देखा कि मालिक बजाने में तन्मय हैं। वह चुपके से कागज़-कलम-दवात मालिक के पास रखकर बाहर चला गया। चन्द्रकान्त को कुछ मालूम न हो सका।

विहाग रागिनी को चन्द्रकान्त ने एकदम निचोड़ डाला तभी उनकी आंखें खुली और वे सामने रखे कागज-कलम और दवात देख पाए। शरारती बालक की तरह उन्होंने बाएं हाथ से लिखा :

"गोलोक साह को छोड़ने पर ही अजय-विजय मिलेंगे, नहीं तो नहीं।"

चिट्ठी लिखकर उन्होंने फिर से भजना को बुलाया, बोले—जमादार सीताराम पांडे को तो बुला ला।

वृद्ध जमादार सीताराम पांडे आए तो चन्द्रकान्त ने कहा—यह चिट्ठी उग्रमोहन के नौकर व्रज के हाथ में देनी होगी। तुम खुद मत जाना, किसी और के हाथ भेजवा देना। वह व्रज को यह भी बतला दे कि उग्रमोहन बाबू के घर लौटते ही चिट्ठी उन्हें ज़रूर मिल जाए।

सीताराम पांडे ने शरारत भरी दृष्टि से देखा और पत्र लेकर चला गया।

जब सभी चले गए तो चन्द्रकान्त एकदम अकेले बैठे रह गए। अब उन्हें गाना-बजाना रुच नहीं रहा था। उग्रमोहन अभी तक नहीं लौटे, शतरंज बंद है। एकाएक चन्द्रकान्त के मन में आया कि अगर उग्रमोहन न होते तो उन्हें शायद वानप्रस्थ लेना पड़ता। उग्रमोहन ही उनके जीवन के एक मात्र सहारा हैं, वही उनकी प्रतिभा की प्रेरणा भी हैं। उग्रमोहन रूपी सख्त पत्थर पर बार-बार न घिसी जाती तो चन्द्रकान्त की अक्ल की छुरी पर जंग लग जाता।

सचमुच ही चन्द्रकान्त इस दुनिया में अकेले हैं। मां-बाप मर चुके। बहन की शादी हो गई है। स्वयं विवाह नहीं किया तो अपना कौन रहा? कोई भी नहीं। केवल विशाल ज़मींदारी है और उसकी लम्बी-

चौड़ी व्यवस्था, पर उससे क्या ? दिल कब भरता है ? अन्तर की भूख मिटाने के लिए जिस अमृत की ज़रूरत है, वह चन्द्रकान्त को नहीं मिला। उनकी ज़िन्दगी में जिन नारियों ने पदार्पण किया था, उन सभी में पण्य-रमणी की मूर्ति दीख पड़ी। सबकी सब जैसे अपने को नीलाम करना चाहती हैं, जो बढ़कर बोली लगाएगा, वे उसीकी हो जाएंगी। सभ्य समाज में उन्होंने जहां तक देखा यही मालूम हुआ कि जिस तरह जूते, कपड़े, हाथी खरीदे जाते हैं, प्रेम भी उसी तरह खरीदा जाता है।

हाथी, जूता, प्रेम अब किसी चीज़ पर उनका मोह नहीं रह गया है। अन्तर्लोक के निर्जन महाशून्य में उनकी निस्संग आत्मा निस्संग नक्षत्र की तरह अकेले तप रही है।

थोड़ी देर तक गुपचुप बैठे रहने के बाद चन्द्रकान्त ने भजना को आवाज़ दी। उसके आने पर चन्द्रकान्त ने उसे जूता और छड़ी लाने की आज्ञा दी।

चन्द्रकान्त अंधेरे में अकेले बाहर चले गए। ड्योढ़ी के सिपाही ने टन्-टन् करके बारह का घंटा बजाया।

दिन का संसार निद्रामग्न हो गया तो रात का संसार जाग उठा। दिन के संसार की सारी ज्योति समेटकर सूर्य डूब गया। रात के आकाश पर करोड़ों सूर्य आए तो भी अंधेरा ज्यों का त्यों बना है। रात के संसार के प्राणों का स्पन्दन सुनाई पड़ रहा है। बहुत ही मृदु और अव्यक्त ध्वनि—शब्दहीन पर सुस्पष्ट। दिन के संसार में मनुष्य का कोलाहल रहता है, इस कारण संसार के प्राणों का स्पन्दन सुनाई नहीं पड़ता।

नदी के किनारे चन्द्रकान्त अकेले टहलते रहे। कितनी ही बातें याद आ रही हैं। कितने भाव मन में उठ रहे हैं, जो भाषा में बांधे नहीं जा सकते। जो भाषा में आ सकते हैं, उन्हें कहने की इच्छा नहीं होती। गहरी रात के आकाश की तरफ देखकर सारी भाषा स्तब्ध हो जाती है। विस्मित मन में केवल यही दो बातें जागती हैं, मैं कितना क्षुद्र हूं, पर

कितना विराट भी हूं !

एकाएक अकारण चन्द्रकान्त को सुजाता की याद आई। सुजाता की दो आंखे जैसे उनको घूर रही हैं। उन आंखों से नीरव वेदना टपक रही थी, उसीके आंसू से चन्द्रकान्त का सारा हृदय जैसे भर गया।

सुजाता चली गई तो कमला आई, चंचल, हंसमुख कमला। चन्द्रकान्त की क्षुधित आत्मा अतीत के अंधेरे में मानो किसीको ढूंढ़ रही है। उनके मन में विहाग का वह पद बार-बार आने लगा :

**श्याम मोरी आंखन बीच समाय रहो**
**लोग जाने कजरा रे।**

झूठ, झूठ, सब झूठ है। कवि की निरी कल्पना। राधिका, कल्पना है; कृष्ण, कल्पना है। प्रेम भी कल्पना है। केवल कवित्व सत्य है। सत्य है, केवल संगीत और सुर की मादकता। उसी मादकता में डूबकर सारी दुनिया राधा के विरह में रोती फिरती है।

बादलों की परतें चीरकर कृष्णपक्ष का चांद निकल आया। अन्धकार की यवनिका हट गई। रंगमंच पर नये नट और नटियों का आगमन हुआ। स्वच्छ सलिला चन्दना नदी और उसके दूसरे किनारे रेत दिखाई पड़ रही है। तेजी से बहती हुई तन्वी चन्दना मानो किसीके अभिसार में दौड़ी जा रही है। और व्यर्थ प्रेमिक शुभ्र बालुई मैदान स्वप्न में आच्छन्न पड़ा है। रेतीला मैदान अनन्त स्वप्न में निमग्न पड़ा है। स्वप्न ही तो उसका एकमात्र सहारा है। वह प्रतीक्षा कर रहा है कि कब बाढ़ आएगी और किनारे के बंधन को तोड़कर व्याकुल चन्दना कब उसे अपने गंदले तरंगोच्छ्वास से प्लावित कर देगी। वर्षा आती तो है पर ठहरती नहीं। चंदना के स्रोत में कितनी बरसातें आईं और कितनी निकल गईं, रेतीला मैदान कितनी बार डूबा और कितनी बार उबरा, चन्दना आज भी बह रही है। रेतीला मैदान आज भी जाग रहा है। चिरन्तन कहानी है।

चन्द्रकान्त नदी के किनारे गए। नज़दीक से ही एक मछुए की नाव से कोई गा उठा :

आधी रात रे पपिहरा पिया पिया बोले
पिया पिया बोले रे पिया, पिया गए विदेश
कैसे भेजूं रे सन्देश ।

वही चिरन्तन विरह का हाहाकार। आकाश, वायु, नदी, रेतीला मैदान, मानव-मानवी सभीके मन में वही एक सुर गूंज रहा है—नहीं मिला रे नहीं मिला। जिसे चाहता हूं, सही लग्न में वह नहीं मिल सका। वह दूर ही रह गया। एकाएक चन्द्रकान्त को फुलकी याद आई। उस छोकरी के साथ परिचय करके देखा जाए क्या होता है। पर तुरन्त ही उनका सारा हृदय बोल उठा—नहीं, नहीं, पास न जाना। पास जाने से ही मोह टूट जाएगा। मोह टूटने पर फुलकी भी बुझ जाएगी। सुजाता के पास तो गए थे, पर क्या बना? उस वणिक् वृत्ति को देखकर सिहर उठे थे, दुनिया भर की नारियों की मनोवृत्ति शायद ऐसी ही है। दिल पर राख का यह ढेर जमा करके क्या होगा? इससे तो दूर रहकर स्वप्न देखना ही भला है।

झुंड के झुंड जुगनू टिमटिमा रहे हैं। कभी जल रहे हैं, और कभी बुझ रहे हैं। उन्हें दूर से ही देखो। अगर हो सके तो कविता करो, आनन्द मिलेगा, पर अगर जुगनू पकड़कर उसका विश्लेषण करो तो देखोगे कि वह एक कीड़ीमात्र है। कविता क्षणभर में उड़ जाएगी।

कुछ धुंधलका और कुछ अंधेरा भी चाहिए। अस्पष्ट और अनजान को लेकर मन स्वप्न रचना चाहता है, सब कुछ जानने की कोशिश मत करो। सब जान भी तो नहीं सकोगे। सर्वज्ञ होने की व्यर्थ चेष्टा से जीवन ही व्यर्थ हो जाएगा। चन्द्रकान्त के मन में कितनी ही बातें आईं-गईं। वे अकेले अंधेरे में टहलते रहे।

जब घर लौटे तो सवेरा होने में देर नहीं थी। पूर्व की ओर लाली दिखाई पड़ रही थी। दो-एक पक्षी कुछ दुविधा के साथ बोलकर चुप हो जाते हैं। चन्द्रकान्त सोचने लगे कि सोएं या नहीं, तभी उन्होंने देखा कि गंगागोविन्द गेट होकर आ रहे हैं।

चन्द्रकान्त ने हंसकर पूछा—आज इतने सवेरे निकल पड़े ?

गंगागोविन्द उत्तर में सिर्फ मुस्करा पड़े, फिर बोले—थोड़े दिन पहले उपनिषद् में पढ़ा था—

**अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो**
**रूपं रूपं प्रतिरूपं बभूव।**
**एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा**
**रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ।।**

चन्द्रकान्त ने पूछा—यानी ?

—यानी एक ही अग्नि दाह्यवस्तु के भिन्न होने से जैसे भिन्न-भिन्न रूप धारण करता है, उसी प्रकार एक ही आत्मा विभिन्न वस्तुओं में विभिन्न रूपों में प्रकाशित होती है। इसकी सचाई मैंने आज ही महसूस की।

चन्द्रकान्त ने कहा—तुम्हारी पहेली कुछ समझ में नहीं आ रही है भाई।

गंगागोविन्द हंस पड़े, बोले—जागरण के जगत् में जो व्यक्ति बहुत ही रूढ़-कठोर होता है, स्वप्न-जगत् में वह उतना ही कोमल हो सकता है। आज प्रमाण मिल गया।

—कौन-सा प्रमाण ?

—अभी-अभी एक स्वप्न देखकर आया हूं।

—कैसा स्वप्न ?

—वाणी को स्वप्न में देखा। वाणी यानी रानी वह्निकुमारी।

चन्द्रकान्त बोले—यह बात है।

## १८

शायद उग्रमोहन सिंह जिन्दगी में इतना विस्मित और कभी नहीं हुए थे। मृण्मय ठाकुर के दोनों लड़के हाथ से निकल गए। किसी तरह उनका पता नहीं चल रहा है। चेष्टा में कोई त्रुटि नहीं है, पर सफलता की कोई सम्भावना नहीं दिखाई पड़ती। कल सिपाहियों से खबर मिली है कि टाल जंगल में कोई नहीं है। चन्द्रकान्त बाबू के एक सिपाही से उन लोगों ने सुना कि मृण्मय ठाकुर के लड़कों के साथ कमलाक्ष बाबू हाथी पर निमाई नगर की ओर गए हैं। यह सुनकर सिपाही निमाई नगर गया था, पर वहां भी कोई नहीं मिला।

कुछ देर हुई, मृण्मय ठाकुर दो सिपाहियों के साथ कमलाक्ष बाबू पर पुत्र-हरण का मुकदमा दायर करने के लिए थाने में गए हैं। उग्रमोहन को थाना-पुलिस करना पसन्द नहीं था, पर मृण्मय ठाकुर ने जब बहुत आग्रह किया और कोई रास्ता नहीं रहा तब वे राजी हो गए। सवेरे व्यायाम करने के बाद उग्रमोहन सिंह यम जंगल कचहरी के पास वाले रास्ते पर टहल रहे थे। उनके मन में ज़रा भी आनन्द नहीं था। चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं पड़ी हुई थीं।

तीन दिन से वे घर नहीं गए थे। बजरे पर, घोड़े की सवारी में, गोशाला में और यम जंगल में तूफान की तरह दौड़ रहे थे। पर मृण्मय ठाकुर के लड़कों का कोई पता नहीं चला।

अघोर बाबू की सलाह का फायदा भी उन्हें नहीं मिल सका। दिन को अघोर बाबू रुमनी-झुम्नी को लेकर गोशाला में व्यस्त रहते हैं। रात

को उन्हें गोलोक साह पर निगरानी रखनी पड़ती है। गोलोक साह चामा मैदान की काली बाड़ी में कैद है। चामा चार कोस का एक विस्तृत मैदान है। जितनी दूर तक दृष्टि जाती है ऊसर ही ऊसर दिखाई पड़ता है और फिर दृष्टि क्षितिज पर अटक जाती है। चामा का मैदान निर्जन रहता है। इसके सम्बन्ध में अनेक दन्तकथाएं प्रचलित हैं, जिन्हें सुनने से साधारण लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कहते हैं कि उस मैदान में भूत-प्रेत, पिशाच दिन-रात घूमते रहते हैं। जाने कितने लोग भटककर उस मैदान में जान खो चुके हैं। इस प्रान्तर की अधिष्ठात्री देवी महाकाली हैं। मैदान के ठीक बीचोबीच महाकाली का मन्दिर है। बहुत प्राचीन मन्दिर और काली की मूर्ति बड़ी भयंकर है। इस निर्जन प्रान्तर में यह मन्दिर किसने बनवाया, यह भी किसीको नहीं मालूम। आजकल चामा का मैदान उग्रमोहन सिंह की ज़मींदारी में है। एक निष्ठावान ब्राह्मण सिपाही मन्दिर का रक्षक और पुजारी भी है। इसी मन्दिर के एक कमरे में गोलोक साह को कैद रखा गया है।

उग्रमोहन सिंह अकेले जंगल में टहल रहे थे। उनके उद्भ्रान्त चित्त में कई अद्भुत और असम्भव कल्पनाएं उठ रही थीं। वे सोच रहे थे कि यदि रुमनी-झुमनी के साथ अजय-विजय की शादी न हुई तो वे इस फटी आंख वाले मृण्मय की हत्या करके उसका सिर काटकर चन्द्रकान्त को भेंट कर देंगे। फिर तुरन्त सोचते, मृण्मय का क्या कसूर है, वह तो अब कोई भी आपत्ति नहीं कर रहा है। वरन खुद थाने में जाकर अपने मन से लड़कों को ढूंढ़ निकालने की कोशिश कर रहा है।

अगर कमलाक्ष को गायब कर लिया जाए तो कैसा रहे? भीखन तिवारी के आने से उनकी विचारधारा छिन्न हो गई। उसने कहा—चन्द्रकान्त बाबू का खत आया है।—पत्र पढ़कर उग्रमोहन दंग रह गए। खत में लिखा था :

मित्र! तुम्हारे भावी नतजमाई तुम्हारी नतिनों के दर्शन की अभिलाषा लेकर घर से रवाना हुए थे। पर भटककर यहां-वहां घूम रहे

हैं। अमर-गाथा उन्हींसे सुनना। सुन रहा हूं, व्याह तेईस माघ को है। इस विवाह के उपलक्ष्य में ही लखनऊ से बाई जी को मंगाने का प्रबंध कर दिया। मीर साहब भी आएंगे। इस मौके पर कुछ आमोद-प्रमोद कैसा रहेगा ? तुम कब लौटोगे ! शतरंज खेले बहुत दिन हो गए।

चन्द्रकान्त

ज्योंही उग्रमोहन पहुंचे त्योंही अजय-विजय ने आकर उनका चरण छुआ। उन्होंने देखा कि वे चन्द्रकान्त की पालकी से ही आए हैं। उग्रमोहन को कुछ समझ में नहीं आया कि कैसे क्या हो गया। चन्द्रकान्त राय को भी कम आश्चर्य नहीं हुआ था। गंगागोविन्द ने आकर उन्हें मजबूर किया था। उनका अनुरोध था कि मृण्मय के लड़कों को लौटा दिया जाए। उन लड़कों के हाथ में ही उन्होंने रुमनी-झुमनी को सम्प्रदान करने की सोच ली है। उस दिन भोर में स्वप्न देखने के बाद से उनकी राय बदल गई थी।

मनुष्य का विचार किस कारण से और कब बदलता है, इसका निर्णय करना असम्भव-सा है।

उग्रमोहन ने अजय-विजय का बड़े तपाक से स्वागत किया। उन्हें बैठाकर उन्होंने चन्द्रकान्त को एक पत्र लिखा :

भाई चन्द्रकान्त,

अजय और विजय सकुशल पहुंच गए हैं। उनकी अमर-गाथा मुझे मालूम है। नाच-गाने का प्रबंध करके तुमने अच्छा ही किया। मैं आज रात को ही लौटूंगा।

उग्रमोहन

पुनश्च :—तुम बाई जी के बुलवाने का प्रबंध करो। महफिल सजाने का भार मेरे ऊपर रहा।

चिट्ठी लेकर चन्द्रकान्त के सिपाही चले गए तो उन्होंने अजय-विजय को पालकी से सदर यानी अपने महल भेजवा दिया।

सबके चले जाने पर उग्रमोहन के तन-मन में बेचैनी-सी महसूस हुई।

आखिर चन्द्रकान्त ने अजय-विजय को लौटा ही दिया। डरकर या दया से ? इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर नहीं मिल सका तो वह घोड़े पर सवार होकर वहां से निकल पड़े।

उस रात को उग्रमोहन और चन्द्रकान्त शतरंज खेलने बैठे। बहुत दिनों से उन्होंने ऐसा खेल नहीं खेला था। आधी रात बीत गई फिर भी दोनों जने शतरंज पर निगाह जमाए निस्पन्द बैठे रहे।

## १९

रुनकी-झुमकी के विवाह को लेकर महाबली दो ज़मींदार उग्रमोहन और चन्द्रकान्त मग्न हो गए। कलकत्ता से अंग्रेज़ी बाजा, लखनऊ से हसीना बाई, आगरे से सितारी मीर साहब और बनारस से कई प्रसिद्ध पहलवान आए हैं। दो ज़मींदारों के इलाके में जितने ढोल, कांसी, बांसुरी, खंजड़ी, जहां जो था, सभी आ जुटे। विचित्र शब्द-समन्वय से चारों ओर चहल-पहल मची हुई थी। गांव के बीच में और उसके ऐन बाहर के सभी मैदानों में तम्बू तन गए थे। उग्रमोहन और चन्द्रकान्त के सम्मानित मेहमानों को तम्बू में टिकाया गया है। स्नान और भोजन में त्रुटि न हो, इसलिए हर तम्बू में अलग से रसोइया, नौकर और रसोई का इन्तज़ाम है। भंडारी ज़रूरत और फर्माइश के अनुसार हर तम्बू में सीधा पहुंचा रहे हैं। उग्रमोहन और चन्द्रकान्त खुद हर तम्बू में जाकर उनका स्वागत-सत्कार कर रहे हैं। दोनों की ही कचहरी में बड़े-बड़े चौपालों में कतार के कतार भट्ठे चढ़े हैं। पूड़ी-मिठाई तैयार की जा रही हैं। दिन-रात खाने-पीने का प्रबंध चल रहा है। चारों तरफ 'दीयताम् भुज्यताम्' का रौला मचा हुआ है। दोनों पक्षों के नायब गुमाश्तों से लेकर रसोइया तक सबका गला बैठ गया है। संताल युवक-युवतियों का एक झुंड बड़े आनन्द से नाच रहा है। वे लोग कतार बनाकर खड़े मादल की ताल पर गाना गाते हुए मेहमानों का मनोरंजन कर रहे हैं। कहीं बड़े ठाट-बाट से झूमर हो रही है। वहां भी कुछ दर्शक मुग्ध होकर खड़े हैं। सुखपुर गांव की रामलीला पार्टी भी इस मौके पर अपनी कला दिखाने से

बाज नहीं आई। हनुमान का अभिनय वाकई बड़ा दिलचस्प रहा। वहां भीड़ भी ज़्यादा है। उग्रमोहन सिंह और चन्द्रकान्त राय के कुल मिलाकर छः हाथी और हथनियां हैं। रुमनी-झुमनी के विवाह के उपलक्ष्य में उन्हें विचित्र ढंग से सजाया गया है। किसीकी पीठ पर हौदा, किसीकी पीठ पर ज़री की कामदार मखमली लम्बी-चौड़ी झूल। कोई बाजे की ताल पर झूम रहा है, कोई विशाल दांतों से सबको भीत और चमत्कृत कर रहा है। उनके माथे पर तेल और रंग से बड़ी सुन्दर चित्रकारी की गई है।

महावत भी आज खूब बने-ठने हैं, हेई, धत्, बीरी··· आदि विचित्र शब्द कहकर वे काम से या बेकार ही हाथियों को खूब घुमा रहे हैं।

विभिन्न रंग के बड़े-बड़े घोड़े भी ठाठ से सजाए गए हैं। रामप्रसाद सिपाही एक काली घोड़ी पर सवार होकर बैंड पार्टी के सामने जाकर अपना कौशल दिखा रहा है। बैंड की ताल पर घोड़ी को गर्दन हिला-हिलाकर नाचते देखकर सब ताज्जुब कर रहे हैं। उग्रमोहन सिंह के मकान के सामने के मैदान में बनारस के पहलवानों की शानदार कुश्ती शुरू हो गई है। दो भीमकाय पहलवान महापराक्रम के साथ मल्लयुद्ध में जुटे हैं। दोनों युद्धरत वीरों को घेरकर विस्मित दर्शकों का झुण्ड खड़ा है।

थोड़ी दूर पर उग्रमोहन सिंह के हुक्म से एक बहुत बड़ा शामियाना लगाया जा रहा है। अक्षय गुमाश्ता १५-२० मजदूरों को लेकर खूब हल्ला कर रहा है। रात बारह बजे के बाद इस शामियाने में हसीनाबाई प्रकट होंगी, पर मालिक का हुक्म ऐसा है कि शाम के पहले ही शमियाना लग जाना चाहिए। फलस्वरूप अक्षय जी-जान से काम में जुटा है।

चन्द्रकान्त टिपाडांगा के ज़मींदार के तम्बू में बैठे हैं। टिपाडांगा के ज़मींदार संगीत के कद्रदान हैं। प्रसिद्ध सितारी मीर साहब के सितार का जमावड़ा उनके तम्बू में है। गांव का तबल्ची विष्णुपद बहादुरी दिखाने के लिए मीर साहब के सितार के साथ संगत करने गया तो उसकी अच्छी-खासी भद्द हुई। मीर साहब कृपामिश्रित हंसी के साथ उसे संशो-

धित करते जाते हैं। मीर साहब का खास तबल्ची करीमखां विष्णुपद का संकट देखकर मुंह फेरकर हंस रहा है।

बगल के एक तम्बू में ताश का खेल चल रहा है। खेलातगंज के चौधरी बाबू के घर से लड़के आए हैं। अपने साथ आए हुए अपने बहनोई साहब को ताश में पिसवाकर वे बड़े खुश हो रहे हैं। एक खिलाड़ी लाल पान की अट्ठी को ज़ोर से पटककर बोल उठा—अब अपने नहले को रोकिए तो देखें।

हंसी का ठहाका लगा।

पास ही के एक तम्बू में स्वयं उग्रमोहन सिंह चिकनहाटी के डाक्टर विश्वम्भर के साथ पंजा लड़ा रहे हैं। कहा जाता है कि विश्वम्भर बाबू पंजा लड़ाने में अजेय हैं। दोनों में से कोई भी किसीको हरा नहीं सका। दो-चार मेहमान सांस रोककर देख रहे हैं।

एक अन्य तम्बू में मिसिर जी अपनी महफिल जमाकर बैठे हैं। कांटागाछी के ज़मींदार स्वयं तबले में उनकी संगत कर रहे हैं। और उनका मुसाहिब मुरारीमोहन ज़रूरत से ज़्यादा दाद दे रहा है।

विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। दो प्रबल ज़मींदारों के नातेदार बनकर मृण्मय ठाकुर मन ही मन बहुत प्रसन्न हैं, पर रंग कुछ फीका पड़ गया। उग्रमोहन सिंह ने नगद पांच हज़ार रुपये दहेज के साथ एक फटा हुआ चप्पल भी दान में दे दिया। मृण्मय ठाकुर इसे ननजमाइयों के साथ मखौल के तौर पर लेकर अपनी बत्तीसी निकालकर खूब हंसे और अपने मन की तीव्र कचोट को हलका करने का प्रयत्न किया, पर उनकी वह इच्छा सफल नहीं हुई जो उनकी दन्तसर्वस्व हंसी से प्रकट हो गया।

दूसरी बार रंग फीका पड़ा, जब बाई जी महफिल में जाने के लिए उतरीं। महफिल सजाने की ज़िम्मेदारी उग्रमोहन पर थी। उन्होंने खूब बड़ा-सा शामियाना लगवाया है। झालरदार खूबसूरत शामियाना। उसके बांस के खम्भे रुपहली ज़री की कामदार लाल कपड़े से मढ़े हुए

थे। महफिल में इत्रदान, गुलाबपाश, गुलदस्ते, पान के बड़े-बड़े ढोंगे, शाखा-प्रशाखायुक्त बड़े-बड़े झाड़-फानूस, खूबसूरत मखमली तकिए, मुलायम कालीन, किसी भी चीज़ की कमी नहीं है।

पर बाई जी का गाना जमा नहीं। कारण यह था कि महफिल के चारों ओर घेरकर उग्रमोहन ने बहुत-से पिंजरे टंगवा दिए थे। उग्रमोहन पक्षी पालने के भारी शौकीन हैं। बहुत पैसे खर्च करके उन्होंने अनेक किस्म के पक्षियों का संगह किया है। उनके पास इतने पक्षी हैं कि उन सबके लिए एक पक्षी-दरोगा ही मुकर्रर है। उन सब पक्षियों को आज महफिल के चारों ओर टंगवा दिया है। बहुत-से खूबसूरत पिंजड़े चारों ओर हिलडुल रहे हैं। उनमें किसीमें श्यामा, किसीमें भृंगराज, किसीमें तोते, तूरी, हिरामन, किरकिच, खाकतूर, काकातुआ, कैनरी, बुलबुल, हजारदास्तान आदि नाना प्रकार के पक्षी हैं। बाजड़ी, मैना, तिलोरा, लाल, महताबी, मुनिया, दहियाल, कोयल, जर्दपिलक आदि पक्षियों का मेला लग गया है। ज्योंही सारंगी बजी, चिड़ियों का झुंड तुरन्त और एक पर्दा चढ़ाकर सीटी मारने लगा। कुछ हंसकर हसीनाबाई ने अर्ज़ किया कि चिड़ियों को यहां से न हटाया जाएगा तो उनका गाना जमेगा नहीं। उग्रमोहन सिंह ने जवाब दिया—चिड़ियों को अभी यहां से हटाया जाना नामुमकिन है। हसीना बीबी अगर गाने में मजबूर हों तो उसके लिए न तो चिड़ियों को और न बाई जी को ही ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है। यह तो हमारी अपनी बदक़िस्मती थी।

हसीना बीबी ने फिर एक-दो बार कोशिश की, पर गाना जम नहीं पाया। गाना नहीं जम पाया पर कोयल, दहियाल, काकातुआ और मैना, इन सबने महफिल को गुलज़ार कर दिया।

चन्द्रकान्त ने कहा—तो फिर आज छोड़ो, कल चिड़ियों को यहां से हटवा देना उग्रमोहन, पर कहीं चिड़ियों से बदले भैंसों को लाकर मत हाज़िर करना।

उग्रमोहन ने कहा—हम पागल ठहरें, यही काफी है, भैंसों को भी पागल करने में क्या फायदा ?

गाना जम नहीं पाया, पर चन्द्रकान्त मात हो गए, यह सोचकर उग्रमोहन बहुत प्रसन्न हो गए।

कन्यादान के बाद गंगागोविन्द ने अपने शयनगृह में प्रवेश किया। दिन भर के उपवास से उनका देह और मन दोनों ही क्लान्त हो गया था।

उन्हें आज बराबर कमला का चेहरा याद आ रहा था। वह अगर ज़िन्दा होती तो क्या यह विवाह हो सकता था ? रुमनी-झुमनी अभी कुल नौ साल की ही तो थीं। गंगागोविन्द सोच रहे थे, इतनी जल्दी मैंने रुमनी-झुमनी को पराई कर दिया। इतनी जल्दी व्याह देने की क्या ज़रूरत थी ? केवल एक स्वप्न देखकर ऐसी कमज़ोरी न दिखाना ही अच्छा होता। रानी वह्लिकुमारी मेरी कौन हैं ?

रात खतम हो रही थी। पूर्व की ओर पौ फूट रही थी। क्लान्त गंगागोविन्द आंखें मूंदकर लेट गए।

ठीक इसी समय रानी वह्लिकुमारी भी, अकेली झरोखे पर खड़ी थी। इस विराट् उत्सव में वह भी शामिल थी। पर दिल से नहीं, केवल दुनियावी व्यवहार के खातिर। उसके मन में जो उठ रहा था वह इतना विचित्र और जटिल, इतना मधुर और कड़वा था कि वह भाषा में व्यक्त नहीं हो सकता। वह बगीचे के बीच, तालाब के काले पानी पर राजहंस की जोड़ी देख रही थी। हंसों की इस जोड़ी को देखकर उन्हें ईर्ष्या हो रही थी। अपलक नेत्रों से उन्हें देख-देखकर वह सोच रही थी, मनुष्य सृष्टि का बड़ा ही निकृष्ट जीव है और उसमें भी यह अमीर निकृष्टतम है।

नौबतखाने में तब शहनाई पर भैरवी शुरू हो गई थी।

## २०

विराट् उत्सव के वाद अवसाद भी विराट् होता है। उग्रमोहन और और चन्द्रकान्त दोनों के मन कुछ क्लान्त हो गए। इसका एक और भी कारण था, अपनी ज़िद तो पूरी हो गई, पर इस विजय में चन्द्रकान्त की कृपादृष्टि भी थी यह उग्रमोहन किसी भी तरह भूल नहीं पा रहे थे। रह-रहकर उनकी आत्मा में यही कांटा चुभ रहा था कि अगर चन्द्रकान्त लड़कों को न लौटाते तो यह विवाह शायद न हो पाता। अन्तरात्मा की चुभन उग्रमोहन के लिए सुखकर नहीं थी।

चन्द्रकान्त के मन में भी आनन्द नहीं था। इसका कारण था गोलोक साह। शाह जी का कोई पता ही नहीं लग रहा था। कमलाक्ष बाबू ज़मींदारी का सारा काम-काज छोड़कर इसीमें लगे हैं, पर आज तक उन्हें कोई सुराग नहीं लग पाया था। परन्तु गोलोक साह को छुटकारा दिलाने की ज़िम्मेदारी चन्द्रकान्त को ही है। उन्हींकी बात पर विश्वास करके गोलोक साह ने उन्हें रुपये देकर मुसीबत मोल ली थी। जैसे भी हो उसे छुड़ाना ही पड़ेगा।

उस दिन शाम को उग्रमोहन रोज की तरह शतरंज में जुट गए। बहुत देर तक खेल चलता रहा। इसी समय चन्द्रकान्त के मकान के सामने होकर वाजा वजाते हुए कुछ लोग जा रहे थे।

उग्रमोहन ने पूछा—कैसा वाजा है ?

चन्द्रकान्त ने बुलाया—भजना !

भजना आया।

—जाकर देख तो यह बाजा क्यों बज रहा है ?

भजना चला गया। दोनों फिर शतरंज में जुट गए। एक प्यादा को आगे बढ़ाकर चन्द्रकान्त ने कहा—अब अपने पील या नाव में से एक को खतम ही समझो।

—ठीक है, यह लो, अपने वज़ीर को बचाओ।

फिर दोनों चुपचाप चाल चलने लगे। भजना पता लगाकर आया और बोला—होली की पूर्णमासी के मेले में मदारियों का दल जा रहा है, यह बाजा उन्हींका था।

उग्रमोहन ने कहा—आनन्दपुर में मेला लग गया क्या ? एक दिन चला जाए, कैसा रहेगा ?

चन्द्रकान्त बोले—अब अपने वज़ीर को बचाओ !

उग्रमोहन ने घोड़े के सहारे आसन्न-मृत्यु वज़ीर को बचा लिया। घोड़े का तो तुरन्त बलिदान हो गया।

चन्द्रकान्त ने पुकारा—भजना !

वह आया तो उन्होंने आसव लाने का हुक्म दिया। बोले—आज सर्दी रोज़ से कुछ ज़्यादा है।

स्फटिक के दो खूबसूरत पात्रों में भजना आसव ले आया। दोनों चुपचाप उसे पीकर खेल में मस्त हो गए।

खेल खतम होने पर उग्रमोहन जब घर की ओर रवाना हुए तो शुक्ला एकादशी का चांद सिर पर आ गया था।

उग्रमोहन के जाने पर कमलाक्ष बाबू ने अन्दर आकर प्रणाम किया। चन्द्रकान्त ने पूछा—क्यों, कुछ पता लगा ?

कमलाक्ष बाबू ने कहा—बस ठीक-ठीक खबर यही मिली है कि गोलोक साह यम जंगल में नहीं है।

चन्द्रकान्त की भौंहें थोड़ी देर तक चढ़ी रहीं, फिर वे बोले—यह पता तुम्हें कैसे लग रहा है ?

उग्रमोहनसिंह को पशु-पक्षी खरीदने का खूब शौक है, इसीलिए हर साल इस मेले में पहुंचना इनके लिए कर्तव्य हो गया है।

चन्द्रकान्त ने खिड़की से उग्रमोहन की पालकी जाते देखा। वह भी थोड़ी देर में पालकी पर रवाना हो गए। उनके साथ सिपाही, बरकन्दाज तो नहीं थे, केवल आठ कहार और एक छोटा-सा बक्सा उनके साथ रहा।

# २१

आनन्दपुर मेले में उग्रमोहन सिंह का तम्बू लग गया। उग्रमोहन के पहुंचने के थोड़ी देर बाद ही चन्द्रकान्त की पालकी आनन्दपुर आ पहुंची। चन्द्रकान्त यह भी नहीं चाहते थे कि उनका मेले में आना उग्रमोहन को मालूम हो। एक बड़े-से पेड़ के नीचे उन्होंने पालकी उतारने का हुक्म दिया। पालकी से निकलकर चन्द्रकान्त ने कहारों को छुट्टी दे दी। उन्हें कुछ पैसे देकर बोले—जाओ मेला घूमो !—कहारों ने ज़मीन छूकर सलाम किया और खुशी-खुशी मेले की भीड़ में शामिल हो गए। उनके चले जाने पर चन्द्रकान्त फिर पालकी में पहुंचे। थोड़ी देर में जब वे बाहर निकले तो उन्हें पहचानना आसान नहीं था। मूछों और रंगीन चश्मे की मदद से चन्द्रकान्त एक नये ही आदमी बन गए।

भेस बदलना चन्द्रकान्त राय का महज एक गुप्त शौक था। इस विषय पर इन्होंने ढेर सारी किताबें पढ़ी थीं, और काफी पैसे खर्च किए थे। चन्द्रकान्त जीवन-रस के रसिक थे। यह बात वे अच्छी तरह समझ गए थे कि एक ही रूप में जीवन की विचित्रता का आनन्द नहीं लिया जा सकता। जीवन के विभिन्न स्तरों पर पाई जाने वाली प्राणवस्तु का पूरा परिचय ज़मींदार चन्द्रकान्त राय को नहीं मिल सकता। ज़मींदार चन्द्रकान्त राय ज़मींदारों के बीच ही स्वतंत्रता से घूम-फिर सकते हैं और उसमें इन्हें उच्चवर्ण-सुलभ आनन्द प्राप्त हो सकता है। पर ज़मींदार चन्द्रकान्त राय के लिए बंजारों के तम्बू में जाकर फुलकी का नाच देखना सम्भव नहीं है। मानव-समाज में बहुत-से स्तर हैं। एक स्तर के चाल-

चलन, कपड़े-लत्ते के साथ दूसरे का मेल खाना असम्भव है। इसीलिए हर श्रेणी का विचित्र रस लेने के लिए भेस बदलना ज़रूरी है। वैचित्र्य के लिए ज़मींदार चन्द्रकान्त का स्वरूप कभी-कभी छिप जाना चाहिए। गहरी रातों में चन्द्रकान्त राय कितनी वार कितने ही भेस बनाकर कहां-कहां गए हैं? अभी उस दिन की बात है, उन्होंने मछुओं का भेस बनाकर नाव पर बांध में मछली मारते-मारते सारी रात बिता दी।

आज भी उनको शौक हुआ कि छद्म वेश में ही मेला देखेंगे। शाम हो रही थी। उन्होंने पास ही मेले के ज़मींदार रामप्रताप चौबे का तम्बू देखा। तम्बू में नाच-गाने का आयोजन था। चन्द्रकान्त उसी ओर बढ़ गए।

उग्रमोहन भी मेले में इधर-उधर घूम रहे थे। उग्रमोहन उस ओर गए, जिस ओर घोड़े बिक रहे थे। एक घोड़ा उन्हें बड़ा पसन्द आया। काला चमकीला रंग, पांव के चारों खुर सफेद, माथे पर उजला तिलक, और कंधे पर रेशम की तरह घुंघराले और मुलायम बाल। घोड़ा गर्दन टेढ़ी करके खड़ा था, बड़ा सुन्दर-सुलक्षण घोड़ा था। उग्रमोहन को खरीदने का शौक हो आया। वे तम्बू में लौट गए। अक्षय गुमाश्ता को घोड़े का मोल-भाव करने के लिए भेज दिया। खिलौने के लोभ में चंचल बालक की तरह उग्रमोहन सिंह अपने तम्बू में अक्षय के लौटने की प्रतीक्षा करते रहे। थोड़ी देर में ही अक्षय लौटा। उसने कहा—हुज़ूर, घोड़ा तो पहले ही बिक गया।

—अच्छा! किसने खरीदा?

—रामप्रताप बाबू ने।

—ओह!

थोड़ी देर चुप रहकर उग्रमोहन सिंह बोले—देखो, एक काम करो। तुम रामप्रताप बाबू के पास जाओ। उनसे मेरा सलाम कहना और कह देना कि मुझे वह काला घोड़ा बहुत ही पसन्द आया है, अगर वे उस घोड़े को मेरे हाथ बेंच दें तो मैं बड़ा एहसान मानूंगा। उन्होंने उसे जिस दाम में लिया है, मैं उससे ज़्यादा दाम देने के लिए भी तैयार हूं।...हां,

तुम्हारे पास रुपये कितने हैं ?

अक्षय ने संक्षेप में कहा—रुपये हैं। सुनता हूं ३२५ में·······

—ठीक है, जाओ। जाकर कहना कि मैं ५०० तक देने के लिए तैयार हूं। मुझे वह घोड़ा चाहिए।

अक्षय चला गया। नासमझ बालक की तरह उग्रमोहन अपने तम्बू में बैठकर अधैर्य होकर अपनी मूछें ऐंठते रहे।

रामप्रताप चौबे कमउम्र के ज़मींदार हैं। मेले में कुछ मनोरंजन के लिए ही आए हैं। वे उग्रमोहन की तरह घोड़े के जानकार तो नहीं हैं, उन्होंने केवल बाज़ार के सबसे खूबसूरत घोड़े को देखकर उसे खरीद लिया था। घोड़े की अपेक्षा उन्हें तवायफों का ज़्यादा शौक है। दो हसीन तवायफों ने उनके तम्बू में महफिल जमा ली है। छद्मवेशी चन्द्रकान्त रामप्रताप चौबे के मुसाहिब बनकर तबला लिए जमे हैं। रामप्रताप चौबे को अगर जरा भी चन्द्रकान्त का असली परिचय मालूम होता तो यह महफिल कतई नहीं जम पाती। इस इलाके के सभी छोटे-बड़े जमींदार चन्द्रकान्त को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। श्रद्धेय व्यक्ति के साथ और चाहे जो कुछ करें पर ऐसे व्यक्ति के सामने तवायफों की महफिल नहीं जम सकती। चन्द्रकान्त अपना नाम मोतीलाल बताकर महफिल में शामिल हो गए हैं और उन्होंने महफिल जमा रखी है।

जब अक्षय पहुंचा तो चौबे जी खूब मस्ती में थे। भांग का नशा चढ़ चुका है, सामने सुन्दरी बाई जी गा रही थी :

**उमड़ घुमड़ घन गरजे**
**मेरो पिया परदेस**

गाना बन्द होते ही अक्षय ने चौबे जी के सामने उग्रमोहन का प्रस्ताव रखा। चौबे जी पहले तो समझ ही नहीं सके कि क्या बात है, असल में घोड़ा खरीद लेने की बात उन्हें भूल गई थी। याद आने पर बोले—ओह, उग्रमोहन बाबू घोड़ा लेंगे, हां-हां·······ज़रूर-ज़रूर·······

चन्द्रकान्त ने तुरन्त देखा कि एक मौका मिला है, उन्होंने चौबे जी

से कहा—दे दीजिए घोड़ा, पर एक बात है हुजूर ! उग्रमोहन बाबू दाम देना चाहते हैं, यह मुझे नहीं भा रहा है। एक तुच्छ घोड़े की कीमत लेना क्या हुजूर की इज्जत के खिलाफ नहीं होगा ? आप घोड़ा यों ही दे डालिए।

भांग के नशे में कन्धा हिलाकर चौबे जी बोले—उहुं, दाम नहीं लूंगा।

छद्मवेशी चन्द्रकान्त ने अक्षय की ओर मुड़कर समझाया कि बाबू साहब कह रहे हैं कि वे घोड़े को बेचेंगे नहीं; हां, उग्रमोहन बाबू को अगर यह तुच्छ घोड़ा पसन्द आ गया है तो रामप्रताप बाबू खुशी से उसको दान करने के लिए तैयार हैं। बेशक उसे ले लें।

अक्षय यह सन्देश लेकर चल पड़ा।

उग्रमोहन अधीर होकर चहलकदमी कर रहे थे। अक्षय से चौबे जी का सन्देश सुनते ही जैसे बारूद के ढेर में आग लग गई। वह चिल्ला पड़े—क्या कहा ? दान ? नादान की यह हिम्मत ! छोटे-से पतनीदार की इतनी लम्बी जबान ! साढ़े पांच सौ रुपये लाओ और हरनन्दन सिपाही को बुलाओ।

अक्षय ने एक थैली में साढ़े पांच सौ रुपये लाकर मालिक के हाथ में दे दिए। हरनन्दन आया तो उग्रमोहन ने पूछा—तुम कितने आदमी हो ?

—पचीस हुजूर !

—वारदात करने के लिए तैयार हो जाओ। दो सिपाही हमारे साथ चलें।

दो सिपाहियों के साथ उग्रमोहन हाथ में हंटर लेकर चल पड़े।

चौबे जी की मस्ती जोर पर थी। सामने नृत्यरता बाई जी। मोतीलाल उर्फ चन्द्रकान्त संगत कर रहे थे। तबला, सारंगी और घुंघरू के मिले-जुले स्वर से वातावरण सरस हो उठा था। ऐसे समय मूर्तिमान रसभंग के रूप में उग्रमोहन आ पहुंचे। सीधे चौबे जी के पास पहुंचकर

उनपर तड़ाक-तड़ाक कई हंटर जमाकर बोले—उग्रमोहन सिंह कभी किसीसे दान नहीं लेता। मानी का मान रखकर बात करना सीखिए।

रुपये की थैली झन् से महफिल में फेंककर उन्होंने जाते-जाते कहा—घोड़ा मैं ले चला, हिम्मत हो तो रोकिए।—और निकल गए।

हल्ला-गुल्ला और मारपीट के बीच ही उग्रमोहन सिंह उसी रात में घोड़े के साथ मेले से चले गए।

थोड़ी देर बाद ज़मींदार चन्द्रकान्त राय भी पालकी में आकर बैठ गए। उनके चेहरे पर एक मृदु मुस्कान थी। इतनी आसानी से काम बन जाएगा, यह उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। गोलोक साह का उद्धार करने के लिए उग्रमोहन को दूसरे झंझट में फंसाकर अनमना कर देना ज़रूरी था। कल से चन्द्रकान्त यही सोचते रहे थे कि इस काम को कैसे पूरा किया जाए। उग्रमोहन का ध्यान बंटाए बिना गोलोक साह को खोजना असम्भव था। कम से कम कमलाक्ष का यही कहना है।

मोतीलाल के वेश में उन्होंने अंधेरे में जो ढेला फेंका था, उसका निशाना ठीक लगा, यह देखकर चन्द्रकान्त बहुत ही प्रसन्न हो गए!···

## २२

उस घटना के करीव पन्द्रह दिन बाद एक शाम को अघोर चक्रवर्ती आकर उग्रमोहन को सलाम करके खड़े हो गए। उग्रमोहन बाबू ने पूछा—क्या हाल है?

अघोर बाबू ने शान्ति के साथ कहा—मुकदमा डिसमिस हो गया।

—यह बात?

—जी हां।

—जांने दो। उस घोड़े का शौक भी अब खतम हो गया है। उसे अब चौबे जी को लौटा दो।

—जो हुक्म हुज़ूर।

—ठहरो एक चिट्ठी भी साथ देनी है।—कहकर उग्रमोहन बाबू अपने खास कमरे में गए। अघोर बाबू चुपचाप बाहर खड़े-खड़े अपनी ललौंही मूछें सहलाने लगे और बिना कारण उसे साफ करने लगे। जब अघोर बाबू ऐसा करते हैं तब यह समझना चाहिए कि वह मन ही मन कुछ सोच रहे हैं। अघोर बाबू की वेश-भूषा भी आज कुछ नये ढंग की है। काली अचकन की तरह लम्बा कोट, कन्धे पर चुन्नटदार सफेद चादर और सिर पर पगड़ी जैसी कोई साज। वे सदर से लौटे हैं। आनंदपुर मेले में जो दंगा हुआ था, उसीके मुकदमे की पैरवी के लिए वे ज़िला कचहरी गए थे। इतना भारी मुकदमा किस तरह एकाएक डिसमिस हो गया, यह केवल अघोर बाबू को ही मालूम है।

उग्रमोहन सिंह ने पत्र लिखा :

प्रिय चौबे जी,

हमारा शौक मिट गया। अब अपना शौक मिटा सकते हैं। घोड़े को लौटा रहा हूं। मुकदमे से कोई फायदा नहीं। आशा है आप यह समझ ही गए होंगे।

उग्रमोहन सिंह

बाहर आकर पत्र अघोर बाबू को थमाकर उन्होंने कहा—इस चिट्ठी के साथ घोड़ा वापस कर दो।

—जो हुक्म—कहकर अघोर बाबू ने पत्र ले लिया, इसके बाद बोले—सदर में सुना है कि श्यामांगिनी खैराती अस्पताल खुल रहा है। रानी मां के नाम वहां एक हज़ार रुपये दे आया हूं।

—श्यामांगिनी कौन ?

—श्यामांगिनी देवी ज़िला मजिस्ट्रेट की पत्नी थीं। बहुत ही महान् नारी थीं, सुना, उन्हींके स्मारक के रूप में अस्पताल खोला जा रहा है।—अघोरबाबू के पथरीले चेहरे पर क्षण भर के लिए जैसे हल्की-सी हंसी की एक चमक कौंधकर बुझ गई।

उग्रमोहन ने कहा—ठीक किया।

इसके बाद अघोर बाबू ने कहा—गोलोक साह का बखेड़ा भी निपट जाना चाहिए सरकार, उसे इस तरह कितने दिन छिपाकर रखा जा सकता है ?

—आजकल वह कहां रखा गया है ?

—चामा मैदान के काली मन्दिर में।

उग्रमोहन सिंह थोड़ी देर सोचकर बोले—आगामी काली पूजा की रात को मैं वहां जाऊंगा। पूजा का अच्छा इन्तज़ाम होना चाहिए।

—जो हुक्म।

उग्रमोहन ने फिर से पूछा—गोलोक साह के बखेड़े में जो बंजारे पकड़े गए थे, उनके लिए क्या किया ?

—जी, वे छूट गए हैं। हमारे सदर नायब कुंज बाबू ने इसका

इन्तज़ाम कर दिया है।

—बंजारों को कुछ दिया गया है न?

—जी हां, हर एक को नकद दस रुपये और एक-एक कपड़ा देने के लिए कह दिया गया है।

—कैसे इन्तज़ाम किया?

—उनके छूटने पर उन्हें शियालमारी कचहरी में नाचने-गाने के लिए बुलाया गया था।

मैनेजर की ऐसी दूरदर्शिता देखकर उग्रमोहन खुश होकर बोले—सबको कुछ न कुछ मिला, बस तुम्हीं रह गए।

अघोर बाबू के पत्थर जैसे चेहरे पर कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ। उन्होंने केवल इतना ही कहा—आपकी कृपा ही सब कुछ है।

उग्रमोहन बोले—अच्छा तो अभी जाओ। आगामी काली पूजा के रोज़ गोलोक साह का बन्दोबस्त हो जाएगा।

अघोर बाबू सलाम करके चले गए।

उनके जाते ही उग्रमोहन को खिड़की की तरफ से झप् की-सी आवाज़ सुनाई पड़ी। उग्रमोहन 'कौन' कहकर खिड़की की तरफ गए। मालूम हुआ कि अंधेरे में जैसे कोई जल्दी-जल्दी चला जा रहा है। उन्होंने दोबारा पुकारा—ऐ, कौन है?

—मैं हूं हुज़ूर।—कहकर वह आदमी लौट आया और सलाम किया।

—मानिक मंडल? तुम वहां क्या कर रहे थे?

—जी? एक चवन्नी गिर गई थी, उसे ढूंढ़ रहा था।

—चवन्नी? वहां चवन्नी कैसे गई?

—पेड़ से एक बेल गिरा हुज़ूर, उसे उठाने गया तो चवन्नी गिर पड़ी।

—अच्छा!

हुम्-हुम्-हुम् करती चन्द्रकान्त की पालकी आ पहुंची। उग्रमोहन

उधर बढ़ गए। मानिक मंडल जान लेकर भागा।

दूसरे दिन अघोर बाबू ने फिर आकर सलाम किया। अबकी बार यह सन्देश था कि श्रीमान् रामप्रताप चौबे के पास जो सिपाही घोड़ा लेकर गया था, उसे चौबे जी ने बेइज़्ज़त करके भगा दिया और घोड़े को गोली मार दी। इस हालत में क्या करना चाहिए, अघोर बाबू यही पूछने के लिए आए थे।

अघोर बाबू ने फिर कहा—बात कानों में पड़ी, इसीलिए हुज़ूर के पास पहुंचा दी, पर मैं सोचता हूं कि इस ज़रा-सी बात पर ख्याल करना हुज़ूर को शोभा नहीं देता, पर सिपाही बहुत दुःखी हुआ।

उग्रमोहन बाबू ने संक्षेप में आदेश दिया—उसे अभी निकाल दो, समझे?

अघोर बाबू चुपचाप खड़े रहे। उनके चेहरे की एक भी पेशी नहीं हिली। उग्रमोहन सिंह ने फिर से कहा—जो सिपाही अपमानित होकर तुरन्त उसका बदला नहीं लेता है और घर में आकर दुःख प्रकट करता है, फौरन निकाल बाहर करो। ऐसे नामर्द सिपाही मुझे बिल्कुल नहीं चाहिएं। चौबे जी को और एक चिट्ठी दे रहा हूं, उसे ले जाओ। यह चिट्ठी दूधनाथ के हाथ भेजना। हवालात से छूटकर आ गया है न? हां, देखना वह हथियार बन्द होकर जाए।—कहकर उग्रमोहन चिट्ठी लिखने के लिए खास कमरे में चले गए। अघोर बाबू चुपचाप खड़े होकर अपनी मूंछ पर अंगुली फेरने लगे।

उग्रमोहन ने लिखा:

चौबे जी,

रामप्रताप नाम आपके लिए सार्थक हो गया। सचमुच ही आपका प्रताप रामचन्द्र जैसा ही है। आपकी वीरता का परिचय पाकर मैं मुग्ध हो गया हूं। कहते हैं, आपके परदादा स्वर्गीय प्रियप्रताप चौबे जी ने सुन्दर वन के इलाके में एक शेर मारकर नाम कमाया था। आप अपने खानदान का नाम आगे बढ़ाएंगे, इसमें सन्देह नहीं है। अपने सिपाही से

आपके नम्र व्यवहार की कहानी सुनकर अब मैं दूधनाथ पांडे के हाथ यह चिट्ठी भेज रहा हूं। आत्मसम्मान की रक्षा के लिए इस आदमी ने एक दिन अपना एक हाथ खो दिया था। सिर देने में भी बाज़ नहीं आएगा। पर आत्मसम्मान पर ठेस नहीं आने देगा। आशा है आप स्वस्थ हो गए हैं।

श्री उग्रमोहन सिंह

थोड़ी देर बाद दूधनाथ पांडे के हाथ चिट्ठी का जवाब भी आ गया। रामप्रताप चौबे ने लिखा था :

सिंह महोदय,

यह तुच्छ विषय लेकर और तकरार बढ़ाने की इच्छा नहीं है। आशा है कि आपका दर्शन कहीं और प्राप्त होगा।

श्री रामप्रताप चौबे

# २३

रानी वह्निकुमारी अकेली बैठी थी। उसकी गोद में 'मालविकाग्निमित्र' खुला पड़ा था, वह खुली हुई खिड़की से बाहर की ओर देख रही थी। रुमनी-झुमनी के विवाह से उसके मन में एक उथल-पुथल मच गई थी। कोई सबूत तो नहीं है, पर उसे इस बात का पूरा निश्चय है कि गंगा-गोविन्द ने उसे प्रसन्न करने के लिए ही अजय-विजय के साथ रुमनी-झुमनी का विवाह किया है।

जबसे यह विचार उसके दिल में आया, तब से उसे चैन नहीं है। उसने गंगागोविन्द से वह बात कही ही क्यों? शायद गंगागोविन्द ने सोचा कि वह अपने पति की वकालत कर रही है और शायद इसीलिए उन्होंने यह महानुभावता दिखाई। उन्होंने सोचा होगा कि इससे वाणी खुश होगी। हाय, यदि पुरुष यह समझ पाता कि नारी किस बात से खुश होती है! गंगागोविन्द को क्या यह बात मालूम नहीं है कि उनके सुखी होने के मार्ग में एक दिन गंगागोविन्द ने ही एक अलंघनीय बाधा डाल दी थी। दरिद्रता का दम्भ! इसी दम्भ के जगद्दल पत्थर के नीचे वाणी का किशोर मन एक दिन चूर-चूर हो गया था, यह क्या वह नहीं जानते? आज वही महानुभावता दिखाकर वे वाणी को खुश करना चाहते हैं? अजीब स्पर्द्धा है, उन्होंने क्या सोच रखा है कि वाणी उनसे शादी नहीं कर पाई, इसीलिए वह आज तक उनकी राह देख रही है? अगर यह सोचा है तो यह उनकी हिमाकत है। प्रबल प्रतापशाली जमींदार उग्रमोहन सिंह की रानी वह्निकुमारी अपनी किशोरावस्था की एक भ्रान्ति को छाती

से चिपटाए नहीं बैठी है। उग्रमोहन सिंह की पत्नी को काहे का क्षोभ ? हो सकता है कि गंगागोविन्द की तरह वह पुस्तक में घोखी हुई बातें नहीं दुहरा सकते, पर उनके पति की तरह पुरुष-सिंह इस इलाके में और कितने हैं ? कितने लोगों में ऐसा विराट हृदय, अपार शौर्य और विपुल विक्रम है ? गंगागोविन्द ने इस विवाह के मामले में उदारता दिखाकर अच्छा ही किया, नहीं तो उग्रमोहन की क्रोधाग्नि में जलकर वह भस्म हो जाते। अपनी दरिद्रता का खोखला घमंड लेकर ही वे रह गए। वह्निकुमारी ने सारी जिन्दगी में इतना घमंडी आदमी कोई दूसरा नहीं देखा। गहराई से सोचने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि रुमनी-झुमनी का विवाह भी उन्होंने निरी डींग की भावना से प्रेरित होकर ही किया। वह्निकुमारी ने उनसे ऐसी क्या बात कह दी थी ? कुछ भी नहीं। हुंह, बस एक स्पर्द्धा, वाणी को छोटा दिखाने के लिए एक चाल। और कोई जाने या न जाने पर वाणी गंगागोविन्द को अच्छी तरह जानती है। वाणी को अच्छी तरह पता है कि गंगागोविन्द के जीवन का मुख्य सिद्धान्त यह है कि किसीके सामने छोटे नहीं बनो, हमेशा सिर ऊंचा रखो, किसी की कृपा मत लो, और भरसक दूसरों पर ही अनुग्रह करो। वाणी पर अनुग्रह करके ही उन्होंने रुमनी-झुमनी के विवाह में अपनी सम्मति दी होगी। उनके मौन दम्भ से वह्निकुमारी का सारा हृदय सुलगने लगा। अगर कोई गंगागोविन्द का ऊंचा सिर झुका देता तो वाणी को शान्ति मिलती।

मालविकाग्निमित्र ज्यों का त्यों पड़ा रहा। गंगागोविन्द की बात सोच-सोचकर उसका मन बिना कारण ही कड़वा हो उठा। वह ज़बर्दस्ती प्रत्यक्ष करने लगी कि गंगागोविन्द के हर आचरण में यही आत्मश्लाघा कूट-कूटकर भरी हुई है। कोई समझे या न समझे, वाणी यह बखूबी समझ चुकी है। वह जैसे बल लगाकर बारबार मन ही मन दोहराने लगी कि उनके पति के मुकाबले में गंगागोविन्द एक नगण्य जीव मात्र हैं, घोर आत्मपरायण, स्वार्थी और दम्भी ! सारी पुरुष जाति ही ऐसी है। केवल

स्थान, काल, पात्र के भेद से कुछ फर्क पड़ जाता है। महाकवि कालिदास ने भी मालविकाग्निमित्र के राजा के मुंह से मालविका का जो रूप वर्णन कराया है, वह एक पुरुष कवि के द्वारा ही सम्भव हो सकता था—यानी प्रेम की ओट में वासना की उसांसें। वह्लिकुमारी खुली खिड़की से बाहर देखती हुई अकेली बैठी रही। आम के बौर की गन्ध लिए हवा का एक झोंका आया, पर वह्लिकुमारी को आज इससे आनन्द नहीं मिला। गंगागोविन्द के कारण उनका सारा मन विषाक्त हो गया था।

पर इतने विष में भी कहीं अमृत नहीं छिपा था? था तो। हम वायुमंडल में ही पूरी तरह से डूबे रहते हैं, इसीलिए जैसे हम वायु का अस्तित्व ही भूल जाते हैं, वह्लिकुमारी की भी ठीक यही स्थिति थी। वह अमृत के सागर में ही डूबी हुई थी, पर अमृत के सम्बन्ध में सचेत नहीं थी। उससे उस समय सचेत हुई, जब उग्रमोहन ने आकर कहा—गंगागोविन्द तो अब देश छोड़कर चला जा रहा है।

—कहां?

—काशी।

—क्यों?

—संस्कृत पढ़ेगा। तुम्हारे लिए एक चिट्ठी दी है। छोकरे के दिमाग का कोई पुर्जा ढीला ही रह गया है।—यह कहकर उन्होंने वह्लिकुमारी को एक पत्र थमा दिया। उसमें लिखा था:

वाणी,

तुम लोगों की कृपा से हमारे जीवन का सामाजिक दायित्व समाप्त हो गया। अब जीवन के शेष कुछ दिन विद्यानुशीलन में ही बिता देने की सोच ली है। बहुत दिनों से अभिलाषा थी कि अच्छी तरह संस्कृत का अध्ययन करूंगा। दरिद्रता के कारण ही ऐसा नहीं हो पाया। हाल ही में काशी के एक अध्यापक ने आश्वासन दिया है कि यदि मैं उनके यहां जाकर रहूं तो वे मुझे अध्ययन में सहायता देंगे। यह अवसर मैं छोड़ना नहीं चाहता। दो-एक दिन में ही काशी रवाना हो जाऊंगा और जीवन

के अवशिष्ट दिन श्री विश्वनाथ के चरणों में ही बिता दूंगा। जाने के पहले तुम्हारा दर्शन मिलता तो खुशी होती। इति।

गंगागोविन्द

रानी वह्निकुमारी का हृदय जैसे किसीने मरोड़ दिया। गंगा-गोविन्द देश छोड़कर चले जा रहे हैं ? फिर कभी नहीं लौटेंगे ? फिर कभी उनका दर्शन नहीं मिल सकेगा ? अगर उनके पति कोशिश करें तो क्या गंगागोविन्द को रोक नहीं सकते ?

वह्निकुमारी ज़रा हंसकर बोलीं—सचमुच ही पागल आदमी हैं। उनकी काशी-यात्रा रोकवा सकते हो ?

घोर उदासीनता से उग्रमोहन ने उत्तर दिया—इससे क्या फायदा ?

वह्निकुमारी ने पलभर के लिए उग्रमोहन की ओर देखा, फिर जरा हंसकर कहा—ठीक तो है।

उग्रमोहन ने खिड़की से देखा कि मैनेजर अघोर बाबू हाथी पर चले आ रहे हैं। परसों महाकाली के मन्दिर में पूजा है, शायद इसी बारे में कुछ सलाह लेने के लिए आते होंगे।

—अघोर आ रहा है, ज़रा नीचे हो आऊं।—कहकर उग्रमोहन नीचे चले गए। वह्निकुमारी अकेली, स्तब्ध रह गई। एकाएक उसे 'राजसिंह' उपन्यास की जेबुन्निसा याद आई। जेबुन्निसा ने जहरीले सांप से मुबारक की हत्या करवा दी थी, क्या मैंने गंगागोविन्द को देश छोड़ने के लिए बाध्य किया है ? रुमनी-झुमनी का ब्याह न होता तो वह इस तरह चले न जाते।

लम्बी सांस खींचकर वह्निकुमारी भी जेबुन्निसा की तरह ही सोचने लगी, काश, मैं किसी किसान की बेटी होती।

फिर उसने तुरन्त ही सोचा, किसान की बेटी होने से भी क्या आता-जाता है ? गंगागोविन्द जैसे नासमझ को लेकर कुछ भी नहीं किया जा सकता। वे अपनी महिमा में ही इतने डूबे हैं कि किसी और के बारे में सोचने की उन्हें फुरसत ही नहीं है। प्रकाश की तरह

गंगागोविन्द अपनी उज्ज्वल प्रतिभा को लेकर चारों ओर व्याप्त हो जाते हैं। वे किसी विशेष व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं बन सकते, किसीकी सुविधा, असुविधा, दुःख-सुख की चिन्ता उन्हें नहीं है। अपने आपको विकसित करके छटा फैलाना ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। फिर वह्लिकुमारी ही उनकी इतनी परवाह क्यों करे? दुनिया में किसी के न होने से किसीका कुछ रुकता नहीं। उग्रमोहन सिंह की विशाल ज़मींदारी में गंगागोविन्द जैसा एक मामूली व्यक्ति रहे या न रहे, इसके विषय में रानी वह्लिकुमारी का चिन्तित होना शोभा नहीं देता। वह उग्रमोहन की पत्नी है। गंगागोविन्द उसका कौन लगता है?

## २४

हरीतिमा से शून्य और रूखे चामा प्रान्तर में सूर्यास्त हो रहा है। चारों ओर एक निर्मम रक्ताभा फैली हुई है। रक्तवस्त्रधारी कापालिक की तरह चामा प्रान्तर भी स्थिर है। एक मौन धृष्ट गम्भीरता चारों ओर व्याप्त है। चामा प्रान्तर की बंजर धरती में हरियाली का नाम भी नहीं है, पेड़-रूख, झाड़-झंखाड़, घास-पात कुछ भी नहीं। उसपर से होकर छायाविहीन दीर्घ दिवस निकल गया है। युगों से चामा प्रान्तर प्रतिदिन इसी तरह चिलचिलाती हुई धूप की लपटों में जलता रहा है। उसकी सारी कोमलता झुलस-झुलसकर नष्ट हो चुकी है। एक विशाल व्याप्तिमात्र रह गई है। जितनी दूर तक आंखें जाती हैं, कहीं अन्त नहीं मिलता। इसकी सीमा क्षितिज तक पहुंचकर आकाश में विलीन हो गई है। चामा प्रान्तर मानो मूर्तिमान अतृप्त बुभुक्षा है।

अघोर बाबू महाकाली के मन्दिर के आंगन में खड़े अपलक दृष्टि से सूर्यास्त देख रहे थे। चामा की अधिष्ठात्री देवी महाकाली का यह मन्दिर तान्त्रिक साधक अघोरनाथ का बड़ा ही प्रिय स्थान है। चामा का प्रान्तर मानो उनके ही जीवन की प्रतिच्छवि है। उनके छः बेटों और दो बेटियों में आज एक भी जीवित नहीं है। शोक और कष्ट भोगते-भोगते पत्नी भी गुज़र गई। लोगों की धारणा है कि तान्त्रिक साधना ही अघोर बाबू के कष्टों का कारण है। उन्होंने जिस दिन से यह साधना शुरू की, उसी दिन से उनके जीवन पर मृत्यु की विकराल छाया आ पड़ी है। फिर भी वे निरस्त नहीं हुए। उन्होंने शवसाधना की है, नरबलि चढ़ाई है,

महाकाली को तुष्ट करने के लिए उन्होंने बहुतेरी कोशिश की, पर छलनामयी, उन्मादिनी काली देवी ने उनपर केवल असह्य शोक की वर्षा की है, अघोर बाबू का विश्वास है कि उन्मादिनी काली उनकी परीक्षा ले रही हैं।

उनका प्रण है कि इस परीक्षा में वे उत्तीर्ण होकर रहेंगे इसीलिए आज भी वे काली के एकाग्रचित्त साधक बने रह गए हैं। अब भी वे हर अमावस्या को इस निर्जन, प्राणहीन, सूने प्रान्तर में महाकाली की पूजा करते हैं।

सूर्यास्त हो गया। अघोर बाबू निस्पन्द दृष्टि से देखते रह गए। चामा प्रान्तर पर धीरे-धीरे अमावस्या का गहरा अन्धकार उतर रहा है।

अमावस्या की काली रात। चारों ओर निस्तब्ध अन्धकार। महाकाली के मन्दिर में दिया जल रहा है, अघोर बाबू काली की पूजा कर रहे हैं। उन्होंने रक्तवस्त्र पहन रखा है, माथे पर सिंदूर का टीका। गले में अड़हुल के फूलों की माला। कारण[1] पीने से दोनों आंखें लाल हो गई हैं। पास ही उग्रमोहन भी बैठे हैं। उनका चेहरा गम्भीर और प्रशान्त था। वे एकाग्र होकर पूजा देख रहे हैं। पूजा समाप्त होने में अब देर नहीं है।

गोलोक साह भी थोड़ी दूर पर बैठा है। पूजा समाप्त होने पर उसका फैसला किया जाएगा। अघोर बाबू का मंत्रपाठ चल रहा है। पास ही एक बकरी का बच्चा कातर होकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है। बाहर अमावस्या का सूचीभेद्य अंधकार है।

पूजा समाप्त हो गई। बलिदान भी हो गया।

उग्रमोहन गोलोक साह की ओर मुड़कर बोले—बोलो, अब क्या कहना है? अगर मां काली के सामने तुम्हारा बलिदान कर दिया जाए तो तुम क्या कर सकते हो?

गोलोक साह ने जवाब दिया—मुझे क्षमा कर दीजिए सरकार!

---

१. कारण—मद्य का तान्त्रिक नाम।

—पहली बार तो तुम्हें क्षमा दी गई थी, पर तुमने दूसरी बार भी हमारा हुक्म तोड़ा है। तुम्हें फिर माफ नहीं किया जा सकता। तुम्हें इतनी कड़ी सज़ा दूंगा कि तुम ज़िंदगी भर नहीं भूल पाओगे। दूधनाथ पांडे !

दूधनाथ पांडे आकर खड़ा हो गया।

—पचीस कोड़े, पहले नंगा कर लो।

थरथराते हुए नंगे गोलोक साह को लेकर दूधनाथ पांडे बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद ही गोलोक साह का करुण चीत्कार चामा के अंधेरे प्रांतर में गूंजने लगा।

उग्रमोहन ने कहा—अघोर, ज़रा मां काली का प्रसाद तो देना।

अघोर बाबू ने कारण का एक पात्र उनकी ओर बढ़ा दिया। उग्रमोहन ने उसे पीकर कहा—और दो।—अघोर बाबू ने और एक पात्र उनकी ओर बढ़ा दिया।

गोलोक साह को लेकर दूधनाथ पांडे लौट आया।

उग्रमोहन बाबू ने कहा—अभी खतम नहीं हुआ, कुछ देर आराम कर लो, फिर कोड़े पड़ेंगे। थोड़ी-थोड़ी देर में तुम्हें कोड़े लगाए जाएंगे, तुम्हें रुपये की बहुत गर्मी चढ़ी है !

उग्रमोहन और एक पात्र पीते हुए बोले—तुम्हारी पीठ की खाल उधेड़ दी जाएगी, समझे ! और उसी खाल से एक जोड़ी जूता बनवाकर तुम्हारे देनदार चन्द्रकांत राय को भेंट करूंगा।

एकाएक गोलोक साह की आंखों में एक खूंख्वार चमक कौंध उठी। पास ही एक ईंट पड़ी थी, उसे उठाकर उसने ज़ोर से उग्रमोहन के सिर की ओर फेंका। पल भर में उग्रमोहन ने सिर हटा लिया, ईंट सीधे जाकर देवी की प्रतिमा पर लगी और महाकाली के हाथ में लटकता हुआ मुंड चूर-चूर होकर ज़मीन पर बिखर गया।

शेर की तरह झपटकर उग्रमोहन गोलोक साह पर टूट पड़े। लात, घूंसे, तमाचे, जूते, जिससे भी बन पड़ा अंधाधुंध मारने के बाद उन्होंने

कहा—इसकी सज़ा मौत है। इसको बलि चढ़ा दो अघोर !

देवी की प्रतिमा पर आघात लगा था। अघोरनाथ की आत्मा भयानक अमंगल की आशंका से कांप उठी, पर उनके चेहरे पर ज़रा-भी विकार नहीं दिखाई पड़ा। पुरोहित के आसन पर बैठे-बैठे उन्होंने धैर्य से कहा—बलिदान का पशु अक्षत देह होना चाहिए। इसकी नाक से खून बह रहा है।

सचमुच ही गोलोक साह की नाक से खून बह रहा था। उसकी मूंछ-दाढ़ी सब खून से तर हो गई थीं। उग्रमोहन ने खूब पी ली थी। उन्होंने गरजकर कहा—इसने मां पर चोट की है, इसे प्राण देकर इसका प्रायश्चित्त करना पड़ेगा। बलिदान न हो तो और बन्दोबस्त करो। मैं इसकी मौत चाहता हूं।

अघोर बाबू ने सोचकर जवाब दिया—तो फिर इसे यम घर भेज दीजिए।—यह कहकर उन्होंने आसन त्याग दिया।

शराब के तीव्र नशे में उग्रमोहन बाबू बोल उठे—हां, इसे अभी ले जाओ। ओ दूधनाथ पांड़े, तुम, शुकुलसिंह और····

अघोर बाबू ने कहा—मैं बंदोबस्त किए देता हूं।

थोड़ी देर बाद बेहोश गोलोक साह को लेकर सिपाही यम जंगल की ओर रवाना हो गए। उनके साथ-साथ अघोर बाबू भी गए।

मानिक मंडल मंदिर के पीछे चुपचाप बैठा था। अब वह भी धीरे-से उठकर इधर-उधर देखकर अंधेरे में बिला गया।

उग्रमोहन सिंह जब घर लौटे तो रात के दो बजे होंगे। राखाल बाबू दीवान चिन्तित होकर उनकी प्रतीक्षा में बैठे थे।

—क्या हाल है जी, इतनी रात को··· ?

—हुजूर वृन्दावन से प्राणमोहन आया है। मां जी बहुत बीमार हैं। उन्होंने आपको बुलाया है।

—मां बीमार हैं ? प्राणमोहन कहां है ?

—अपने घर गया है, अभी आएगा।

उग्रमोहन सिंह की वृद्धा माता पति की मृत्यु के बाद से वृन्दावन में बस गई थीं। एकाएक उनकी बीमारी की खबर पाकर उग्रमोहन विचलित हो गए।

—सवारी ठीक करो, मैं भोर में ही चला जाऊंगा। कुछ रुपये और पांच आदमी साथ चलेंगे।

राखाल बाबू इन्तज़ाम करने के लिए बाहर चले गए।

## २५

उग्रमोहन वृन्दावन गए हुए हैं। वह्निकुमारी भी साथ जाना चाहती थी, पर उग्रमोहन उन्हें नहीं ले गए। वह्निकुमारी अकेली रह गई। पर वह तो चिरएकांकिनी है। आम जमींदारों की पत्नियां जिस तरह सखियों और दासियों से घिरी हुई ज़िन्दगी बिताती हैं, वह्निकुमारी वैसा कभी नहीं कर पाई। उसके रिश्तेदारों में कोई भी ऐसा नहीं था, जो वह्निकुमारी के सुसंस्कृत मन के सूक्ष्म सुख-दुःख में भाग ले सके। सखी के रूप में जो आती थीं, वे सभी खुशामदी होती थीं। वह्निकुमारी उनसे मिलती-जुलती थीं। क्योंकि दूसरों के मुंह से अपनी प्रशंसा सुनना अभिजात वर्ग का एक अपरिहार्य अंग है। ऐसे लोगों पर वह कृपा तो कर सकती थी, पर उनके साथ मित्रता करने की प्रवृत्ति वह्निकुमारी में नहीं थी क्योंकि वे सब निम्नस्तर के प्राणी हैं। वह्निकुमारी का मन जब कादम्बरी के सौन्दर्य में डूबा रहता है या साहाना के सुर से मुग्ध हो जाता है, उस समय जब सहेलियां अमावट या रसोई की बातें करती हैं तो कुछ मुस्कराकर उनपर कृपा की वर्षा की जा सकती है, पर उनसे मित्रता नहीं की जा सकती। मानसिक समता नहीं होने से दोस्ती या दुश्मनी कुछ भी जम नहीं सकती। उसका मानसिक स्तर इनकी मित्रता तक खिच नहीं पाता। उनके साथ सखीत्व करने लायक मानसिक स्तर वह्निकुमारी में नहीं था।

पति उग्रमोहन वह्निकुमारी के अवलम्ब हैं, पर साथी नहीं। कोई विराट वृक्ष किसी लता का आश्रय-स्थल हो सकता है, पर साथी नहीं हो सकता। उग्रमोहन के विराट व्यक्तित्व से लिपटकर वह ज़िन्दा रहती थी, पर दोनों के स्वभाव में कोई मेल नहीं था। वे एक दूसरे को अधिकतर समझ भी नहीं पाते थे। फिर भी उनके मिलन में कोई बाधा नहीं थी। वह्निकुमारी अपने अन्तस्तल में उग्रमोहन की नहीं, बल्कि उनकी शक्ति की पूजा करती थी। उग्रमोहन की यह शक्ति, यह महिमा, यह प्रबलता वह्निकुमारी के दाम्पत्य जीवन की रीढ़-सी थी, इसीके सहारे वह्निकुमारी के सारे अस्तित्व का ढांचा खड़ा था। यह गंगा-गोविन्द के विरह से धराशायी नहीं हुआ, परन्तु वह्निकुमारी का कोई साथी नहीं था। वह चिरकाल से एकाकिनी है। अध्ययन, संगीतचर्चा, प्रसाधन शिल्पकला आदि के भरोसे ही उनके दिन कटते हैं। उग्रमोहन दिन-भर घुड़सवारी करते हैं, फलस्वरूप वह्निकुमारी उनमें अपना साथी नहीं पा सकी। चन्द्रकान्त की तरह वह भी अपने मानसलोक में ही बसती थी। उसके किशोर मन में गंगागोविन्द का जो चित्र अंकित हो गया था, वह अब भी है। युक्ति की रगड़ से वह चित्र कुछ विकृत अवश्य हो गया था, पर मिट नहीं सका। उसके मन के आकाश पर गंगागोविन्द एक छोटे-से नक्षत्र हैं और उग्रमोहन एक विराट मेघखण्ड। नक्षत्र छोटा भले ही हो, पर ज्योतिर्मान है; मेघ में प्रकाश नहीं है, पर शोभा है, बिजली है, वज्र है और है जल-भण्डार। नक्षत्र आकाश के एक कोने में ही स्थिर रहता है, पर मेघ सारे आसमान में क्षणभर में अपने को विस्तृत कर लेता है। छोटा-सा नक्षत्र उसकी ओट में छिप जाता है, ओझल हो जाता है, पर बुझता नहीं। मेघ के हट जाने पर उसकी ज्योति फिर मन को आकर्षित कर लेती है।

आज दस दिन से उग्रमोहन बृन्दावन गए हुए हैं।

अकेली वह्निकुमारी का मन नहीं लग रहा था, शाम हो गई है। शिव मन्दिर में आरती का शंख और घण्टा बज रहा है। नौबतखाने में

—क्या बजाऊं ?

—तेरी जो मर्जी हो।

वह्निकुमारी कुछ देर सितार को छेड़ती रही, फिर बोली—तुमने जौनपुरी की जो गत सिखाई थी, उसीको बजाऊं। बजाऊं ?

—शाम को जौनपुरी ? अच्छा, चल बजा।

वह्निकुमारी जौनपुरी बजाने लगी। उसके बाजूबन्द के दोलक हिलने लगे। कंगन की झंकार के साथ सितार की झंकार मिल जाने से जौनपुरी का एक नया ही रूप प्रकट हुआ, जो किसी पुरुष उस्ताद के हाथों सम्भव नहीं था। वह्निकुमारी को देखते-देखते चन्द्रकान्त का मन अतीत की ओर लौट गया। तब वाणी कुआंरी थी, नया-नया सितार बजाना सीख रही थी। गंगागोविन्द को सितार सुनाने के लिए वह कितना व्यग्र रहती थी। गंगागोविन्द को सितार सुनाने के लिए वह अनेक बहाने बनाती थी। इस बात पर चन्द्रकान्त कितना व्यंग्य करते थे।

वह्निकुमारी सितार बजाना समाप्त करके बोल पड़ी—उफ, इतना बड़ा सितार है कि मेरा हाथ दुखने लगा। अब एक तुम सुना दो भैया !

चन्द्रकान्त सितार लेकर बोले—तूने सुना, गंगागोविन्द कल काशी चला जाएगा।

—हां, मुझे एक चिट्ठी भेजी थी। कल ही जाएंगे ? इतनी जल्दी ?

—उसे कोई धुन लग जाए तो फिर वह रुकता नहीं। प्राकृत सीखने की धुन थी, उसे सीखकर ही छोड़ा। अब संस्कृत का भूत सवार है। देखो, कहां चलकर रुकता है। —कहकर चन्द्रकान्त सितार के तार मिलाने लगे। सुर मिलाते हुए बोले—ऐसी आदत हो गई है कि बिना ठेका के अच्छा नहीं बजा पाता। तू संगत करेगी ?

—ना, मुझसे नहीं होगा।—कहकर वह्निकुमारी कुछ हंसी।

—तो बिना संगत के ही सुन। 'हमीर' बजाऊंगा—कहकर चन्द्रकान्त ने बजाना शुरू किया। वह्निकुमारी चुपचाप सुनने लगी। बहुत दिनों

से भैया का सितार सुनने को नहीं मिला था, अब तो बड़ा अच्छा बजाने लगे हैं। वह्निकुमारी का मन अतीत में जा पहुंचा। बूढ़े उस्ताद आबिद मियां की याद आई। क्या मिठास थी उनके हाथों में! आबिद मियां के पास ही वाणी के सितार बजाने का श्रीगणेश हुआ था। पहले पहल मिजराब से अंगुलियां कितनी दुखती थीं। तार से अंगुली कट जाती थी। छत पर के कमरे में अकेली बैठकर दा-रा दा-रा का अभ्यास करना याद आया, इसके बाद धीरे-धीरे एक-दो गत सीखना, फिर गंगागोविन्द को बुलाकर उसे सुनाना। गंगागोविन्द कल चले जा रहे हैं! वह्निकुमारी अनमनी हो गई। चन्द्रकान्त का सितार बजाना समाप्त हुआ तो उन्होंने पूछा—हमीर कैसा लगा?

—अच्छा तो है।

चन्द्रकान्त हंस पड़े—तू तो सब भूल गई! हमीर कह दिया तो बस मान लिया। केदारा नहीं पहचान सकी? ले सुन। —कहकर उन्होंने फिर थोड़ा-सा बजाया। वह्निकुमारी गंगागोविन्द की बात सोच रही थी, यह सच-सच न बताकर उन्होंने कहा—बहुत दिन से चर्चा नहीं रही।

बाहर आहट सुनाई पड़ी।

चन्द्रकान्त घर पर हो क्या? आ सकता हूं? —कहते हुए गंगागोविन्द कमरे में आ गए। फिर बोले—ओहो वाणी भी यहां पर है? मैं कल सवेरे तुमसे भेंट करने की सोच रहा था।

इतने अप्रत्याशित रूप से गंगागोविन्द आ पहुंचेंगे, वह्निकुमारी ने कल्पना भी न की थी। उसका चेहरा फक् पड़ गया। फिर अपने को सम्हालकर उसने कहा—तो कल सचमुच ही चले जा रहे हो?

—हां, देर करने से क्या फायदा? स्वल्पा तथायुर्बहवश्च विघ्नाः। वृन्दावन से कोई खबर मिली?

—नहीं।

थोड़ी देर तीनों चुपचाप बैठे रहे। फिर गंगागोविन्द बोले—मुझे

याद रखना। मैंने तुम लोगों को बहुत कष्ट दिया है।

चन्द्रकान्त ने कहा—देखो तकल्लुफ का भी स्थान-काल होता है, यह बात क्यों भूल रहे हो? संस्कृत पढ़ने जा रहे हो तो क्या सिर फिर गया है?

वह्निकुमारी कुछ बोली नहीं, मुस्कराने लगी।

गंगागोविन्द ने कहा—अब गांव छोड़ते समय लग रहा है कि गांव के साथ सचमुच नाड़ी का बन्धन है।

चन्द्रकान्त ने कहा—अपनी बेटियों और दामादों से मिल आए? उन्होंने क्या कहा?

—कुछ खास नहीं। ब्याह के बाद बेटियां पराई हो जाती हैं, वैसे वाणी हम लोगों के लिए पराई हो गई।

वह्निकुमारी के मन में जो जवाब आया था, उसे न कहकर, बोली—तुम्हारी बात सुनकर ऐसा लग रहा है कि हम सचमुच गैर हो गए।

गंगागोविन्द ने कहा—अब मैं चलूं। मुझे ज़रा सामान ठीक-ठाक करना है।—कहकर वे सचमुच खड़े हो गए। बहुत ही साधारण बातचीत से विदाई का मुहूर्त समाप्त हो गया। जाते-जाते वे बोले—भाई, तुम्हारे मैनेजर बहुत देर से बाहर के कमरे में इन्तज़ार कर रहे हैं।

चन्द्रकान्त ने कहा—अच्छा, बैठा रहने दो।

वह्निकुमारी ने कहा—बैठाने की क्या ज़रूरत है, मैं थोड़ी देर पास वाले कमरे में जाकर तुम्हारी किताबें देखती हूं।

—अच्छा, तो उसे भेज ही दो।

गंगागोविन्द चले गए, और वह्निकुमारी उठकर चन्द्रकान्त की लाइब्रेरी में चली गई।

## २७

कमलाक्ष अन्दर आए।

चन्द्रकान्त ने पूछा—कोई खबर मिली ?

—जी नहीं।

—नहीं का क्या मतलब ? तो फिर मानिक मण्डल की खबर गलत थी ?

खबर गलत नहीं थी। वह सुनकर आया था कि उग्रमोहन बाबू ने गोलोक साह को यमघर ले जाने का हुक्म दिया था, पर यम-जंगल में यम-घर के भीतर की खबर मिलनी मुश्किल है। करीब-करीब असम्भव है।

—क्यों ?

—उस कमरे में एक लोहे का दरवाज़ा है, जिसमें बाहर से ताला जड़ा रहता है। कमरे में एक भी खिड़की नहीं है। दीवारें बहुत ऊंची हैं। इसीलिए गुप्त रूप से उस कमरे की कोई भी खबर निकालना बहुत मुश्किल है। पर मानिक मण्डल का कहना है कि उसी कमरे में गोलोक साह है। दस दिन हो गया सरकार, और कोई भी खबर न मिल सकी।

चन्द्रकान्त चुप हो गए। थोड़ी देर बाद पूछा—अघोर चक्रवर्ती कहां है ?

—उनको मैंने रामदीन सिपाही के हाथ एक चिट्ठी भेजी थी। लिखा था कि हमारे मालिक भी टाल जंगल में यमघर की तरह एक कमरा बनवाएंगे। आप ज़रा यमघर दिखा देने का बन्दोबस्त कर दें, जिससे हम उसकी अन्दर की नाप-जोख ले सकें।

—क्या जवाब मिला ?

—उन्होंने कहा कि यमघर की चाभी मालिक के पास है। उनके वृन्दावन से लौटने पर ही इसका प्रबन्ध हो सकता है। — कमलाक्ष चुप हो गए।

फिर चन्द्रकान्त बाबू ने कमलाक्ष से ही पूछा—फिर क्या करना चाहिए ?

भीगी बिल्ली की तरह देखते हुए कमलाक्ष ने जवाब दिया—पुलिस में इत्तला देने के सिवा कोई चारा नहीं रह गया।

—पुलिस में इत्तला ?—कहकर चन्द्रकान्त कुछ देर चुप रहे, फिर बोले—पुलिस के अलावा और कोई राह नहीं सूझती ?

—जी नहीं, मुझे ऐसा लगता है कि हम अगर दो-एक दिन में ही गोलोक साह को न छुड़ा सके तो वह मर जाएगा।

—क्या कह रहे हो ?

—मुझे तो ऐसा ही लगता है हुज़ूर ! उग्रमोहन बाबू ने उसे बुरी तरह मारा है। ऊपर से आज दस दिन हो गए, वह यमघर में कैद है। एक बूंद पानी या एक दाना अन्न उसे नसीब नहीं हुआ।

—यह कैसे मालूम हुआ ?

—यम जंगल में एक आदमी यमघर पर नजर रखने के लिए मुकर्रर किया गया था हुज़ूर ! दिन-रात एक आदमी वहां रहता था, हां आज से कोई नहीं है।—कहकर कमलाक्ष भीगी बिल्ली की तरह देखने लगा।

—गोलोक साह यमघर में है, यह खबर पक्की है ?

—मानिक मण्डल का यही कहना है। उसने अपने कानों से उग्रमोहन बाबू को यह हुक्म देते सुना है।

चन्द्रकान्त और भी थोड़ी देर चुपचाप बैठे रहे। उनके मन में एक ही बात गूंजती रही कि देर होने पर गोलोक साह की मौत तक हो सकती है। और उसकी मौत की जिम्मेदारी उन्हींपर है। पुलिस में खबर करने की बात उन्हें जंचती नहीं थी, फिर भी उन्होंने मजबूर हो

कर कहा—अच्छा जो ठीक समझो करो।

कमलाक्ष सलाम करके चले गए तो गंगागोविन्द फिर लौटे—भाई, मल्लिनाथ की टीका तुम्हारे पास है? क्यों, क्या हुआ? ऐसे क्यों बैठे हो?

चन्द्रकान्त कुछ हंसकर बोले—महाबली उग्रमोहन के प्रताप से तो मैं परेशान हूं।

—वह कैसे?

—गोलोक साह को किसी यमघर में ले जाकर कैद कर दिया है, आज दस दिन हो गए, बेचारा वहां बिना खाए-पिए सूख-सूखकर मर रहा है।

गंगागोविन्द ने कहा—सिंह हैं न? पराक्रम दिखाएंगे ही। मल्लिनाथ की टीका है तुम्हारे पास?

—थी तो, कल ढूंढ़कर भेजवा दूंगा। आज ज़रा गोलोक साह के कारण बड़ा परेशान हूं।

गंगागोविन्द ने पूछा—वाणी कब चली गई? उसके लिए बड़ा अफसोस होता है। उग्रमोहन जैसे आदमी की सहधर्मिणी होना निश्चय ही उसके लिए सुखकर नहीं है।

चन्द्रकान्त ने ज़रा आंख मारकर कहा—चुप, पास के कमरे में ही है।

गंगागोविन्द ने कहा—अच्छा, सुन नहीं पाई होगी। अच्छा तो मैं चला। मल्लिनाथ टीका को ज़रा ढूंढ़ निकालना।

बगल के कमरे में खड़ी-खड़ी [illegible] सब सुन रही थी। कमलाक्ष की कहानी, चन्द्रकान्त की उक्ति और गंगागोविन्द का मन्तव्य, सब सुन सुन लिया। उसका मन कह रहा था कि कहे—हे धरती, फट जाओ। मैं अब पति की निन्दा नहीं सुन सकती। क्रोध, क्षोभ, लज्जा से उसके मन की जो अवर्णनीय दशा हुई, उसका आभास उसके चेहरे पर भी उतर आया था। उसके पतले ओठ कांप रहे थे। गंगागोविन्द ने जब उसके पति पर श्लेषोक्ति की तो उसका मन हुआ कि बाहर जाकर मुंहतोड़

जवाब दे दे, पर इससे उग्रमोहन सिंह की पत्नी के सम्मान को ठेस लगेगी, इसी आशंका से उसने ऐसा नहीं किया, पर उसका अन्तःकरण जल रहा था। यमघर ? यम जंगल की कचहरी में वन भोजन के लिए गई थी तो उसने यमघर भी देखा था। तब भी उसमें ताला लटका हुआ था। वह्निकुमारी उसकी चाभी ढूंढ़ निकाल सकती है। उग्रमोहन सिंह की अलमारी में चाभी के जो गुच्छे हैं, उनमें एक बड़ी-सी चाभी पर कागज़ चिपका हुआ है, उसपर लिखा है, 'यमघर'।

चन्द्रकान्त ने बुलाया—वाणी तू यहां खाकर जाएगी न ?

जैसे कुछ हुआ ही न हो, वह्निकुमारी हंसती हुई बाहर आई और बोली—नहीं, मैं अब चलूं। तुम्हारी यह किताब लिए जा रही हूं, शेख सादी का अनुवाद है।

—अच्छा।

वह्निकुमारी चली गई।

चन्द्रकान्त स्तब्ध बैठे सोचते रह गए।

वह्निकुमारी की पालकी चन्द्रकान्त के मकान की सीमा पार हुई तो वह्निकुमारी ने आदेश दिया—गंगागोविन्द के घर चलो।

गंगागोविन्द खाना-पीना समाप्त करके ज़रा आराम करने की सोच रहे थे कि तभी वह्निकुमारी की पालकी उनके दरवाज़े पर रुकी। वर्दी में लैस सिपाही ने अन्दर जाकर खबर दी कि रानी जी मिलने आई हैं।

गंगागोविन्द चकित हो गए। बाहर आकर बोले—आओ वाणी, आओ। क्या बात है, फिर लौट आई ?

वह्निकुमारी उतरकर भीतर पहुंची और संक्षेप में बोली—तुम्हें प्रणाम करने के लिए आई हूं। उस वक्त भूल गई थी—उसके चेहरे पर एक विचित्र हंसी खेल रही थी।

गंगागोविन्द ने कहा—यह क्या ?

—शायद फिर भेंट न हो।—कहकर वह्निकुमारी ने गंगागोविन्द के चरण स्पर्श किए।

विस्मित गंगागोविन्द संकोच से खड़े ही रह गए।

वह्निकुमारी फिर हंसकर बोली—हां, तुम्हारा एक भ्रम भी दूर करने के लिए आई हूं। मुझे अपने पति पर गर्व है। उन्हें पाकर मैं केवल सुखी ही नहीं धन्य भी हो गई हूं। भैया के पास तुमने जो कुछ सुना, वह सब झूठ है। पुलिस जाकर कल सवेरे ही समझ जाएगी कि गोलोक साह तो वहां कैद नहीं है। वह सारा ही मूर्ख कमलाक्ष की मनगढ़न्त कहानी है। तुम तो कल नहीं रहोगे, इसीसे तुम्हें आज ही बताने आ गई। किसीसे कहना मत।

गंगागोविन्द बोले—नहीं-नहीं, मुझे क्या जरूरत है। मैं किसीसे कुछ नही कहूंगा।

वह्निकुमारी की आंखों में बिजली-सी कौंध गई। उन्होंने फिर मुस्कराते हुए कहा।—अच्छा तो चलूं।—कहकर वह दरवाजे की ओर बढ़ गई। फिर लौटकर बोली—हमारी मानोगे ?

—क्या ?

—खास कुछ नहीं; खाली यह याद रखना कि मनुष्य-जन्म केवल बड़प्पन दिखाने के लिए नहीं मिला है। देवता ही पत्थर के होते हैं। मनुष्य में रक्त-मांस की कमजोरी हमेशा कसूर नहीं समझी जाती, यह बात याद रखना। चलती हूं।—कहकर वह्निकुमारी एकदम पालकी में जाकर बैठ गई। निर्वाक् गंगागोविन्द विमूढ़ होकर खड़े रह गए।

वह्निकुमारी की पालकी चली जा रही थी।

अगर कोई अभी पालकी का दरवाज़ा खोलकर देखता तो दिखाई पड़ता कि रानी वह्निकुमारी औंधी पड़ी हुई रो रही थी।

## २८

जब सब कोई चले गए तो चन्द्रकान्त नितान्त अकेले बैठे रहे। वाणी आज रात को यहां खाना खाकर जाती तो क्या हर्ज था ? पर वह नहीं रुकी। क्यों रुकती ? वाणी उनकी कौन लगती है ? अब उनसे उसकी कितनी अंतरंगता है, ज़रा भी तो नहीं। रक्त सम्पर्क तो है ही, भाई-बहिन हैं, पर आत्मा का सम्पर्क नहीं रहा। एक ही मां की कोख से दोनों का जन्म हुआ। बचपन साथ-साथ बीता, बस इतना ही। विवाह के बाद वाणी वह्निकुमारी हो गई। चन्द्रकान्त भी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ अपना जीवन बिताने लगे। अपने-अपने कक्ष में घूमते हुए वे एक दूसरे से बहुत दूर चले गए हैं। बुध को नेपचून से अब कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। जो थोड़ा-सा रह गया, वह भी बाहरी। अन्तरंगता का लेशमात्र नहीं है। प्राणहीन स्मृतिमात्र रह गई है।

गंगागोविन्द भी छोड़ चले। एक के बाद एक सभी चन्द्रकान्त को छोड़कर चले जा रहे हैं। फिर भी सारी ज़िन्दगी बाकी पड़ी है। अभी तक यौवन भी तो नहीं बीता। इतनी लम्बी ज़िन्दगी क्या अकेले ही काटनी पड़ेगी ?

अब अपनों में एक उग्रमोहन ही रह गए हैं। चन्द्रकान्त के लिए उग्रमोहन ही वाणी की अपेक्षा अधिक अपने हैं। इन्हीं उग्रमोहन को केन्द्र बनाकर चन्द्रकान्त का जीवन आवर्तित हो रहा है। चन्द्रकान्त की आशा-निराशा, सुख-दुःख सब कुछ उग्रमोहन के सहारे ही है। उग्रमोहन के साथ दिन-रात संघर्ष में ही उनकी बुद्धि, शक्ति, अर्थ सब कुछ सार्थक